ज़ुहूरे महदी

कब ?

कहाँ ?

और सिक तरह ?

तालीफ

मुफती महमुद बिन मौलाना सुलेमान बारडोली

मुदर्रिस जामेआ इस्लामिया, डाभेल (गुजरात)

नाशिर

मदरसा ईस्लामिया ईब्राहिमीया

उमरगा पोस्ट बोरी ज़ि. लातूर (महाराष्ट्रा)

फोन : (२३८२ - २६०८४४

तफसीलात

नामे किताब	:	जुहूरे महदी कब ? कहाँ ? और किस तरह ?
तालीफ	:	जनाब मौलाना मुफती महमुद साहब बारडोली
पेश करदा	:	खुर्शीद अहमद लातूरी
नाशीर	:	मदरसा ईस्लामिया ईब्राहिमीया उमरगा पोस्ट बोरी ज़ि. लातूर (महाराष्ट्रा) ४२३५१२
सन्ने तिबाअत	:	जुलाई २००८
तअदाद	:	१०००
किमत	:	७० रुपये
सफहात	:	१६०
तबाअत	:	हमदम प्रेस, मालेगांव (०२५५४-२३०५०३)

मिलने का पता

मकतबा -ए- फैज़े महमुद

उमरगा पोस्ट बोरी ज़ि. लातूर (महाराष्ट्रा)

फोन : (२३८२ - २६०८४४

फेहरिस्त मज़ामीन

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

तक़रीज़

हज़रत मौलाना अबुबकर साहब गाज़ीपुरी दामत बरकातुहुम
(मुदीर माहनामा ज़मज़म)

मौलाना मुफती महमुद हाफिज़ जी सल्लमहु जामेआ इस्लामिया डाभेल के एक ज़ी इस्तेदाद और साहबे इल्म फाज़िल नौजवान और मुदर्रिस हैं। इल्म का साफ सुथरा ज़ौक रखते हैं, और वक्त के नाजुक मसाएल पर इन की निगाह रहती है, रद्दे फिरके बातेला इन का खास मौज़ू है, हक़ का दिफ़ा दह अपना दीनी फ़रीज़ा समझते और करते हैं, हज़रत महदी (रज़ि.) के बारे में सही मालुमात अवाम ही नहीं खवास में से भी बहुत कम लोगों को हैं।

मुफती महमूद साहब ने ज़रूरत महसुस की अवाम को हज़रत महदी रज़ि. (जो कयामत की अलामतों में से एक अलामत है) के बारे में सहीह और मुसतनद मालूमात फराहम कर दी जाएं, इस जज़बे और शौक ने उन को ज़ेरे नज़र रिसाला मरत्तब करने पर आमादा किया।

अलहमदुलिल्लाह! अज़ीज़म मुफती महमुद सल्लमहुल्लाहु ने अपने इस रिसाला में हज़रत महदी के बारे में बहुत सी मालुमातजमा करदी हैं, आम तौर पर अवाम इस से ना वाकिफ हैं, इन्शाअल्लाह इस रिसाला से इन की मालुमात में इज़ाफा होगा। अल्लाह तआला इन की इस काविश को कुबुल फरमाए।

मो. अबुबकर गाजीपुरी

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

तक़रीज़

जानशीन इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना अ. अलीम साहब फारुकी लखनवी दामत बरकातुहुम

जुहूरे महदी रज़ि. के बारे में अहादीसे मुबारका और आसार की बिना पर मुसलमानों को इस पर एतेकाद है। ज़मानए गुज़िशता में हमारे अकाबिर ने इस हक़ीक़त की वज़ाहत फरमाइ है और जो अहले इल्म से मख़फ़ी नहीं है।

दौरे हाज़िर में इस अकीदे और मुसल्लमा हकीकत पर मुखतलिफ अंदाज़ में रा, ज़र्नी की जा रही है, जो किसी तरह मुनासिब नहीं है और न उस को दीन कीकोइ खिदमत करार दिया जा सकता है।

अजीज़े मोहतरम हज़रत मौलाना मुफती महमुद साहब बारडोली हाफ़ेज़हुल्लाह ने पेशे नज़र रिसाले में पुरी एहतियात के साथ मज़कुरा मसले की वज़ाहत फरमाइ है, मौसूफ की यह इलमी और दीनी खिदमत काबिले कद्र है, इन्शाअल्लाह अवाम व खवास को इस के मुताले से फायदा हो गा।

दुआ है कि हक तआला शानुहु मुफ़ती साहब को सलामत रखे और तौफ़ीक़े मज़ीद नसीब फरमाए।

अ. अलीम फारुकी

२३ सितंबर २००४

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

तक़रीज़

हज़रत अकदस मुफती अहमद साहब खानपुरी दामत बरकातुहुम

(सद्र मुफती जामेआ डाभेल)

कयामत कब आने वाली है इस का हकीकी वक्त अल्लाह तआला के इलावा किसी को मालुम नहीं, हदीसे जिबरईल अलैहिस्सलाम में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत जिबरईल ने सवाल किया कि कयामत कब आएगी ? तो इस के जवाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : कयामत के मुतअल्लिक जिस से पुछा जा रहा है वह पुछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता।

मतलब यह है कि मुझे भी आप की तरह कयामत का सहीह वक्त मालुम नहीं, अलबत्ता कुरआन व हदीस में कयामत की कुछ अलामतें और निशानियां बतलाइ गई हैं जिन को उलामा ने अलामातें सुगरा और अलामाते कुबरा दो हिस्सों मे तकसीम किया है, अलामाते कुबरा में सब से पहली अलामत इमाम महदी रज़ि. का जुहूर बतलाया जाता है, वैसे तो अरबी ज़बान में ''महदी'' हिदायत याफता को कहते हैं, इस माना के लिहाज़ से बहुत से महदी हो चुके हैं और होंगे, लेकिन अलामाते कयामत के तौर पर जिस महदी के जुहूर को बतलाया गया है वह एक मखसुस शखसियत है, जिन की बहुत कुछ तफसीलात मुखतलिफ अहादीस में वारिद हुइ हैं, चुनांचे इन ही महदी-ए-मौऊद की शखसियत के मुतअल्लिक अहले इल्म ज़मानए कदीम से

कलम उठाते चले आ रहे हैं, और जैसे जैसे कयामत करीब होती जा रही हैं और मुसलमान आलमी सतेह पर मुखतलीफ आज़माइशों और मसाएब का शिकार होते चले जा रहे हैं कुदरती तौर पर इन में महदी–ए–मौऊद की आमद की तलब बढती जा रही हैं, और मुसलमान की इन ही अंदरुनी कैफियत और जज़बात के पेशे नज़र बहुत से लोग महदी–ए–मौऊद की आमद और जुहूर के सिलसिले में बे सर व पैर बातें भी फैलाते रहते हैं, इन हालात में ज़रुरी था कि लोगों को महदी–ए–मौऊद से मुतअल्लिक मोतबर रिवायात से आगाह किया जाए, चुनांचे अज़ीज़ मुकर्रम मौलाना मुफती महमुद बारडोली साहब सल्लमहु (उस्ताज़ जामेआ इसलामिया डाभेल) ने हदीस और शुरुहाते हदीस नीज़ इस मौजु पर लिखी गइ किताबों को खंगाल कर एक मज़मुन तयार फरमाया है जो इन्शाअल्लाह मुफीद और रहनुमा साबित होने की उम्मीद है, अल्लाह तबारक व तआला अज़ीज़ मौसुफ की इस सई को हुस्ने कुबुल अता फरमाए। (आमीन या रब्बल आलमीन)

अहमद खानपुरी

६ ज़ीकादा १४२७ हि.

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इफतिताहिया

कयामत का आना एक यकीनी चीज़ है, लेकिन कयामत कब आए गी यह बात बंदों को नहीं बताइ गई है, अलबत्ता इस की खास खास अलामतें कुरआन और हदीस में वाज़ेह तौर पर बयान की गई हैं, उन्ही अलामात मेंसे बहुत बडी अलामत हज़रत महदी का जुहूर है, उम्मते मुसलेमा आज कल जिन हालात से दोचार है उस के पेशे नज़र कई मुसलमान जुहूरे महदी के मुतमन्नी हैं, खुद अल्लामा सकारीनी रह. फरमाते हैं: أي من العلامات العظمي وهي أولها أن يظهر الإمام المقتدئ الخاتم للأئمة محمد المهدي (لوائح الأنوار البهية)

कयामत की बडी यानी करीब तर और अव्वलीन निशानियों में इमामुल मुकतदा खातमुल अइम्मा मोहम्मद महदी रज़ि. का जुहूर हैं, नीज़ जुहूरे महदी रज़ि. एक ऐसी हकीकत है कि इस के इनकार की कोई वजह नहीं। इधर पांच साल पहले मादरे इलमी जामेआ इस्लामिया तालीमुद्दीन डाभेल सिमलक के अराकीने शुरा ने जामेआ में शोबए रद्दे फिरके बातेला का (जिस का नाम बदल कर शोबए तहफ़्फ़ुज़े शरीअत रख दिया गया है) के कयाम का फैसला फरमाया, इस शोबा के ज़िम्न में बंदे के ज़िम्मे ''एहतेसाबे कादियानित'' का मौजु आया, मिरज़ा कादयानी के दुअवों में एक दावा महदी रज़ि. और मसीह होने का भी है, जब इस दावा के मुतअल्लिक दौरए हदीस शरीफ के तलबा के सामने मुदल्लल तरीके से यह मज़मुन लिखवाया गया कि :

''मिरज़ा महदी व मसीह तो क्या, एक शरीफ इनसान भी नहीं हो सकता, नीज़ हज़रत महदी रज़ि. व मसीह के मुतअल्लिक जो बातें अहादीस में आइ हैं, उन में कोइ भी बात मिरज़ा कादयानी में किसी तरह भी पाइ नहीं

जाती''

जब यह मज़ामीन पेश किए गए, तो दिल में यह बात आइ कि हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक बातों को अलग से जमा कर के उम्मते मुसलेमा के सामने पेश किया जाए, चुनांचे इस गरज़ से कोशिश की गइ कि सहीह और मज़बुत बातों को जमा किया जाए नीज़ कमज़ोर बातों की तरफ इशारा कर दिया जाए।

हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक बहुत सी बातैं हमारे तबके में गलत मशहुर हैं, जैसे : उन के ज़ुहूर के वक्त आस्मान से आवाज़ आना, ज़ुहूरे से पहले रमज़ाम में ग्रहन पेश आना, इस किस्म के मज़ामीन की तरफ भी सहीह रहनुमाई की कोशिश की गाई है।

जिन जिन किताबों से इस्तेफादा किया गया, हर एक को ब हवाला लिख दिया गया है, इस मौज़ु के मुतअल्लिक अहादीस की जहाँ तक बात है बाज़ हज़रात का यह कहना है कि ''महदी मौऊद के मुतअल्लिक जो सरीह अहादीस हैं वह सहीह नहीं हैं और जो सहीह हैं वह सरीह नहीं हैं'' इस जुमले के सिलसिले में आलमी मजलिसे तहफ़्फ़ुज़े खत्मे नुबुव्वत के एक फअ्आल रुक्न मौलाना अ.रहमान बावा मद्दज़िल्लहुल आली ने लंदन में हज़रत मुफती निज़ामुद्दीन शामज़ई शहीद रह. की तालीफ की हुइ एक किताब ''अकीदए ज़ुहूरे महदी रज़ि. अहादीस की रौशनी में'' बंदे को हदयतन इनायत फरमाइ, हज़रत मुफती शामज़इ मरहुम ने इस मौज़ु के मुतअल्लिक कम व बेश पचास अहादीस किताब में जमा फरमाइ हैं, और हर हर हदीस के हर हर रावी के मुतअल्लिक बहुत ही शरह व बस्त से कलाम किया है, जिस से साबेका जुमले का बे हक़ीक़त होना वाज़ेह हो जाता है, इस किताब का आलमे इस्लाम के नामवर मोहक्किक आलिमे दीन हज़रत मुफती मोहम्मद तकी उस्मानी मद्दज़िल्लहुल आली ने अपने ''अलबलाग़'' के एक मज़मुन में – जो मुफती शामज़इ साहब की शहादत पर उन्हों ने लिखा था भरपुर तारीफ की है, बिहमीदिल्लाह अहादीस के सिलसिले में बंदे ने इस किताब से भरपूर

इस्तेफादा किया है, और दीगर जिन कुतुब अहादीस और हज़रात मुहद्दिसीन के कलाम से इस्तेफादा किया है वह हवाले के साथ लिख दिया है, जब यह मुसव्वेदा तयार हुवा तो मेरे मुशफिक बुजुर्ग हज़रत मौलाना अबुबकर साहब गाज़ीपुरी और हज़रत मौलाना अ.अलीम साहब फारुक़ी (अल्लाह तआला इन दोनों बुजुरगों की उम्र में बरकत अता फरमाए) ने इस को देखा, और कुछ मुफीद मशवरे दिए, नीज़ मुफती रशीद अहमद साहब फरीदी मद्दज़िल्लहुल आली व शेखुल हदीस मौलाना मुजतबा साहब लोलात और फ़ज़ीलतुश्शेख तलहा मनियार मक्की और बेरादरे मुकर्रम मुफती असअद खापनुरी ने इस को देखा और तरमीमात व इसलाहात फरमाईं, नीज़ मेरे मुरशिदे सानी मुशफ़िक व मुरब्बी हज़रत मौलाना मुफती अहमद खानपुरी साहब दामत बरकातुहुम ने इस को पढा, और इस पर कलेमाते बाबरकत लिखवाए, इस किताब की तय्यारी में अज़ीज़म मोलवी हाफ़िज़ व कारी अलहाज फारुक बमबवी (अल्लाह तआला इन को दीन की खिदमत के लिए कुबुल फरमाए) ने हर तरह बडी मेहनत की, बारी तआला इन सब हज़रात को जज़ाए खैर अता फरमाए : अखीर में कुतुब अहादीस में वारिद वह अहादीस जिन का तअल्लुक इस मौजु से है इस का एक नकशा भी पेश किया गया है ता कि इस मौजु पर मज़ीद तहक़ीक़ में आसानी रहे।

अखीर में तमाम कारिईन से मोअद्देबाना इलतेमास है कि मेरी इलमी कमज़ोरी और ज़बाने उर्दु से वाकफियत की कमी की वजह से यकीनन इस किताब में बहुत सारी खामियां रह गइ होंगी, आप से उम्मीद है कि इस की इत्तेला फरमाएं गे ता कि अगले एडीशन में तलाफी हो सके।

अल्लाह तआला मेरी बद निय्यती और बद अमली के शर से महफुज़ फरमाए और इस किताब को शर्फे कुबुलियत से माला माल फरमाए।

महमुद बिन मौलाना सुलेमान हाफ़िज़जी, बारडोली

जामेआ इस्लामिया तालीमुद्दीन, डाभेल, सिमलक, गुजरात

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

क़यामत और अलामाते क़यामत

कयामत का आना एक यकीनी अम्र है, दुनया के बहुत सारे इन्सान किसी ना किसी शकल में कयामत के तसव्वुर को मानते और तसलीम करते हैं, हम मुसलमानों के लिए कयामत का वाके होना बुनयादी अक़ाएद में से एक अहम तरीन अक़ीदा है, अल्बत्ता यह कयामत कब वाके हो गी इस के मुताअय्यना वक्त का इल्म तो अल्लाह तआला ने सिर्फ अपने पास ही रखा है, चुनांचे सुरह लुक़मान में अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ (लुकमान: ३५) तरजुमा : बेशक कयामत (कब आएगी) का इल्म सिर्फ अल्लाह तआला ही को है।

दुसरी जगह सुरह आराफ में इरशाद है

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا، قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ، لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَا الا هو(اعراف ١٨٧)

यह लोग आप (हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कयामत के मुतअल्लिक पूछते हैं के : इस का वकू कब हो गा? तो आप फरमा दिजीये : इस की ख़बर तो सिर्फ मेरे रब के पास है, जब कयामत का वक्त आए गा तो अल्लाह ही इसे वाज़ेह फरमा देंगे।

क़यामत की आमद और जुहूर के बारे में कुरैशे मक्का ने भी कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रिश्तेदारी का वासता दिया, कभी इसको आप की नुबुव्वत का मेअयार बना कर सवाल किया के : अगर आप वाकई नबी हैं तो बतलाते कियुं नहीं के क़यामत किस साल और किस तारीख़ को आए गी? लेकिन हर मरतबा यही जवाबि मिला के : इस का इल्म तो सिर्फ मेरे रब को है, किसी नबी या फरिश्ते को भी इस का इल्म नहीं दिया गया, इस बात की

वज़ाहत करते हुए मुफस्सिर इब्ने कसीर रह. लिखते हैं : أي ليـــس عـلـمهـا اليك ولا الـى أحـد مـن الـخلق، قل مردُّها ومرجعُها الى الله عزّ وجل، فهو الـذى يعلم وقتها على التعيين (تفسير ابن كثير) यानी क़यामत का इल्म ना आप को है और ना मख्लुक में से किसी को, इस का इल्म अल्लाह के पास है, और वही इस का वक्त सहीह तरीके से जानते हैं, कुरआने करीम में इस कदर सराहत के साथ हक़ीक़त बतला दी गइ इस के बावजुद बहुत सारे लोग इस बात की तहक़ीक़ में रहते हैं कि क़यामत कब आएगी? और इस्राईलयत और दिगर आसार को मिला कर दुनिया की मजमूइ उम्र और इस के क़याम के वक्त की तहक़ीक़ व तअय्युन करने की नाकाम कोशिश करते रहते हैं, यह सब अबस और लगव काम है, खुद बारी तआला ऐसे लोगों को तंबीह करते हुए आगे इरशाद फरमाते हैं (لا تـأتيـكـم الا بغتة) तुम पर याक बारगी आ पडे गी, इस तरह आपडे गी के किसी को इस के आने का वहम व गुमान भी ना होगा।

عـن أبـي هـريـرـة رضـي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال : لا تقوم الساعة حتى تطلُع الشـمـسُ مـن مـغربها، فاذا جعلت وراها الناسُ آمنوا أجمعون، فذٰلك لا ينفع نفسا ايمانُها لم تكن آمنت من قبل أو كسبت فى ايمانها خيراً، ولتقومَنَّ الساعةُ وقد نشر الـرجـلان ثـوبهـمـا بيـنهـمـا فلا يتبايعانه ولا يطْوِيانِه، ولتقومَنَّ الساعةُ وقد انصرف الـرجـل بـلبـن لـقْـحَته فلا يطعمه، ولتقومَنَّ الساعة وهو يليطُ حوضه فلا يسقى فيه، ولتقومَنَّ الساعة وقد رفع أُكلَتَهُ الى فيه فلا يطعهما (صحيح البخارى ٢/٩٦٣)

हज़रत अबु हुरहैरा रज़ि. बयान फरमाते हैं कि : रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि : कयामत उस वक्त तक नहीं आए गी जब तक सुरज पच्छिम की ओर से न निकल आएगा और लोग इसे देख लें तब सब लोग इमान ले आएं गे, लेकिन यह वह वक्त हो गा जब किसी का इमान लाना क़ाबिले कुबूल नहीं होग, कयामत इस तरह अचानक आए गी के दो आदमी आपस में कपडे का मोआमला कर रहें होंगे, फिर ना तो उस की खरीद कर पायें गे और ना कपडे को लपेट सकें गे, कयमात अचानक वाके हो गी के आदमी अपने मवेशी का दुध लिए आ रहा होगा यहाँ तक के वह इसे पी भी ना सके गा, कयामत इस तरह यक बारगी आ पडे गी, एक आदमी पानी

पीने के लिए हौज़ की सफाइ कर रहा होगा मगर इसे इस्तेमाल भी ना कर पाए गा, कयामत ऐसे अचानक आ पहुंचे गी कि एक आदमी खाने के लिए निवाला उठाए हुए होगा और उसे खा भी न सके गा।

खुलासा यह निकलता है कि क़यामत कब आए गी इस का मुतअय्यन वक्त सिर्फ अल्लाह तआला के पास है, अल्बत्ता क़यामत की बहुत सारी अलामतें अल्लाह ने हमें अपने सादिक व मसदूक रसुल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वासते से बतलाइ हैं, और इस बात पर हमारा इमान है कि अल्लाह तआला की बातें पुख्ता और अटल हैं, और जो भी बातें अल्लाह की जानिब से हमें बतलाइ गइ हैं वह हो कर रहें गी, यक कारखाना –ए– आलम अल्लाह के हुक्म के ताबे है, इस लिए कयमात से पहले पेश आने वाले वह हालात जिन का तज़केरा हमें कुरआन व हदीस में मिलता है, उन ही के मुताबिक दुनिया में तबदीली होती रहे गी, अल्लाह तआला फरमाते हैं لا تبديل لكلمات الله (يونس:٦٤) कि अल्लाह तआला की बातों में कोई तबदीली नहीं होती।

लेहाज़ा जिन अलामाते क़यामत का तज़केरा किया गया है उन का वाके होना भी एक लाज़मी अम्र है, इन में से बहुत सी अलामात तो अब तक इस दुनिया में हो चुकी हैं, और बहुत सारी अलामातें यानी निशानियां अपने वक्त पर ज़ाहिर होती रहें गी।

नोट : कयामत की निशानियों के बारे में अधिक जानकारी के लिए हदीस की किताबों में एक खास सबक ''किताबुल फितन व अशरातुस्साआ'' (كتاب الفتن وأشراط الساعة) में मौजुद हैं, इन का मुतालेआ कर लिया जाए, नीज़[अरबी ज़बान में अल्लामा इब्ने कसीर रह. की ''अन्निहाया'' (النهاية) तख्रीज व हवाशी (हाशिये) के साथ छप चुकी है, इसी तरह सय्यद अहमद रह.की ''अल इशाअतु लिअशरातिस्साआ'' (الإشاعة لأشراط الساعة) उर्दु ज़बान में (असरे हाज़िर हदीस की रौशनी में) और शाह रफीउद्दीन साहब दहल्वी रह. की अलामाते क़यामत वग़ैरा किताबों का मुतालेआ करना चाहिए।

अलामाते क़यामत

कयामत की जो अलामात कुरआन व हदीस में आइ हैं वह दो किस्म की हैं।

(१) अलामाते सुग़रा यानी सिर्फ छोटी अलामतैं और इन को अलामाते बईदा भी कह सकते हैं, यह अलामतैं कयामत से पहले वजुद में आएं गी लेकिन यह ज़रुरी नहीं कि इन के बाद कयामत जल्द आए गी।

(२) अलामाते कुबरा यानी बडी अमालातैं, इन को अलामाते करीबा भी कह सकते हैं, यह अलामतैं दुनिया में आम मामुल के खिलाफ क़यामत के करीब तर ज़माने में ज़ाहिर हों गी। इन अलामामत को देख कर यह बात वाज़ेह हो जाए गी कि अब क़यामत दुर नहीं। (जैसा के फतहुलबारी ४२७/११ में लिखा है)

इसी किस्म की दुसरी यानी अलामाते कुबरा में से एक बहुत बडी अलामत हज़रत महदी रज़ि. का जुहूर भी है।

हज़रत महदी रज़ि. का जुहूर होना एक यकीनी और कतई होने वाली बात है। आप की तशरीफ आवरी से उम्मते मुसलेमा खुब तरक्की हासिल करे गी। नीज़ आप की तशरीफ आवरी के बाद दीन की हिफ़ाज़त का काम, दीन की इशाआत का काम, दीन की तजदीद का काम और दीन को बुलंद रखने का काम यह सब कारनामे अंजाम दिए जाएं गे, अगरचि के आप से पहले उम्मते मुसलिमा में वह सारे काम अंजाम दिए जा रहें हों गे लेकिन ज़माने के अहवाल की वजह से इन में जो कमज़ोरी और इज़्मेहलाल आगया होगा आप रह. उस को दुर कर दें गे और दीन को कामयाब तरीक़े से आगे बढाने की कोशिश करें गे।

हिफ़ाज़ते दीन

इस दुनिया को बनाने का मसकद अपने पैदा करने वाले को पहचानना, और उस के बताए हुए तरीके पर चल कर दोनों जहाँ की कामयाबी हासिल करना है, इस अज़ीम मकसद के लिए अल्लाह तआला ने बहुत सारे अंबिया और रसुल दुनिया में भेजे, हर नबी और रसुल ने अपने अपने ज़माने में अल्लाह तआला का पैग़ाम उस के बंदों तक पहुंचा दिया, और अपनी ज़िम्मे दारियों को अदा करते हुए इस दुनिया से चले गए।

पहले नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को जो शरीअतें दी जाती थी वह उन के मखसुस ज़माने और उन के मखसुस इलाके के लिए होती थी, और सब से अखीर में अल्लाह तआला ने हज़रत खातमुल अंबिया जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस दुनिया में भेजा और जिस दीन के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा वह दीन क़यामत तक के आने वाले इनसासों के लिए एक कानुन, ज़िंदगी गुजारने का एक तरीका और कभी ना खत्म होने वाला दीन करार पाया।

जब कुरआन करीम अल्लाह तआला का आखरी पैग़ाम करार पाया तो उस के आखरी होने का तक़ाज़ा भी यही है कि उस का एक एक हर्फ क़यामत तक महफ़ुज़ रहे ता कि क़यामत तक आने वाले तमाम लोग इस कुरआन पाक से रौशनी हासिल करते रहें, इस लिए इस की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी भी खुद अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ले ली और कुरआन मजीद में फरमाया (الحجر ٩) اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ हम ने खुद यह कुरआन उतारा है और हम खुद इस के मुहाफ़िज़ हैं।

कुरआन सिर्फ अलफ़ाज़ का नाम नहीं, बलकि अलफ़ाज़ व मआनी दोनों के मजमुए का नाम है, इस लिए जिस तरह कुरआन के मआनी और

मज़ामीन की हिफ़ाज़त और हर तरह से तहरीफ से महफुज़ रखने की ज़िम्मेदारी भी है। और इस में इलमी व अमली दोनों किस्म की हिफ़ाज़त शामिल है यानी जिस तरह सहीह इल्म महफुज़ रहे गा उसी तरह सहीह अमल भी महफुज़ रहे गा। और यह सिर्फ कुरआन करीम की खुसुसियत में से है, दीगर आसमानी किताबों की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी हामिलीने किताब के सुपुर्द की गइ थी, चुनांचे बारी तआला का इरशाद है بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاءِ (المائدة : ٤٤) यानी तौरात की हिफ़ाज़त का उन को ज़िम्मेदार बनाया गया, और वह ही खबरगीरी पर मुकर्रर थे।

खुलासा यह है कि कुरआन मजीद के अलफ़ाज़ व मआनी व मतालिब बराहे रास्त अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में हैं, वह ना किसी के मिटाने से मिटने वाले, ना किसी के दबाने से दबने वाले, ना किसी के एतेराज़ से बे कद्र होने वाले और ना ही किसी के रोकने से उस की दावत रुकने वाली है।

बारी तआला के फ़ज़्ल से इस उम्मत में हर ज़माना में एक बडी जमाअत मौजुद होती है, जो खुद शरीअत पर अमल पैरा होती है, और दीने मतीन का मुजस्सम पैकर बन कर हर ज़माने में इस की हिफ़ाज़त व इशाअत का अहम तरीन कारनामा अंजाम देती है, हदीस शरीफ में इरशाद है لا تَزالُ طائفة مِن امّتى قائمةٌ بأمر الله، لا يضُرّهم مَن خَذَلَهُم أو خالَفَهُم، حتّى يأتىَ أمرُ اللهِ وهُم ظاهرون على النّاس (صحيح مسلم ٢/١٤٣) तरजुमा : मेरी उम्मत में एक ऐसी जमाअत बाकी रहेगी जो खुदाए पाक के अहकाम बरकरार रखे, कोइ इस का साथ ना दे या कोइ इस का मुकाबला करे, इसे इस की कोइ परवा नहीं हो गी, ऐसी हक परस्त जमाअत इस शान के साथ कयामत तक रुनुमा होती रहे गी।

एक दुसरी रिवायत में है لا تزالُ طائفة من أمّتى منصورِين على الحق لا يضّرهم من خَذَلحهم حتى تقوم الساعة (سنن ترمذى ٢/٤٣)

ग़रज़ यह कि इस उम्मत की एक जमाअत हमेशा एलाए हक़ के लिए बर सरे पैकार रहे गी, और इस जमाअत के अपने दौर के एक अमीर हज़रत महदी रज़ि. हों गे।

कयमात किन लोगों पर कायम होगी, इस के मुतअल्लिक दो किस्म की अहादीस में ततबीक :

मज़कुरा बाला दोनों रिवायतों से मालुम होता है कि अल्लाह तआला के नेक बंदों की एक जमाअत कयामत तक बर सरे पैकार रहे गी, और एलाए कलिमतुल्लाह के अज़ीम मकसद में मशगुल रहे गी, जब कि सहीह मुस्लिम की रिवायत لا تقوم الساعة على أحدٍ يقول : الله الله (مسلم ١/٨٤) और इब्ने माजा की रिवायत ولا تقوم الساعة الا على شرارِ الناس (باب شدة الزمان ابن ماجه ٢٠٢) यानी कयामत बदतरीन लोगों पर ही कायम हो गी, से मालुम होता है कि कयामत बदतरीन लोगों पर कायम होगी, उस ज़माने में नेक लोगों का वजुद भी नहीं हो गा।

दोनों किस्म की रिवायतों से बज़ाहिर जो तआरुज़ मालुम हो रहा है उस का हल यह है कि पहली रिवायतों में إلى يوم القيامة और حتى تقوم الساعة जैसे अलफाज़ से कयामते कुबरा मुराद नहीं, बलकि कयामत की सिर्फ एक बडी अलामत मुराद है, यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ुल।

इस से मालुम होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ुल तक यह जमाअत बराबर रुए ज़मीन पर बरकरार रहे गी, फिर आहिस्ता आहिस्ता अहले हक़ हज़रात इस दुनिया से रुखसत हो जाएंगे और शरारे खल्क पर कयामत काएम हो गी। मज़ीद तफसील के लिए ''नवादिरुल फिक्ह १/१३३,१३२'' देखें।

खिलाफत :

عن سعيد بن جمهانؓ، قال : حدثني سفينةؓ قال : قال رسول الله

صلى الله عليه وسلم الخلافةُ فی أُمتی ثلاثون سنة، ثم ملكٌ بعد ذلك، ثم قال لي سفينةُ : أمسِكْ خلافة ابی بكر ثم قال وخلافةَ عمر وخلافة عثمان ثم قال امسك خلافةَ علي، فوجدناها ثلثين سنةً، قال : سعيدٌ : فقلتُ له : إنّ بنی اميّة يزعمون "انّ الخلافة فيهم" قال : كذبوا بنُو الزّرقاء، بل هم ملوكٌ من شرِّ الملوك (رواه الترمذي ٢/٤٦)

तरजुमा : मेरी उम्मत में खिलाफत तीस साल तक रहे गी, फिर उस के बाद सलतनत हो जाए गी। फिर मुझ से सफीना रज़ि. ने कहा कि आप हरत अबुबकर रज़ि. की खिलाफत को शुमार की जिए, फिर हज़रत उमर रज़ि. और हज़रत उस्मान रज़ि. और हज़रत अली रज़ि. की खिलाफतों को शुमार करो। हम ने (शुमार किया तो) उसे तीस साल ही पाया। फिर मैं ने सफीना रज़ि. से कहा : बनी उमय्या तो दावा करते हैं कि (मज़कुरा) खिलाफत उन (के खानदान) में ही है, तो सफीना रज़ि. ने कहा की बनी उमय्या ज़रका झुटे हैं, वह तो बदतरीन बादशाहों में से हैं।

फकीहे अस्र हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह. इस हदीस के ज़िम्न में लिखते हैं। أي الخلافة المرضية إنما هی للذين صدقوا الاسلام بأعمالهم وتمسّكوا بسنةِ النبي صلى الله عليه وسلم (حواشی الكوكب الدری ٢/٥٥) وحواشی الترمذي ٢/٤٦ وهكذا فی مجمع بحار الأنوار ٢/٩٢) यानी वह पसंदीदा खिलाफत उन लोगों की (काएम करदा) हो गी जिन्हों ने अपने आमाल के ज़रीए इस्लाम की तसदीक की और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मज़बुती से थाम लिया।

इसी तरह हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि. की रिवायत में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खबर दी है कि कुछ ज़माने तक नबुव्वत और रहमत रहे गी, इस के बाद खिलाफत और रहमत, बाज़ रिवायात में خلافة على منهاج النبوة के अलफाज़ भी वारिद हैं। (मुस्तदरक लिलहाकिम ४२०/४, हदीस नं. ८४५९)

सय्यदना हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के आखरी नबी और रसुल हैं, आप के बाद कोइ नया रसुल व नबी आने वाला नहीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते तय्येबा में ही अपने मकासिद बेसत, यानी तिलावत आयात, तज़कियए नुफुस, तालीमे किताब व हिकमत की रौशनी में एक जामे दीन और सालेह मोआशेरा इनसानियत के सामने पेश फरमाया, साथ ही साथ मरज़ियाते इलाहिया के मुताबिक अद्ल व इनसाफ वाली एक मिसाली हुकुमत भी काएम फरमाइ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाकमाल शखसियत इमामते सुगरा (नमाज़ की इमामत) और इमामते कुबरा (हुकुमत) दोनों की जामे थी, और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहयि इलाही की रौशनी में जो निज़ामे हुकुमत कायम फरमाया, उन की मिसाल तारीखे आलम में नहीं मिल सकती।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद भी यह निज़ामे हुकुमत कुछ अरसा तक दुनिया में बाकी रहा, जिस को हम ''खिलाफत'' से ताबीर करते हैं, और मंसब खिलाफत के ज़िम्मे दार को ''खलीफा'' कहते हैं इस लिए हकीकत में खिलाफत उसी निजाम को कहेंगे जो खालिस नुबुव्वत व रिसालत की तालीमात के मुताबिक हो, और नबवी निज़ाम की तमाम खुबियां उस में मौजुद हों, और वह निज़ाम अहदे रिसालत के तर्ज़ पर चलता हो।

खिलाफत की तारीफ करते हुए हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह. लिखते हैं : ''खिलाफत (आम्मा) वह रियासते आम्मा है जो बज़रीअए इशाअते उलूमे दिनिया (यानी कुरआन व हदीस की तालीम, वाज़ व नसीहत) को ज़िंदा रखना, अरकाने इस्लाम (पंज वक्ता नमाज़, जुमआ व इदैन की जमाअत का एहतेमाम और इमामत, ज़कात वसूल करना, मसरफ में खर्च करना, आमिल का तकर्रुर, हिलाल की शहादत और इस के बाद रमज़ान और इदैन का हुक्म, हज का नज़्म वगैरा) को कायम करना। जिहाद और उस के मुतअल्लेकात को कायम करना, ओहदए क़ज़ा के फराएज़ को

अन्जाम देना, हुदुद क़ायम करना, मज़ालीम को दुर करना और अम्र बिल्मारुफ व नहय अनिल मुनकर को बजा लाना, यह सारे काम बहैसियते नाएबे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिलफेल अनजाम देने को खिलाफत कहा जाता है। (अल इजालतुल खिफा)

खिलाफत के सिलसिले में इमाम अहले सुन्नत मौलाना अब्दुश शकूर साहब लख्नवी रह. फरमाते हैं : खिलाफत के मआनी जानाशीन के हैं, जो आदमी किसी की जगह पर बैठ जाय यानी उस का नाएब बन कर काम करे वह उस का खलीफ कहा जाय गा, इसतेलाहे शरीअत में खिलाफत उस बादशाहत को कहते हैं यह नियाबत आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन को कायम रखने और अहकामे दीनिया के नाफिज़ करने के लिए हो, (तोहफ–ए–खिलाफत७८)

खिलाफत की अहमियत

खिलाफत और खलीफा का बाकी रहना उम्मत के लिए निहायत अहम और ज़रुरी अम्र था, जिस की अहमियत का अंदाज़ा इस से लगाया जा सक्ता है कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद तदफीन में जो ताखीर हुवी वह खलीफा के तै करने की वजह से हुवी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौली व अमली इशाराते वाज़ेहा की रौशनी में इजमाए सहाबा से जब हज़रत अबु बकर सिद्दीक रज़ि. खलीफ–ए–अव्वल मुकर्रर किये गए, तब तजहीज़ व तकफीन का मुबारक अमल अंजाम दिया गया।

इस सिलसिले में हज़रत शाह वलीउल्लाह रह. फरमाते हैं : (सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की तवज्जेह जनाब रसुलुल्लाह अलैहि वसल्लम के दफ्न से पहले खलीफा के तअय्युन व तकर्रुर की तरफ मायल हुे, लेहाज़ा (मालुम हुवा कि) अगर सहाबाए किराम रज़ि. के शरीअत की तरफ से खलीफा मुकर्रर करने की फरज़ियत (और इस में ताखीर करने की मुमानेअत) मालुम ना होती, तो वह हज़रात हरगिज़ खलीफा के तक़र्रुर को

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दफ्न पर मुक़द्दम ना करते (इज़ालतुल खिफा १/२१)

शाह साहब रह. मज़ीद फरमाते हैं कि : मुसलमानों पर ऐसे खलीफा का मुक़र्रर करना जो जामे शराएते खिलाफत हो, फर्ज़ किफाया है और क़यामत तक फर्ज़ रहे गा (इज़ालतुल खिफा १/१९)

खलीफा

खालीफा नबी का सच्चा जानशीन होता है, नबवी उलुम और नबवी सिफात से आरास्ता होता है, कुरआन व हदीस के उलुम में उस को दरके कामील होता है, सुन्नते नबवी का कामील पाबंद होता है, और नबी की तरह उस का दिल इंसानियत की खैर ख्वाही के जज़बे से लबरेज़ होता है, खलीफा के लिए ज़रुरी है कि वह मुसल्मान, मर्द, आक़िल, बालिग़, आदिल, आज़ाद, मुतकल्लिम, समीअ, बसीर हो और इजतेहाद की सलाहियत भी उस में पाई जाती हो – (इजालतु खिफा १/१९)

खिलाफते राशिदा

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद हज़रत अबुबकर सिद्दीक रज़ि. ने बहुत ही नाज़ुक वक्त में जमीअ मोहाज़रीन और अनसार के ईत्तेफाक से मंसबे खिलाफत को संभाल कर उम्मत की रहबरी फरमाइ, आप की खिलाफत की कुल मुद्दत दो साल तीन महीने और तेरा दिन है।

हज़रत अबु बकर सिद्दीक रज़ि. ने अपने बाद हज़रत उमर रज़ि. को खलीफा मुकर्रर फरमा दिया, आप की खिलाफत की मुद्दत दस साल और तकरीबन छे महीने है, हज़रत उमर को जब अबु लूलू मजुसी गुलाम ने फजर की नामज़ में ज़ख्मी कर दिया, तो आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअद बिन अबी वक्क़ास रज़िअल्लाहु अनहुम इन छे हज़रात को अमरे खिलाफत के

मशवरे के लिए मुंतखब खरमाया (अलबिदाया वन्नेहाया ७:१४४)

उन्हों ने मशवरे से हज़रत उस्मान रज़ि. को खलीफा मोक़र्रर किया, आप की मुद्दते खिलाफत तकरीबन बारा साल है, फिर जब हज़रत उस्मान को बागीयों ने शहीद कर दिया तो हज़्राते मोहाजरीन व अन्सार के इस्रार पर हज़रत अली रज़ि. खलीफ हुए, आप की मुद्दते खिलाफत चार साल नौ महीने है।

ग़रज़ चारों हज़रात रज़ि. की खिलाफत अैन तरज़े नबवी पर रही और हक़ीक़ी खिलाफत की जुमला शराएत उन में मौजुद थीं, मक़सदे खिलाफत अकमल तौर पर इन से ज़ाहिर था, ईसी मुबारक दौर को हम ''खिलाफते राशिदा'' के मुबारक अलफ़ाज़ से ताबीर करते हैं, और इसी खिलाफत के चारों खुलफा को हम ''खुलफाए राशिदीन'' के नाम से याद करते हैं जिन्हों ने खिलाफत का सही हक़ अदा करते हुए मिसाली हुकुमत क़ायम फरमाइ और ऐसे कारनामे अनजाम दिये जिन की नज़ीर अंबिया-ए-किराम के कारनामों के एलावा तारीखे इनसानियत में नहीं मिलती।

हज़रत अली की शहादत के बाद हज़राते सहाबा (रज़ि.) और ताबेईन (रह.) की एक बडी जमाअत ने हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) को खलीफा बनाया। हज़रत हसन ने छे महीने तक मन्सबे खिलाफत को संभाला, फिर जब छे महीने पुरे हो गए तो आप यह फरमाते हुए उस मन्सब से दस्तबरदार हो गए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था के ''खिलाफत मेरे बाद तीस बरस रहे गी'' और तीस बरस पुरे होने में छे माह बाकी थे वह पुरे हो गए, गोया हज़रत हसन रज़ि. की खिलाफत हज़रत अली की खिलाफत का तकमेला व ततिम्मा थी।

قال العلماءُ: "لم يكن فى الثلاثين بعده صلى الله عليه وسلم الا الخلفاءُ الأربعة وأيامُ الحسن" (تاريخ الخلفاءُ) तरजुमा : उलमा ने फरमाया है कि

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद तीस साल खिलाफत में खुलफा–ए–अरबआ और हज़रत हसन रज़ि. के अय्यामे हुकूमत के एलावा कोई ज़माना नही था, "والحسنُ آخر الخلفاءِ بنصّه" (तारीखुल–खुलफा १३१) तरजुमा : हज़रत हसन रज़ि. बदीही तौर पर आखरी फलीखा हैं।

ग़रज़ इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक खिलाफत अला नहजिन्नुबुव्वह के तीस साल पुरे हुए, चुनानचे सुनन अबु दाऊद (बाब फिल खुलाफा स.३६८ हदीस नं. ४६४७) की रिवायत "خلافة النبوة ثلاثون سنة الخ" की तशरीह करते हुए मौलाना मन्जुर अहमद नोमानी रह. लिखते हैं।

''हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के ठीक तीसवें साल हज़रत अली मुरतुज़ा रज़ि. की शहादत हुइ, आप के बाद आप के बडे साहब ज़ादे हज़रत हसन रज़ि. आप के जानशीन और खलीफा हुवे, लेकिन उन्हों ने चंद ही महीने के बाद मुसलमानों की खाना जंगी खत्म करने ने लिए रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक पेशीन गोई के मुताबिक हज़रत मुआविया रज़ि. से सुलेह कर ली, और उन के हक में खेलाफत से दस्त बरदार हो गए''

हज़रत हसन रज़ि. की खिलाफत के यह चंद महीने शामिल कर लिए जाएं तो पुरे तीस साल हो जाते हैं। पर खिलाफत अला मिन्हाजिन्नुबुवह और खिलाफते राशिदा जिस को हदीस में खिलाफतुन्नुबव्वह कहा गया है, इन तीस सालों तक रही। इस के बाद तौर तरीकों में तबदीली का अमल शुरु हो गया, और शुदा शुदा खिलाफत अला मिनहाजिन्नुबुव्वह की जगह बादशाहत का रंग आ गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुसरी पेशीन गोइ की तरह यह हदीस भी रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजज़ा और आप की नुबुव्वत की दलील है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जो कुछ होने वाला था, जिस के इल्म का कोइ ज़ाहिरी ज़रीआ नहीं था, आप ने

उस की इत्तेला दी। और वही पेश आया। ज़ाहिर है कि आप को इस का इल्म अल्लाह तआला की वह्य के ज़रीए ही हुवा था। (मआरेफुल हदीस २४४/७)

खिलाफते राशिदा के बाद दुसरे दरजे की खिलाफत

खिलाफते राशिदा के बाद एक दुसरे दरजे की खिलाफत शुरु हुइ, जिस को मुलुकियात और बादशाहत से भी ताबीर किया गया है, जिस की इबतेदा खुलफाए बनी उमय्या से हुइ और बनी अब्बास से आगे बढ कर इस का खातमा तुरकी खिलाफते उस्मानिया पर एक बडी साज़िश के तहत सन १९२१ में किया गया।

इस दुसरे दरजे के दौरे खिलाफत में नबवी तौर व तरीक पर उस पुखतगी से अमल नहीं हो सका जो खुलफाए राशिदीन के दौर में हुवा। और ज़िम्मेदाराने खिलाफत व एमारत से बहुत सारी बातें शरई नुकतए नज़र से काबिले गिरिफ्त वजुद में आइं और निज़ामे हुकुमत में बहुत सारी कमज़ोरियाँ भी सामने आईं।

इस के बावजुद इस दुसरे दरजे की खिलाफत को हम ''खिलाफते इस्लामिया'' से याद करते हैं, चुंकि उस दौर में भी ममालिके इस्लामिया दारुल हर्ब में तबदील नहीं हुए, एक दीनी निज़ाम चल रहा था, जो मजमुई हैसियत से इस्लाम ही के हक में था, और दुशमन आज की तरह मुसलमानों को एक दम लुकमए तर बनाने सेपहले सोचने पर मजबुर थे, दीन व शरीअत की हिफ़ाज़त और आलमे इस्लाम की ''पासबानी'' का काम अंजाम दिया जा रहा था। और आज जब वह खिलाफत भी बाकी नहीं तो हम मुसलमानों को बहुत ही शिद्दत के साथ उस की अहमियत का एहसास हो रहा है। इन ही खुबियों के पेशे नज़र रुसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अहेद के खुलफा के मुतअल्लिक भी (उमुरे हुकुमत में) समअ व ताअत की ताकीद

फरमाइ ता कि यह निज़ाम किसी तरह बिखरने ना पाए, और इन ही ताकीदात के पेशे नज़र सहाबा रज़ि. व ताबईन व औलिया ने बाद वाले ज़माने में अपने मेयार से उतर कर इन बाद वाले उमरा के हाथ पर उमुरे हुकुमत में बैअत की और उन से बग़ावत ना की।

हज़रत शाह वलियुल्लाह रह. फरमाते हैं कि : ''किसी सुलतान (की हुकुमत) पर मुसलमानों के मुत्तफिक हो जाने के बाद उस सुलतान से बग़ावत करना हराम है, अगर चे वह सुलतान खिलाफत की शरतों का जामे न हो, मगर इस सुरत में कि इस से सरीह कुफ्र ज़ाहिर हो'' (इज़ालतुल खिफा २८/१)

दुसरी जगह लिखते हैं। ''मसालेहे इस्लाम के मुतअल्लिक खलीफा जो भी हुकुम फरमावे और (नीज़ इस का जो हुक्म) शरीअत के खिलाफत न हो (उस की बजा आवरी) मुसलमानों पर लाज़िम है, चाहे खलीफा आदिल हो या ज़ालिम''

ग़रज़ यह निज़ामे खिलाफत तकरीबन १३ सदी तक बराबर चलता रहा, यह दुसरे दरजे की खिलाफत है।

उम्मते मुसलिमा के पांच दौर

عن حذيفة بن اليمان رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : "إنّ اول دينكم نبوّة ورحمةٌ وتكون فيكم ماشاء الله أن تكون، ثم يرفعها الله جلّ جلاله، ثم تكون خلافة على منهاج النبوة ما شاء الله أن تكون، ثم يرفعها الله جلّ جلاله، ثم يكون ملكاً عاضاً فيكون، ثم يرفعه الله جلّ جلاله، ثم تكون ملكا جبريّة فتكون ماشاء الله أن تكون، ثم يرفعه الله جلّ جلاله، ثم تكون خلافةً على منهاج النبوة، تعمل فى الناس بسُنة النبيّ ويُلقى الإسلامُ بجرانه فى الأرض، يرضى عنها ساكنُ السماء وساكن الأرض، لا تدعُ السماء من قطر الا صبّته مدراراً، ولا تدع الأرض من نباتها وبركاتها شيئاً الا أخرجته" (رواه احمد فى حديث النعمان بن بشير رضي الله عنه رقم الحديث ١٨٢٦٦ والبيهقى فى دلائل النبوة)

तरजुमा : हरत हुज़ैफा बिन यमान रज़ि. कहते हैं कि : रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया के :

(१) तुमहारे दीन का आग़ाज़ नुबुव्वत व रहमत से हुवा है, जब तक अल्लाह चाहे गा हव तुमहारे दरमियान मौजुद रहे गी, फिर अल्लाह तआला उस को उठा लें गे (चुनानचे ६३ बरस दुनया में क़ियाम फरमा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सन ११ हिजरी माह रबीउल अव्वल में दुनया से तशरीफ ले गए)

(२) फिर खिलाफत अला मिनहाजिन्नुबुव्वह कायम हो गी, यह भी अल्लाह तआला जब तक चाहें गे रहे गी, फिर अल्लाह तआला इस को भी उठा लें गे (चुनानचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वेसाल के बाद ३० साल खिलाफत अला मिनहाजिन्नुबुव्वह रही)

(३) उस के बाद सख्त और मज़बुत मुलुकियत का दौर आए गा, अल्लाह तआला जब तक चाहें गे वह रहे गी फिर उस को भी अल्लाह तआला उठा लें गे (सन ४१ हिजरी से मुलुकियत शुरु हुवी और सन १३३८ हिजरी में वह भी खत्म हो गइ)

(४) फिर जाबिर ताना शाही कायम होगी, अल्लाह तआला उस को भी खत्म फरमायें गे (सन १३३८ हिजरी में खिलाफत के खातमे के बाद अब छोटी सलतनत और ताना शाहियत का दौर है)

(५) और अखीर में दोबारा खिलाफते राशदा लौट आये गी जो बिलकुल सही नहेजे नुबुव्वत पर कायम हो गी, और इस्लाम अपनी गर्दन ज़मीन पर डाल दे गा (यानी इस्लाम को ज़मीन में करार हासिल हो गा) उस दौरे खिलाफत से ज़मीन और आसमान वाले खुश हों गे, खुब बारिश हो गी और ज़मीन से भी खुब नबातात और बरकतैं निकलें गी।

इस हदीस शरीफ में आखरी ज़मानें में दोबारा जिस खिलाफत अला मिनहाजिन्नुबुव्वह के क़ायम होने की बशारत फरमाई वह भी हज़रत महदी रज़ि. के ज़माने के मुतअल्लिक बशारत है।

बारा खलीफा

हदीस शरीफ में है।

عن جابر بن سمرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "يكون من بعدى اثنا عشر أميرا" قال: ثمّ تكلم بشيء لم أفهمه، فسألت الذى يلينى؟ فقال: قال: "كلهم من قريش" هذا حديث حسن صحيح (رواه الترمذى ٢/٣٦ رقم ٢٢٢٣ وأبوداؤد ٢/٥٨٨)

तरजुमा : मेरे बाद १२ खलीफा हों गे, रावी कहते हैं कि फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ कहा जो मैं समझ न सका तो मैं ने अपने पडोस में बैठे शख्स से दरयाफ्त किया? तो उस ने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि सब कुरैश हों गे, दुसरी एक हदीस में है : मेरे बाद कोई नबी नहीं, हाँ खुलफा हों गे जिन की तअदाद बहुत हो गी।

नोट : इन बारह हज़रात को उरफन खलीफा कह सकेत हैं, गोया यहाँ शब्द खलीफा बादशाह और हुकुमत के ज़िम्मेदारे आला के मानी में हो गा।

यह हदीस शरीफ की मुखतलिफ तौज़ीहात की गइ हैं, इन में सब से राजेह बात यह है कि इन बारह खुलफा का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मुसलसल होना ज़रुरी नहीं है, बलकि मुखतलिफ ज़मानों में कयामत तक यह तअदाद पुरी हो गी। चुनांचे साहबे बज़्लुल मजहुद फरमाते हैं।

قال البعض: المرادُ بهم الذين هم على سيرة الخلفاءِ (الراشدين) وآخرهم الإمام المهديُّ (بذل المجهود ٥/١٠١) कि बाज़ ने कहा : इन से मुराद वह लोग हैं जो खुलफाए राशिदीन की सीरत के पैरोकार हों गे, और उन में आखरी हज़रत महदी रज़ि. हों गे।

हज़रत मौलाना खलील अहमद साहब सहारंपूरी रज़ि. ने इसी क़ौल को तरजीह दी है, इमाम सुयूती रह.और शाह वलीउल्लाह रह. ने भी इस को

पसंद फरमाया है। अलबत्ता यह बात यकीनी है कि इन १२ खुलफा में आखरी खलीफा हज़रत महदी रज़ि. हों गे, चुनांचे इमाम अबु दाऊद रह. ने १२ खुलफा वाली हदीस को ''किताबुल महदी'' में ज़िक्र फरमा कर इस तरफ इशारा किया है कि वह बारहवें खलीफा हज़रत महदी रज़ि. हों गे।

नोट : हदीस शरीफ की यह जो तशरीह पेश की गई इस के इलावा एक कौल यह भी है कि बारह खलीफा से मुराद वह उमराए बनी उमय्या हैं जो अमीरे मोआविया के बाद सलतनत के मालिक हुए, गोया हदीस शरीफ का मतलब यह है कि इन बारह खुलफा तक इस्लाम की कुव्वत व शौकत बएतेबारे हुकुमत बरकरार रहे गी और इन के ज़माने में सलतनत को इस्तेहकाम हो गा।

उन १२ हज़रात के नाम यह हैं (१) यज़ीद बिन मुआविया (२) मोआविया बिन यज़ीद (३) अब्दुल मलिक (४) वलीद (५) सुलेमान (६) उमर बिन अबदुल अज़ीज़ (७) यज़ीद बिन अबदुल मलिक (८) हिशाम (९) वलीद बिन यज़ीद (१०) यज़ीदद बिन वलीद बिन अबदुल मालिक (११) इब्राहीम बिन वलीद (१२) मरवान बिन मोहम्मद।

चुनांचे बनी उमय्या में यह बारा खुलफा हुए, इन के बाद सलतनत बनी उमय्या से निकल कर बनी अब्बास में चली गई।

इस लिससिले में एक कौल यह भी है कि इस से मुराद वह बारह खलीफा हैं जो हज़रत महदी रज़ि. के बाद हों गे, जिन में से पांच हज़रत हसन रज़ि. की औलाद में से हों गे, और पांच हज़रत हुसैन रज़ि. की औलाद से हों गे और उन के बाद उन के साहबज़ादे। इस तरह बारह खलीफा हों गे सब बरहक़ हों गे। (मजमअ बिहारिल अनवार ८२,८४/१)

एक कौल यह है कि हज़रात खुलफाए राशिदीन रज़ि., हज़रत हसन रज़ि., हज़रत मुआविया रज़ि., हज़रत अबदुल्लाह बिन जुबैर रज़ि. और हज़रत उमर बिन अ.अज़ीज़ रह. यह आठ हुए, फिर हज़रत महदी अब्बासी

रज़ि. और हज़रत ताहिर रह. जो बडे आदिल थे, और बाकी मांदा दो मुराद हैं जिन का अभी इन्तेज़ार है, इन में से एक हज़रत महदी रज़ि. हैं। (तारीखुल खुलाफा १२)

नोट : इस मौके पर सब से अहम बात यह है कि यह बारा खलीफा मासूम नहीं हों गे, और नुबुव्वत या उस से बरतर किसी दरजे पर नहीं हों गे, और उन के लिए इमामत किसी खास इमतियाज़ी वस्फ के साथ नहीं होगी। नीज़ यह शियों के यहां जिन हज़रात को (इस्ना अशर इमाम) कहा जाता है, उस सिलसिले में मुफ्ती युसूफ साहब लुधयानवी रह. फरमाते हैं : अहले सुन्नत भी इन को अपना मुक्तदा मानते हैं, मगर दो फर्क के साथ :

(अव्वल) यह के (शिया) इन अकाबीर को अंबियाये किराम की तरह मासूम अनिल खता मुफतरजुत-ताआ और मामुर मिनल लाह समझते हैं, अहले सुन्नत के नज़दीक यह अक़ीदा सिर्फ अम्बियाये किराम के बारे में रख्खा जा सक्ता है।

(दुव्वम) यह कि वह जो मसाएल इन अकाबिर की तरफ मनसूब करते हैं वह सही नहीं हैं, और उन रिवायात के नक़्ल करने वाले लाएके एतेमाद नहीं, (अलमहदी वल मीसह ३२)

तजदीदे दीन और मुजद्दिद

عن ابى علقمة رحمه الله، عن أبى هريرة رضي الله عنه فيما أعلم عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: إنّ الله يبعث لهذه الامة على رأس، كل مائة سنةٍ من يجدّدُ لها أمر دينها (مستدرك ٥٦٨/٤ رقم ٨٥٩٣)

तरजुमा : बिला शुबाह अल्लाह तआला इस उम्मत के लिए हर सदी पर ऐसे आदमी को मबऊस फरमाएं गे जो उम्मत के दीनी मामलात को अज़ सरे नौ क़ायम व मज़बुत करे गा।

दीने इस्लाम की क़यामत तक हिफ़ाज़त का अल्लाह तआला की

तरफ से एक ग़ैबी निज़ाम है जो इस उम्मत के लिए बारी तआला की तरफ से एक इमतियाज़ी नेअमत है, लेकिन शैतानी कुव्वतों हर दौर में इस दीने हनीफ में तहरीफ की कोशिश करती रही हैं।

तहरीफ की इबतेदा इफरात व तफरीत, तशद्दुद व ग़ुलू की बुनयाद पर होती है, राहे एतेदाल से हट कर अपनी खुवाहिशात के मुताबिक दीन की तशरीह करना और गलत नज़रियात व इल्हाद को दीन से ताबीर करना, यह वह वबाई अमराज़ हैं जो उम्मत को अस्ल दीन से महरुम कराने का ज़रिया बन जाते हैं, अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने इस उम्मते मोहम्मदिया पर खुसूसी करम फ़रमाते हुए इस क़िस्म की तहरीफ व इलहाद से इस दीने मतीन को पाक रखने के लिए हर दौर में मुजद्देदीन का एक मुबारक सिलसिला कायम किया।

तजदीद

तजदीदे दीन की तशरीह फरमाते हुए फ़क़ीहुल उम्मत सय्यदी मुफ्ती महमु हसन गंगोही रह. रक़म तराज़ हैं : ''शरीअत के जो अहकाम मुरुरे ज़माना की वजह से बे तवज्जुही का शिकार हो गए हैं, ग़लबए हवा व हवस और मसाइ–ए–नफस व इब्लीस की वजह से मतरूक हो गए हों, उन को उजागर करना, उन की तरफ तवज्जेह दिलाना, उन को अमली जामा पहनाने की कोशिश इस को तजदीदे दीन कहते हैं'' (फतावा महमुदिया बाबुल अक़ाइद जिल्द १५ सफा १२९)

मुजद्दिद के औसाफ

☆ इल्म और अमल में रसुक के सच्चे जा नशीन होते हैं।

☆ इन को अल्लाह की तरफ से नबी की तरह पुर कशिश शखसियत मिलती है।

☆ नसल, खानदान, अखलाक़ व आदात हर लेहाज़ से अन की तरफ लोगों के दिल खिंचते हैं।

☆ अपनी इमानी फिरासत से उम्मत की अस्ल बीमारियों की जुसतुजू कर के कुरआन और हदीस की रौशनी में उस के एलाज का एक जामे लाएहए अमल तय्यार करते हैं, फिर उस को अमली जामा पहनाते हैं।

☆ बिदआत व रुसुमत का परदा चाक करते हैं।

☆ अकाइद, इबादात, मुआशेरत, मामलात, अखलाक़ियात, सियासत ग़रज़ हर शोबे में इमानी रुह फुंकते हैं।

☆ एअलाए हक़ में किसी से मरअुब नहीं होते।

☆ अल्लाह की जानिब से लोगों में एताअत और मोहब्बत का जज़बा पैदा होता है।

☆ दीन का दर्द रखने वाले अफराद उन के अतराफ जमा होते हैं।

☆ उन को अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तरह मुखालेफतों का सामना होता है, अज़िय्यतें उठानी पडती हैं, लेकिन व एलाए दीन की खातिर सब्र व इस्तेक़ामत, एखलास वह यक़ीन के पैकर होते हैं, ग़ैबी नुसरत की बरकत से मसाएब के बादल धीरे धीरे छंट जाते हैं, और दुनिया में उन का सिक्का चलने लगता है।

☆ मुजद्दिद ज़ाती एतेबार से उलूम व मआरिफ में कामिल दरक वाले होते हैं, दीन और सुन्नत की गहरी बसीरत उन में होती है।

☆ तकवा व सलाह का कामिल वस्फ उन में होता है।

☆ मुजद्दिद इल्म को फैअलाते हैं, अहले इल्म की इज़्ज़त करते हैं।

☆ अल्लाह तआला इस किस्म की सिफात का हामिल अपना एक बन्दा या इन सिफात वाले बन्दों की जमाअत हर सदी के शुरु में, या हर दौर में, या हर कुरून में इस उम्मत में पैदा फरमाते रहे गें, इन ही

मुजद्देदीन के मुबारक सिलसिले की आखरी कडी हज़रत महदी रह. हों गे।

चुनांचे माज़ी के मुजद्दिद व फक़ीह हररत गंगोही रह. फरमाते हैं। هو اٰخِرُ المجدد هذهِ الامة (الكوكب الدرى ٢/٥٧) यानी हज़रत महदी रह. इस उम्मत के आखरी मुजद्दिद हों गे।

नोट : खुद मुजद्दिद को बज़रिए इल्हाम और अलामत (इसतेदलाली तरीक़े से) अपने मुजद्दिद होने का इल्म होता है, लेकिन वह वही के दरजे में नहीं, वैसे मुजद्दिद अपने मखसुस कारनामों के ज़रीए पहचान लिए जाते हैं। (खुलासा अज़ फतावा महमुदिया बाबुल इशाअत जिल्द १३ सफहा ४०३)

हज़रत महदी रह. के ज़ुहूर की ताकीद

अहादीसे मुबारका में आप की तशरीफ आवरी को बहुत ही ताकीद से बयान किया गया है। एक जगह इरशाद है।

عن عبدالله بن مسعود رضي الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال : لَوْ لَم يَبْقَ مِنَ الدُّنيَا الّا يومٌ، قال : زائدة (الراوى) لطوّل اللّٰهُ ذٰلك اليوم حتى يبعث رجلاً منّى (أو قال) من أهل بيتى، يواطى اسمُه اِسمى واِسْمُ أبيه اسم أبي، زاد فى حديث فطر : يملأ الأرض قِسطاً وعدلاً كما مُلئت ظلماً وجورا" (ابوداؤد كتاب المهدى ج٢ / ص٥٨٨)

तरजुमा : अगर दुनिया का एक दिन भी बाक़ी रह जाए, तो अल्लाह तआला उस दिन को इतना लंबा कर दें गे के कि इस उस में एक आदमी मुझ से या (युं फरमाया के) मेरे अहले बैत में से उस तरह मबऊस फरमा दें गे कि उन का नाम मेरे नाम के मुशाबह हो गा, और उन के वालिद का नाम मेरे वालिद के नाम के मुशाबह हो गा, (वह अद्ल व इन्साफ को दुनिया में उसी तरह भर दें गे जिस तरह वह ज़ुल्म व सितम से भर गइ थी)

एक जगह इरशाद है।

عن ابی هريرة رضي الله عنه قال : لو لم يبقّ منَ الدنيا الا يوماً لطوّل اللّٰهُ ذٰلك اليوم حتی یلیّ، هذا حديثٌ صحيح (ترمذی ٢/٤٧)

यानी अगर दुनया का सिर्फ एक ही दिन बाक़ी रह जाए गा तो अल्लाह तआला उस दिन को लम्बा कर दें गे यहाँ तक कि (एक आदमी) वाली हो जाए गा।

एक जगह इरशाद है।

عن عبداللّٰه (بن مسعودٍ) رضي الله عنه قال : قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه عليه وسلم : "لا تذهبُ الدُّنيا حتی یملك العرب رجلٌ من أهل بيتی يواطی اسمهٗ اسمی" هذا حديث حسنٌ صحيح (ترمذی ٢/٤٧)

यानी दुनया उस वक्त तक फना नहीं हो गी जब तक मेरे घराने में एक ऐसा आदमी सर ज़मीने अरब का मालिक न हो जाए, जिस का नाम मेरे जैसा हो गा।

मज़कुरा बाला रेवायत में "يـمـلك العـرب" का लफज़ है इस की वज़ाहत यह है कि चुंके सर ज़मीने अरब इस्लाम का मरकज़ और पायए तखत है, इस लिए इस का मालिक होने के कुल ज़ीमन का मालिक होना मुराद है, नीज़ अहले अरब अशरफुन्नास हैं, इस लिए अरबों का सरदार होने को गोया तमाम लोगों का सरदार होना मुराद है।

मौलाना मन्जुर अहमद नोमानी रह. लिखते हैं।

यह भी कहा जा सक्ता है कि इब्तेदाए हुकूमत अरब में कायम होगी, फिर पुरी दुनिया में, या यह के हुकूमत का अस्ल मर्कज़ अरब हो गा। (मआरिफुल हदीस ८/१७०)

एक जगह इस बात को इस अन्दाज़ से बयान किया गया है कि :

لا تـذهـب الايـامُ واللّيالی حتی یملك رجلٌ من أهل بيتی، يواطی اسمهٗ اسمی واسمُ ابيه اسم أبی، فيملا الأرض قِسطاً وعدلاً كما مُلِئتْ ظُلماً وجَوراً" (مستدرك للحاكم رقم الحديث ٨٧١٣)

यानी दिन और रात उस वक्त तक फना नहीं हों गे जब तक मेरे घराने में से एक ऐसा मालिक ना हो जाए जिस का नाम मेरे नाम जैसा और उस के वालिद का नाम मेरे वालिद के नाम जैसा होगा, यह रुए ज़मीन को उसी तरह अदल व इन्साफ से भर दे गा जिस तरह वह ज़ुल्म व सितम से भरी हुइ थी।

"لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى تَمْلَأُ الْأَرضُ ظُلْماً وَجَوْراً ثُمَّ يَخرجُ من أهل بيتى مَن يَملأُها قِسطاً وعدلاً كما مُلئت ظُلماً وَعُدُواناً" (مستدرك رقم الحديث ٨٦٦٩)

यानी कयामत उस वक्त तक नहीं होगी जब तक रुए ज़मीन ज़ुल्म व सितम से और सरकशी से भर ना जाए, फिर मेरे अहले बैत में से एक आदमी ज़ाहिर हो गा दुनया को उसी तरह अद्ल और इनसाफ से भर दे गा जिस तरह वह ज़ुल्म वसितम से भरी हुवी थी।

दोनों रिवायतों का हासिल यह है कि रात और दिन उस वक्त तक फना नही हों गे, या क़यामत उस वक्त तक नही आसकती जब तक हज़रत महदी रह. का ज़ुहूर ना हो जाए।

इन रिवायात का खुलासा यह है कि हज़रत महदी रह. का ज़ुहूर बिलकुल यकीनी और हतमी है, यहाँ तक कि महदी पर इमान रख्ना वाजिब है, जैसा के आगे आए गा।

हज़रत महदी से बैअत की ताकीद

इन्सान के लिए ज़रुरी है कि वह हर खैर और नेकी के काम में बकद्रे इस्तेताअत तआवुन करे, नीज़ शरीअते मुतह्हरा की तालीम के मुताबिक अगर कोइ मुसलेह, मुजद्दिद, दाई इलल खैर खडा हो जाए तो उस का तआवुन करना, उस के लिए राह हमवार करना, उस की राह में रुकावट ना बनना हमारा इमानी व अखलाक़ी फरीज़ा है, लेकिन जब हज़रत महदी रज़ि.

का जुहूर हो गा तो उन का तआवुन करने और उन के हाथ पर बैअत करने की अहादीस में बडी ताकीद वारिद हुइ है। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस को ताकीद के अंदाज़ में इस तरह बयान फरमाया :

''जिस को यह वक्त मिले (यानी हज़रत महदी रज़ि. का ज़माना) तो वह उन के पास आए, अगरचे बर्फ पर घिसट कर आना पडे''

एक और हदीस में वारिद है।

عن عبدالله بن مسعودٍ رضي الله عنه : بينما نحنُ عندَ رَسُولِ اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم اِذْ أقبَلَ فِتيةٌ من بنى هاشمٍ، فَلَمّا رآهم النّبي صلي اللّٰه عليه وسلم اغر ورقت عيناه وتغيّرَ لَونُه، قال (عبد اللّٰه) فقُلتُ : ما نزالُ نرىٰ في وَجهِكَ شيئاً نَكرَهُهُ، فقال : "اِنّا اهلُ بَيتٍ اختارَ اللّٰهُ لَنَا الآخرةَ علىٰ الدُّنيا، واِنَّ اهل بيتى سيَلقَوْنَ بعدى بلاءً وتشريداً وتطريداً حتّى يأتىَ قَوْمٌ مِنْ قِبَلِ المَشرق معهُم راياتٌ سودٌ، فيسئلون الخيرَ فلا يُعطُونه، فيُقاتِلونَ، فيُنصَرونَ، فيُعطون ما سَئَلُوا، فلا يقبلونَ حتّى يدفعوها الى رجلٍ من أهلِ بيتي، فيملأها قسطاً كما مَلَئوها جوراً، فمنْ أدرَكَ ذٰلك منها فليأتهم ولو حبواً على الثلج" (ابن ماجه ص٣٠٩، رقم ٤٠٨٢)

तरजुमा : हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फरमाते हैं कि हम रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमते अकदस में हाज़िर थे कि अचानक बनी हाशिम के चंद छोटे बच्चे (आप के पास) आए, जब आप ने उन्हें देखा तो आप की आंखें आंसुओं से नम हो गई अैर चेहरे का रंग तबदील हो गया। हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फरमाते हैं कि मैं ने कहा किहम आप के चेहरे पर गम के आसार देख रहे हैं जो हमारे लिए तकलीफ दह हैं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया, हम अहले बैत को अल्लाह ने खुसुसियत बखशी है, हमारे लिए दुनिया की बनिसबत आखेरत को पसंद फरमाया है, मेरे अहले बैत को मेरे बाद बडी तकलीफों और परेशानियों से गुज़रना पडे गा यहाँ तक कि मशरिक की जानिब से एक कौम नमुदार हो गी जिन के साथ सियाह झंडे हों गे। वह (मेरे अहले बैत) उन से खैर का सवाल

करें गे लेकिन उन्हें नहीं दिया जाए गा। तब वह किताल करें गे, और वह नुसरत व कामरानी से हमकिनार हों गे, फिर उन्हें उन की मतलुबा चीज़ दी जाए गी लेकिन वह उस को कबुल नहीं करें गे यहाँ तक कि वह मेरे अहले बैत में से एक शख्स को दें गे, वह रुए ज़मीन को उसी तरह अद्ल व इनसाफ से भर दे गा जिस तरह वह जुल्म से भरी हुइ थी। सो जो कोई उन्हें पाए वह उन के पास पहुंच जाए, चाहे बर्फ पर घिसट कर ही क्युँ ना जाना पडे।

इन मुबारक अलफाज़ से अनदाज़ा होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन का साथ देने और उन के हाथ पर बैअत करने की कितनी ताकीद फरमाई है।

हज़रत शाह वलियुल्लाह फरमतो हैं : हज़रत महदी रज़ि. की खिलाफत का वक्त आए गा तो आप की इत्तेबा उन उमुर में वाजिब हो गी जो खलीफा से मुतअल्लिक हैं। (इज़ालतुल खिफा २६/१)

जुहूरे महदी की अहादीस

(१) जुहूरे महदी रज़ि. की अहादीस की कसरत :

हाफ़िज़ इब्न हजर असकलानी फरमाते हैं कि जुहूरे महदी की अहदीस हद्दे तवातुर तक पहुंची हुइ हैं। (शेख बरज़ंजी रह. और अल्लामा सुयुती रह. ने तवातुर से मुराद तवातुरे मानवी मुराद लिया है)

काज़ी शौकानी आपनी किताब ''अलफतहु र्रब्बानी'' में लिखते हैं।
”وجميع ما سُقناه بَلَغَ حدّ التواتر، كما لايخفىٰ على من له فضلُ اطلاع“
(بحوالة تحفة الأحوذى ٤٠٢/٦)

कि हम ने जिस कद्र रिवायात ज़िक्र की हैं वह तवातुर की हद तक पहुंच चुकी हैं, जैसा कि वाकफियत रखने वाले पर मखफी नहीं हैं।

इसी किस्म की बात ''शरहे अकीदतुस्सफारीनी'' में भी है कि :
قد كثرت الروايات بخروج المهدى، حتى بلغت حدّ التواتر المعنوى

(شـرح عـقـيـدة السـفـاريـنـى ٢/٨٠) कि हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर की अहादीस इस कसरत से वारिद हुइ हैं कि तवातुरे मानवी की हद तक पहुंच चुकी हैं।

शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी रह. ''अशिअ्अतुल्लमआत'' में लिखते हैं : दरीन बाब अहादीसे बिसयार वारिद शुद, करीब ब तवातुर (अशिअ्अतुल्लमआत ३३७/४) कि इस बाब में बहुत सी रिवायात हैं जो तवातुर के बिलकुल करीब हैं।

(२) जुहूरे महदी रज़ि. की अहादीस की मकबुलियत :

पुरी उम्मते मुसले मा ने उन अहादीस शरीफा को कुबुल किया है, जिन में हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर का बयान है, चुनांचे अल्लामा मनावी रह. जामे सगीर की शरह ''फ़ैज़ुल कदीर'' में फरमाते हैं।

اخبار المهدى كثيرة شهيرة أفردها غيرُ واحدٍ فى التاليف الخ (فيض القدير شـرح جـامـع الـصـغـيـر ٦/٢٧٩) कि हज़रत महदी रज़ि. से मुतअल्लिक अहादीस कसरत से वारिद हैं नीज़ मशहुर भी हैं हत्ता कि लोगों ने उन्हें मुसतकिल तालीफात में ज़िक्र किया है।

(३) हज़रत महदी रज़ि. के नाम की सराहत :

तकरीबन ९० से ज़ाएद अहादीसे मरफुआ हैं जिन में तीस अहादीस में सराहत से महदी रज़ि. का नाम है, और आसारे सहाबा और अकवाले ताबईन इस के इलावा हैं।

नोट : बाज़ अहादीस में अगर चे कि नाम मज़कुर नहीं है ताहम मुहद्दिसीन के हाँ यह कायदा तो मशहुर है कि अगर एक वाकेए से मुतअल्लिक मुखतलिफ अहादीस वारिद हैं, उन में बाज़ मुजमल हों और बाज़ मुफस्सल, तो मुजमाल को मुफस्सल ही के उपर हमल किया जाता है।

(४) जुहूरे महदी रज़ि. की अहादीस के रूवात :

तकरीबन २५ हज़राते सहाबा किराम रज़ि. और ताबईन से हज़रत

महदी के मुतअल्लिक अहादीस मरवी हैं। जिन में हज़रत उस्मान रज़ि., हज़रत अली रज़ि., हरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि., हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि., हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि., हज़रत अबु हुरैरा रज़ि., हज़रत तलहा रज़ि., हज़रत अनस रज़ि., हज़रत अ.रहमान बिन औफ रज़ि. और हज़रत अबु सईद खुदरी रज़ि. जैसे जलीलुलकद्र सहाबा शामिल हैं और उम्महातुल मोमिनात में से हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. और हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि. भी हैं।

(५) सेहाहे सित्ता में हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक अहादीस :

अइम्मए सिहाहे सित्ता में इमाम तिरमिज़ी, इमाम अबु दाऊद और इमाम इब्ने माजा रह. ने अपनी अपनी किताबों में हज़रत महदी रज़ि. के उनवान से मुसतकिल तराजिम काएम किए हैं।

नोट : इब्ने माजा में अगरचे कुछ अहादीस मौजुआ भी हैं, ताहम अल्लामा अ.रशीद नोमानी रह. ने ما تمسّ االيه الحاجه لمن يطالع ابن ماجه में उन तमाम अहादीसे मोजुआ को सफहा ३७ पर जमा कर दिया है लेकिन महदी वाली अहादीस उन में शामिल नहीं है (अलबत्ता इब्ने माजा की रेवायत لا مهدى الا عيسى वाली रेवायत के मुतअल्लिक जो कलाम है उसे हम नें अलग से ज़िकर कर दिया है)

(६) दीगर कुतुबे हदीस में हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक अहादीस :

इन के इलावा इमाम अहमद, इमाम बज़्ज़ार, इब्न अबी शैबा, हाकिम तबरानी, अबु यअला मोसिली, इमाम अबदुरज़्ज़ाक बीन हुमाम, नुऐम बिन हम्माद (शेख बुखारी), हाफिज़ नुरुद्दीन अली बिन अबीबकर अलहैसमी रहमहुल्ला ने और अल्लामा अलाउद्दीन अली मुत्तक़ी नें "كنز العمال" में हज़रत महदी का मुस्तकील तज़केरा किया है।

नोट :- हाफ़िज़ इब्ने तैमिया "منهاج السنة" में और हाफ़िज़ ज़हबी रह. "مختصر منهاج السنة" में तहरीर फरमाते हैं "فنقول : الأحاديث التى

تُحتجُّ بها على خروج المهدى صحيحةٌ، رواها أحمد وأبوداؤد والترمذى "٥٦٢ص के : जिन अहादीस से हज़रत महदी रज़ि. के ज़ुहूर पर इस्तेदलाल किया गया है वह सहीह हैं, अहमद, अबुदाऊद और तिरमीज़ी रह. ने इन को रेवायात किया है। (तरजुमानुस्सुन्नह ३७८)

(७) सहीहैन में ज़ुहूरे महदी रज़ि. का तज़केरा :

हज़रत महदी रज़ि. का तज़केरा सहीहैन में भी एशारए वाज़ेहा के साथ मौजुद है, जैसे

हदीस (९) : عن أبى هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "كيف أنتم اذا نزل ابن مريم فيكم وامامكم منكم" تابعهٗ عقيل والأوزاعى (صحيح البخارى ٤٩٠/١)

तरजुमा : उस वक्त तुमहारा क्या हाल हो गा जब इसा बिन मरयम तुमहारे दरमियना उतरें गे हांला कि तुमहारा इमाम तुम ही में से हो गा। (यानी हज़रत महदी रज़ि.) وامامكم منكم के मुतअल्लिक अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी रह. लिखते हैं : : وقال أبو الحسن الخسعى الابدى فى مناقب الشافعى تواترت الأخبارُ بأنَّ المهدى من هذه الأمة وأنَّ عيسى يصلى خلفهٗ، ذكر ذلك ردًّا للحديث الذى أخرجهٗ ابن ماجه عن أنسؓ" وفيه "ولا مهدى الا عيسى" (فتح البارى ٦١١/٦) यानी وإمامكم منكم में इमाम से मुराद हज़रत महदी रज़ि. हैं, जो इसी उम्मत में से हों गे।

(२) अल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी रह. ने भी ''उमदतुल क़ारी शरह बुखारी १६/४०'' पर यही मफहुम मुराद लिया है।

(३) इसी तरह की एक रिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. के तरीक से मुसलिम शरीफ में मज़कुर है, जिस के अलफाज़ इस तरह हैं। "فيقول أميرهم؛ تعالَ صلِّ لنا" इस ज़िमन में शारहे मुसलिम अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी (रह) फरमाते हैं कि أميرهم امام المسلمين المهدى الموعود المسعود यानी अमीरहुम से मुराद हज़रत महदी रज़ि. (فتح المُهلم ٣٠٣٨)

ही हैं जो मुसलमानों के इमाम हों गे।

(४) नीज़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन खलफतुल वशताती अलमालकी रह. ने मुसलिम शरीफ की शरह इकमालु इकमालिल मोअल्लिम में और अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन युसूफ अस् सनोसी अलहसनी रह. ने अपनी शरह मुकम्मिल इकमालिल इकमाल में इसी की ताइद की है। (२६८/१)

(५) नीज मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक की एक मक़्तुअ रेवायत से भी इस बात की ताइद होती है कि وامامكم منكم से मुराद हज़रत महदी रज़ि. ही हैं।

اخبرنا عبدالرزاق، عن معمرٍ قال : كان ابنُ سير بن يرىٰ انّهٗ المهدى الذى يصلى وراءه عيسىٰ (مصنف عبدالرزاق ١١/٣٩٩) यानी इब्न सीरीन (रह.) का खयाल ये था कि वोह हज़रत महदी रज़ि. ही हैं जिन के पीछे हज़रत इसा अलैहिस्सलाम नमाज़ पढें गे।

(६) मुल्ला अली कारी रह. फरमाते हैं।

وامامُكم منكم أي مِن اهلِ دينكم، وقيل من قريش وهو المهدى (مراة المفاتيح ١٠/٢٣٢) यानी منكم से मुराद या तो वहदते दीन है, वा मुराद यह है कि वुह कुरैशी हों गे और मुराद हज़रत महदी रज़ि. हैं।

(७) अल्लामा अनवर शाह कशरमीरी रह. इस हदीस की शरह में फरमाते हैं।

والمتبادر منهٗ (من لفظ وامامكم) الامام المهدى (فيض البارى ٤/٤٥) यानी "وامامكم" से मुराद यही है कि यहाँ मुराद हरत महदी रज़ि. ही हैं, अगले लिखते हैं। وقد اختلط فيه الرواة عند مسلم، فأطلقه على عيسىٰ عليه الصلوٰة والسلام فجعل اللفظ "وأمّكم منكم" يعنى أنه وان كان من بنى اسرائيل لكنه يكون تابعاً لشرعكم والراجع عندى لفظ البخارى أى "وامامكم منكم" بالجملة الاسمية، والمراد منه الامام المهدى لما عند ابن ماجه" (ايضاً ٤/٤٥) यानी : मुस्लिम के बाज़ रावियों से फर व गुजाशत हुवी है, उन्हों ने इस मुकाम पर ईसा अलैहिस्सलाम को मुराद लिया है, और मतन मे शब्द "وامكم منكم" ज़िक्र कर दिया, तो इस सुरत में मुराद यह हो

गी कि गरचे बनी इस्राईल से तअल्लुक रखते हैं (तुम्हारी क़ौम से नहीं) ताहम वह तुम्हारी शरीअत ही के पैरोकार हों गे, मेरे नज़दीक तो (इन तावीलात के बजाए) बुखारी का शब्द "وامامكم منكم" जुमलए इस्मीया के साथ ही राजेह है, और मुराद हज़रत महदी रज़ि. ही हैं, चुंके इब्ने माजा की रेवायात इसी पर दलालत करती है।

हदीस (२) : عن ابى سعيد رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : من خلفائكم خليفة بحثو المال حثيا ولا يعد عددا (مسلم ٢/٣٩٥) तरजुमा : तुम्हारे खुलफा में से एक खलीफा ऐसा हो गा जो बिला गिने लप भर भर कर दे गा।

हदीस (३) : عن ابى سعيد وجابر رضي الله عنهما قالا قال: رسول الله صلى الله عليه وسلم: "يكون فى آخر الزمان خليفة يقسم المال ولا يعده" (ايضاً) तरजुमा : अखीर ज़माने में एक खलीफा ऐसा हो गा जो बिला गीने माल तक़सीम करे गा।

मौलाना बदरे आलम मिरठी रह. लिखते हैं। ''यह अम्र भी वाज़ेह रहना चाहिए कि सही मुस्लिम की हदीस से यह अम्र साबित है कि आखरी ज़मानें में गैर मामुली बरकात ज़ाहिर हों गी, वह हज़रत ईसा अलैहिसल्लाम से पहले पैदा हों गे, दज्जाल उसी के दौर में ज़ाहिर हो गा, मगर उस का क़त्ल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक से होगा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब आसमान से तशरीफ लाएं गे तो वह खलीफ़ा मोसल्ले पर आचुका हो गा, ज़हतर ईसा अलैहिस्सलाम को देख कर वह मोसल्ले को छोड कर पिछे हटे गा, मगर हज़रत ईसा अलैहिसल्लाम उन से फरमाएं गे ''चुंके आप मोसल्ले पर जा चुके हैं इस लिए अब इमामत भी आप ही का हक है, और यह इस उम्मत की एक बुज़रगी है'' लेहाज़ा यह नमाज़ तो आप उस ही के पीछे अदा करें गे।

यह तमाम सिफात उन हदीसों से साबित हैं जिन में मुहद्दिसीन को

कोई कलाम नहीं, अब गुफतगु है तो सिर्फ इतनी बात में है कि यह खलीफा कया हज़रत महदी रज़ि. हैं या कोई और दुसरा खलीफा, दुसरे नंबर की हदीसों में यह तसरीह मौजुद है कि यह खलीफा हज़रत महदी रज़ि. ही हों गे।

हमारे नज़दीक सही मुस्लिम की हदीसों में उस खलीफा का तज़केरा आचुका है तो फिर दुसरे नंबर की हदीसों में जब वही तफसीलात इस नाम के साथ मज़कुर हैं, तो इन को भी सहीह मुस्लिम ही की हदीसों के हुक्म में समझना चाहिए, इस लिए अब अगर यह कह दिया जाए कि हज़रत महदी रज़ि. का सुबूत खुद सहीह मुस्लिम में मौजुद है तो इस की गुंजाईश है।

मसलन सहीह मुस्लिम में मौजुद है कि ईसा अलैहिसल्लाम जब उतरें गे, तो उस वक्त मुसलमानों का एक अमीर इमामत के लिए मुसल्ले पर आ चकुा हो गा, तो अब जिन हदीसों में इस खलीफा की नाम हज़रत महदी बताया गया है, यकीनन वह इस मुबहम खलीफा का बयान कहा जाए गा, या मस्लन सहीह मुस्लिम में है कि अखीर ज़माने में एक खलीफा हो गा जो बेहेसाब माल तक़सीम करे गा, अब दुसरी हदीसों से साबित होता है कि यह दाद व दहीश हज़रत महदी के ज़माने में हो गी तो सहीह मुस्लिम की इस हदीस का मिस्दाक हज़रत महदी रज़ि. को क़रार देना बिलकुल बजा हो गा।

इसी तरह जंग के वाकेआत सहीह मुस्मिम में इब्हाम के साथ ज़िक्र किए गे हैं, अगर दुसरी हदीसों में वही वाकेआत हज़रत महदी रज़ि. के जमाने में साबित होते हैं तो यह कहना बिलकुल करीन कयास हो गा कि सहीह मुस्लिम में जंग के जो वाकेआत है, गालेबन इन ही वुजुहात की बिना पर मोहद्देसीन ने मुबहम हदीसों को हज़रत महदी रज़ि. ही के हक में समझा है, और इसी बाब में उन को ज़िक्र किया है, जैसा कि इमाम अबु दाऊद रह. ने बारा खुलफा की हदीस को हज़रत महदी रज़ि. के हक़ में समझा है, और इसी बाब में उन को ज़िक्र किया है, जैसा कि इमाम अबु दाऊद रह. ने बारा खुलाफा की हदीस को हज़रत महदी रज़ि. के बाब में ज़िक्र फरमा कर इस

तरफ इशारा किया है कि वह बारवां खलीफ यही हज़रत महदी रज़ि. हैं (तरजुमानुस्सुन्नह ४/३७८-३७९)

हदीस (४) : عن جابر بن عبدالله رضي الله عنه، سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول : "لا تزالُ طائفةٌ من امتى يقاتلون عن الحق ظاهرين الى يوم القيامة، قال : فينزل عيسىٰ بن مريم عليه السلام فيقول أميرهم : تعال صَلِّ لنا، فيقول : لا، انّ بعضكم على بعضٍ أُمراء، تكرمة لهذه الأمة" (مسلم ١/٨٧) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमामया कि मेरी उम्मत की एक जमाअत क़ियामत तक हक़ पर क़ायम रहे गी, सो ईसा बिन मरयम उतरें गे तब उन का अमीर कहे गा कि आप हमें नमाज़ पडाइये, तो ईसा कहें गे कि नहीं, तुम में से बाज़ बाज़ पर अमीर हैं, यह अल्लाह तआला का इस उम्मत के लिए फ़ज़ल है।

इस हदीस में भी मुसलमानों के अमीर से मुराद महदी रज़ि. हैं, जैसे के शैखुल इसलाम अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह. ने ''फतहुल मुलहिम'' में लिखा है कि : قوله "فيقول أميرهم الخ" هو امام المسلمين المهدى الموعود المسعود (فتح الملهم ١/٣٠٣) अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह. की इस इबारत से मालुम हुवा कि इस सियाक़ की वह सारी अहादीस जिन में अमीर या खलीफा का लफज़ मुबहम मज़कुर है उस से मुराद महदी है (अक़ाइदे जुहूर महदी ६३) नीज़ महदी के मुतअल्लिक एक रेवायत मुस्लिम किताबुल फितन २/२८८ रक्म २८८४ पर मौजुद है जिस का ज़िक्र आगे आ रहा है।

नोट : माज़ी और हाल के बाज़ अहले कलम हज़रात ने अकीदए जुहूरे महदी का सिर्फ इस वजह से इन्कार कर दिया है कि ज़रत महदी रज़ि. का तज़केरा सहीहैन में नहीं मिलता, उम्मीद है कि इस वज़ाहत के बाद वह खलजान बाक़ी नहीं रहे गा, कुरआने करीम मे है। فمن جاءهٗ موعظة من ربه فانتهىٰ فله ما سلف (البقرة ٢٧٥)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत महदी रज़ि. दो अलग अलग लोग हैं।

حدثنا يونس بن عبد الأعلىٰ، حدثنا محمد ابن ادريس الشافعي، حدثني محمد بن خالد الجندي، عن أبان بن صالح، عن الحسن، عن أنس بن مالك أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : "لا يزداد الأمر الاشدةً، ولا الدنيا الا ادباراً، ولا الناسُ الاشُحّا، ولا تقوم الساعة الاعلى شرار الناس، ولا المهدي الا عيسى بن مريم" (ابن ماجه ٣٠٢ والمسند الجامع رقم ١٦٠٠)

तरजुमा : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से मरवी है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मामला सखत हो चले गा, दुनया पसपाइ की तरफ लौटे गी, लोग बुख्ल में मुबतेला हो जाएं गे, क़्यामत बदतरीन लोगों पर ही क़ायम हो गी और महदी, इसा बिन मरयम के सिवा कोइ नहीं।

इस हदीस से बज़ाहिर यह साबित होता है कि महदीए मौऊद हज़रत इसा अलैहिस्सलाम ही हैं, इन के इलावा कोई मुस्तकील शखसियत महदी होने की हैसियत से आने वाली नहीं है। चुनांचे इस हदीस के दो हल पेशे खिदमत हैं।

(१) यह रिवायत मुतकल्लम फीह है।

(२) यह रिवायत अपने ज़ाहिर पर नहीं, बलकि इस के तावीली मानी मुराद हैं।

हल्ले अव्वल की वज़ाहत यह है कि हाफ़िज़ ज़हबी रह. मीज़ानुल एतेदाल में मोहम्मद बिन खालिद अलजनदी के तरजुमे के तहत हदीस के बारे में फरमाते हैं।

قلت : لا مهدى الا عيسىٰ بن مريم، هو خبر منكر (٥٣/٣)

لا مهدى الا عيسىٰ ابن مريم खबरे मुनकर है।

और इस की मुखतलिफ वुजुहात में से एक वजह यह है कि इस रिवायत में मोहम्मद बिन खालिद अलजनदी जिन पर इस रिवायत का मदार भी है और उन का तफर्रुद भी है वह बे हद मुतकल्लम फीह है।

इन के बारे में हाफ़िज़ ज़हबी रह. लिखते हैं। قال الأزدى : منكر الحديث، وقال عبدالله الحاكم : مجهول (ايضا) मोहम्मद बिन खालिद अजनदी के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर असकलानी रह. नक्ल करते हैं। قال الابرى : محمد بن خالد غير معروف عند اهل الصناعة من اهل النقل" और आगे लिखते हैं। وقال البيهقى : قال ابو عبدالله الحافظ : محمد بن خالد مجهول "تهذيب التهذيب ٩/١٤٤)

हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयुती रह. ने इब्ने माजा की इस रिवायत के ज़ैल में अपने हाशिये (मिसबाहुज़्ज़ुजाजह) में बडी मुफस्सल बहस की है, चुनांचे इस मौक़े पर उस का मुखतसर खुलासा ज़िक्र करना मुनासिब मालुम होता है।

अल्लामा रह. ने अपनी मखसुस तहक़ीक़ी निगाह और तदक़ीक़ी फिरासत के साथ मज़कुरा हदीस पर, नीज़ हदीस के दो मुखतलफ फी रावियों (युनूस बिन अब्दुल आला रह. और मोहम्मद बिन खालिद अलजनदी रह.) पर वारिद बेशतर मोहद्देसीन के रद्द व कुबूल और जरह व तअदील का मुआज़ना किया है, नीज़ इस सिलसिले में अबुल हसन अली बिन मोहम्मद अब्दुल्लाह अलवासती रह. के एक खवाब का भी तज़केरा किया जिस में उन्हों ने ईमामे शाफइ रह. को देखा था, वह कह रहे थे कि युनूस बिन अब्दुल आला ने उन की तरफ इस हदीस में झूट मनसुब किया, और उस का वह जवाब भी नक़ल किया जो इब्ने कसीर रह. ने ज़िक्र किया (मिसबाहुज़्ज़ुजाजह अला हामीश इब्ने माजा ३००)

साहबे नबरास भी फरमाते हैं (نبراس لأن الحديث لا يصلح ٣١٥) यानी यह हदीस सहीह नहीं है।

मिनहाजुस्सुन्नाह में हैं : فأما حديث لا مهدى الا عيسىٰ بن مريم فضعيف، فلا يعارض هذه الأحاديث ص٥٦٢ यानी हदीस ला महदी इल्ला ईसा बने मरयम ज़ईफ है, इस लिए यह दुसरी रिवायत से मुआरज़ा नही कर सक्ती।

अल्लामा सगानी रह. तो इस रिवायत को मौज़ुअ लिखते हैं। الفوائد المجموعة فى الأحاديث الموضوعة المعروف بالأحاديث الضعيفة للشوكانى ١٩٥، خاتمة فى ذكر احاديث متفرقة رقم ١٢٧، و كذا عنه فى تذكرة الموضوعات : باب آخر الزمان وفتنه ٢٢٣)

और हल्ले सानी की वज़ाहत यह है कि साहबे मिसबाहुज़ ज़ुजाजह इस हदीस की तालीक़ में लिखते हैं। وهذا الحديث فيما يظهر ببادى الرأى مخالف للأحاديث الواردة فى اثبات مهدى غير عيسى بن مريم، وعند التأمل لا ينافيها، بل يكون المراد من ذلك أن المهدى حق الهدى هو عيسىٰ بن مريم عليه السلام، ولا ينافى ذلك أنيكون غيره مهديا ايضاً (مصباح الزجاجة على هامش ابن ماجه ٣٠٠)

यानी ज़ाहरी तौर पर देखा जाए तो यह हदीस उन अहादीस के मुखालिफ है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अलावा किसी और महदी के सुबूत में वारिद हुइ हैं, लेकिन गौर व खौज़ किया जाए तो दोनों जहत की रिवायतों में कोइ तआरुज़ नहीं, बलके मज़कुरा रिवायत का मानी यह हो गा कि महदी लकब के कामील तरीन मिसदाक हज़रत इसा अलैहिस्सलाम हैं, और हज़रत ईसा अलैहिसल्लाम का महदी होना किसी और महदी होने के मुनाफी नहीं है। (तफसील के लिए दिए गए हवाले पर देख लिया जाए)

मालुम हुवा कि यह रेवायत काबिले हुज्जत नहीं बन सक्ती, नीज़ दिरायत के एतेबार से उस का मज़मुन महल्ले नज़र है, चुंके हमारे सामने बहुत

सारी रिवायतें ऐसी हैं जिन में सराहतन हज़रत इसा अलैहिसल्लाम और हज़रत महदी रज़ि. के अलग अलग होने का तज़केरा है, वह रिवायतें हसबे ज़ैल हैं।

(١) لـن تهـلـك أمةٌ أنـا فى أوّلها وعيسى بن مريم فى آخرها والمهدى فى أوسـطهـا (ابـو نعيم فى أخبار المهدى عن ابن عباس كنز العمال ١٤/٢، رقـم ٣٨٧١) तरजुमा : वह उम्मत हरगिज़ हलाक नहीं हो सकती जिस की इब्तेदा में मैं हुँ, जिस के आखरी में ईसा इब्ने मरयम अलैहिसल्लाम हैं और जिस के दरमियन (बीच के दौर) में महदी हैं।

(٢) مِنّا الَّذِيْ يصلى عيسى بن مريم خلْفَهٗ" أبو نعيم فى أخبار المهدى عن أبـى سـعيد (كنز العمال ١٤/٣، رقم ٣٨٧٣) तरजुमा : वह आदमी हम में से हो गा जिस के पीछे इसा इब्ने मरयम (अलैहिस्सलाम) नमाज़ पढें गे।

(٣) عـن عبـدالـلـه بـن عمر رضي الله عنه قال : "المهدى الذى ينزل عليه عيسىٰ ابن مريم ويصلى خلفه عيسىٰ" (اخرجه نعيم بن حماد ص ٢٤ رقم كـذا فـى الحـاوى ٢/٧٨) तरजुमा : हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि. से मरवी है, वह फरमाते हैं कि हज़रत ईसा बिन मरयम हज़रत महदी रज़ि. के बाद नाज़िल हों गे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन के पीछे (एक) नमाज़ अदा करें गे।

(٤) لا تزال طائفة من أمتى تقاتل عن الحق حتى ينزل عيسىٰ بن مريم عند طـلـوع الـفجر بيت المقدس، ينزل على المهدى فيقال له تقدم يا نبى الله فصلِّ لنا، فيقول : انّ هذه الأمة أمين بعضهم على بعض لكرامتهم على الله عزّوجـل" (أخرجه ابو عمر الدانى فى سننه عن جابر بن عبدالله رضي الله عـنـه ص ٢٤٠ رقـم ٨ والـحـاوى ٢/٨٣) तरजुमा : मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा हक़ के लिए मोकाबला आराइ करती रहे गी, यहाँ तक कि ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम हज़रत महदी रज़ि. की मौजुदगी में तुलुए फजर के वक्त बैतुल मोक़द्दस (येरोशलम) में उतरें गे, उन से दरखास्त की

जाए गी कि आप हमें नमाज़ पढाइये, वह फरमाएं गे यह उम्मत बाहम एक दुसरे के लिए अमीर है, मुस्लिम शरीफ की रिवायत में भी तकरीबन यही अलफ़ाज़ हैं।

(٥) يلتفتُ المهدى وقد نزل عيسىٰ ابن مريم كأنما يَقْطر من شعره الماء، فيقول المهدى : تقدم صلّ بالناس، فيقول عيسىٰ : انّما أُقيمت الصلوٰة لك، فيصلّى خلْفَ رجلٍ من وُلدى" (أخرجه ابو عمر والدانى فى سننه عن حذيفةؓ فى بيان حديث طويل فى باب مارُوى فى الوقيعة اللتى تكون بالزوراء الخ ص٢٠٢، ٢٠٩ رقم ٥٩٦) तरजुमा : हज़रत महदी रज़ि. ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ मुतवज्जह हो कर कहें गे कि आप लोगों को नमाज पढा दी जिए, उस वक्त ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतर चुके हों गे और इस हाल में हों गे कि उन के बालों से पानी टपक रहा हो गा, तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहें गे कि आप ही के लिए इक़ामत कही गइ है (यानी आप ही नमाज पढाएं) चुनांचे वह मेरी औलाद में से एक शख्स की इकतेदा में (यह) नमाज़ अदा करें गे।

(٦) عن جابر رضي الله عنه، قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ينزل عيسىٰ بن مريم فيقول اميرهم المهدى، تعال صلِّ بنا، فيقول : وإنّ بعضكم على بعض أُمراء، تكرمة الله لهذه الأمة (أخرجه السيوطى فى الحاوى ٢/٦٤ عن أبى نعيم) तरजुमा : हज़रत जाबिर रज़ि. से मरवी है वह फरमाते हैं कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि : ईसा इब्ने मरयम (आस्मान से) उतरें गे, तब मुसलमानों के अमीर हजरत महदी रजि. से कहें गे आप हमें नमाज पढा दी जिए, वह फरमाएं गे कि तुम में से बाज बाज़ के अमीर हैं, और यह अल्लाह तआला का इस उम्मत से साथ एजाज है।

(٧) عن ابن سيرين رحمه الله قال : المهدى من هذه الأُمّة، وهو الذى يؤمّ عيسىٰ بن مريم عليهما السلام (اخرجه ابن ابى شيبة ١٥/١٩٨ رقم ١٩٤٥٩ وكذا فى الحاوى ٢/٦٥) तरजुमा : हज़रत इब्ने सीरीन रह.

फरमाते हैं कि महदी इस उम्मत के आदमी हैं और वही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इमामत फरमाएं गे।

(٨) عن أبى أمامة قال : خطبنا رسولُ الله صلى الله عليه وسلم وذكر الدّجّال، وقال : "فتَنفى المدينةُ الخَبَثَ منها كما ينفى الكيرُ خبثَ الحديدِ، ويُدعىٰ ذٰلك اليومُ يوم الخلاصِ فقالت أُمُّ شريكٍ : فأين العربُ يا رسول الله يومئذٍ؟ قال : هم يومئذ قليلٌ، وجُلُّهم بيتُ المقدس، وإمامهُم المهدى رجلٌ صالحٌ، فبينما امامهم قد تقَدَّمَ يُصلّى بهم الصبح إذْ نزل عليهم عيسى بن مريم الصُبح، فرجع ذلك الإمامُ ينكص يمشى القهقرىٰ ليتقدَّم عيسىٰ، فيضعُ عيسىٰ يده بين كَتِفيه، ثُمَّ يقول له تقدم : فإنَّها لك أُقيمتْ، فيصلّى بهم إمامهم" (اخرجه ابن ماجه رقم الحديث ٤٠٧٧ والروبانى وابن خزيمة وأبو عوانة والحاكم وأبو نعيم واللفظ له كذا فى الحاوى ٦٥/٢) तर्जमा : हज़रत अबु उमाम रज़ि. से मरवी है वह फरमाते हैं कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें खुतबा दिया और (उस खुतबे में) दज्जाल का ज़िक्र किया और फरमाया कि (उस वक्त) मदीन मुनव्वरा अपनी गनदगी को ऐसे ही निकाल बाहर कर दे गा जैसे भट्टी लोहे की गंदगी को दुर कर देती है। और वह दिन "يوم الخلاص" (छुटकारे का दिन) कहलाए गा। उम्मे शरीक ने पुछा कि ऐ अल्लाह के रसुल उस दिन अरब कहाँ हों गे? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह उस वक्त कम हों गे, और वह बैतुल मुकद्दस में हों गे, और उन का इमाम महदी नामी एक नेक शख्स हो गा, उन का इमाम उन्हें फजर की नमा पढाने आगे बढे गा उस दरमियन उन के बीच हज़रत इसा इब्ने मरहि अलैहिस्सलाम उतरें गे। यह इमाम सरे तसलीम खम कर के उलटे पांव पीछे हटें गे ता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आगे बढ कर इमामत फरमाएं। तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन के कांधों पर हाथ रख कर कहें गे कि इकामत आप ही के लिए कही गइ है। तब मुसलमानों के इमाम (हज़रत महदी रज़ि.) नमाज़ पढाएं गे।

खुलासा : इन तमाम रिवायात की रौशनी में यह बात यक़ीनी तौर पर मालुम हो जाती है कि हज़रत ईसा अलैहस्सिलाम और हज़रत महदी रज़ि. दो अलग अलग लोग (शखसियतें) हैं।

नीज़ सहीहैन की अहादीस में हज़रत ईसा के नुज़ुल के वक्त मुसलमानों के एक इमाम या अमीर की मौजुदगी का तज़केरा जा बजा मौजुद है, और जहाँ दुसरी रिवायात में हज़रत महदी रज़ि. की सराहत मौजुद है वहाँ इस बात पर कोइ एक ज़ईफ रिवायत भी नहीं मिलती कि इस इमाम या अमीर से मुराद हज़रत महदी रज़ि. नहीं। चुनांचे यह बात वाज़ेह हो गइ कि हज़रत ईसा अलैस्सिलाम और हज़रत महदी रज़ि. दो अलग अलग शखसियतें है, यह एक शखसियत के दो नाम नहीं हैं।

इस के बावजुद इब्ने माजा की रिवायत (لا مهدی الا عیسیٰ) को किसी दरजे में तसलीम कर लिया जाए तो भी उस की तशरीह यह है। देखिए

(१) हज़रत ईसा अलहिस्सलाम को महदी कहने मा मतलब "اعظم "المهدی चुंकि लुगत के हिसाब से हर हिदायत पाए हुए आदमी को या हिदायत की तरफ रहनुमाइ करने वाले को महदी कह सकते हैं। चुनांचे इमाम सुयुती रह. ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि. का असर नक्ल किया है "المهدی" का लकब ऐसा ही है जैसे किसी आदमी को ''नेक आदमी'' कह दें। (इस तरीके सा शब्द महदी बहुत सारे लोगों के लिए इस्तेमाल हो सकता है) عن ابن عمرؓ انه قال لابن الحنفية : المهدیُ الذی یقولون کما یقول : الرجل الصالح اذا کان الرجل الصالحا قیل له المهدی (الحاوی للفتاویٰ للامام السیوطی ۷۸/۲، و کذا معناه فی الفتن لنعیم بن حمار ۲٦۳ رقم ۱۰۳۷) यानी महदी के शब्द का इस्तेमाल इसी तरह है जिस तरह किसी आदमी को नेक आदमी कह दिया जाता है।

ज़ाहिर है कि इस लुगत के मानी के हिसाब से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सेआज तक ऐसे बहुत सारे लोग पाए जाते रहे हैं जिन पर

महदी का शब्द बोला जा सकता है। चुनांचे खुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हज़राते खुलफाए राशिदीन के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया है। और इसी बात की तरफ इशारा करते हुए इब्नुल क़य्यिम रह. लिखते हैं। لأن عيسىٰ أعظم مهديي بين يدىّ رسول الله صلى الله عليه وسلم وبين الساعة الى أن قال : فيصحُّ أن يقال : لا مهدى فى الحقيقة سواه، وإن كان غيره مهديًا (المنار المنيف ١٤٨) कि हज़रत इसा अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माने से कयामत तक के अरसे में सब से अज़ीमुल मरतबत महदी हैं, चुनांचे महदी की हक़ीक़ी शखसियत कोइ और ही सही, फिर भी यह कहना बजा हो गा कि दर हकीक़त ईसा अलैहिस्सलाम के सिवा कोइ महदी नहीं।

इसी तरह जैसे ''अल-हज्जुल अलअरफा'' कहा जाता है, इस से मुराद यह नहीं कि सिर्फ अरफा में ठहरने ही को हज कहते हैं बलकि वह हज के सिलसिले की एक अहम कडी है, या जिस तरह शब्द दज्ज़ाल लुग़वी माना के इतेबार से बहुत से दज्ज़ाल सिफत लोगों पर बोला जा सक्ता है, अलबत्ता इस का हकीकी और कामिल इतलाक़ उस दज्ज़ाले अकबर पर होता है जो हज़रत महदी रज़ि.और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में ज़ाहिर हो गा।

(२) एक तौजीह यह भी की जा सकती है कि ऐसा महदी जो कामिल गुनाहों से मासुम हो वह हज़रत ईसा हैं। इब्नुल कय्यिम रह. लिखते हैं وكما يصح أن يقال : انّما المهدى عيسىٰ بن مريم، يعنى المهدى الكامل المعصوم (وكذا قال القرطبى فى التذكرة ٧٠١، وفى الحاوى عن القرطبى ٨٦/٢) **यानी ईसा इब्ने मरयम को कामिल तरीन और मासुम मानते** हुए महदी कहना बिलकुल सहीह है।

चुनांचे शेख बरज़ंजी रह. भी यही फरमते हैं कि لا مهدى معصوماً مطلقاً الا عيسىٰ عليه السلام (الاشاعة ١٤٣) यानी वह महदी जो मासुमे मुतलक हो वह ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम ही हैं।

(३) इमाम सुयुती रह. ने वलीद बिन मुस्लिम रह. से एक असर नक्ल किया है जिस से इस की पुरी वज़ाहत हो जाती है। : عن الوليد بن مسلمؒ قال : سمعتُ رجلاً يحدث قوماً، فقال : المهديون ثلاثة (١) مهدى الخير عمر بن عبدالعزيز (٢) ومهدى الدّم هو الذى تسكن عليه الدماء (٣) ومهدىٌ الدين عيسىٰ بن مريم تُسلم اُمته فى زمانه ۰ وأخرج ايضاً عن كعبؓ قال : مهدى الخير (المهدى المنتظر محمد بن عبدالله) يخرج بعد السفيانى (العرف الوردى فى أخبار المهدى ٢٥، والحاوى ٧٨/٢ والفتن لنعيم بن حماد ٢٥٣ رقم ٩٨٨) तरजुमा : वलीद बिन मुस्लिम रह. फरमाते हैं कि मैं ने एक शख्स से सुना जो कुछ लोगों को हदीस का दर्स दे रहा था, वह कह रहा था कि महदी तीन हैं, एक महदीए खैर और वह उमर बिन अबदुल अज़ीज़ रह. हैं, दुसरे महदीए दम यह वह हैं जिन के हाथ पर (यानी उन के ज़माने में उन की वजह से) खुन खराबा ठहर जाए गा, और तीसरे महदीए दीन यानी इसा इब्ने मरयम जिन पर उन की सारी उम्मत उस ज़ामने में इमान ले आए गी। और हज़रत कअब रज़ि. से भी यह रिवायत ज़िक्र की है कि महदीए खैर (महदीए मुनतज़र मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह) सुफयानी के बाद ज़ाहिर हों गे।

(४) एक तावील यह है कि यहाँ इबारत मुकद्दर है, चुनांचे तकदीर इबारत युँ हो गी "لا قول للمهدى الّا بمشورة عيسىٰ عليه السلام" यानी हज़रत महदी रज़ि. अपनी हर बात में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मशवेरा लें गे। (अलइशाआ १४३)

उपर दिए गए जवाबात को उन तमाम रिवायतों की तावील में पेश किया जा सकता है जिन के मज़मुन से हज़रत ईसा और हज़रत महदी दोनों के एक ही शखसियत होने का मुगालता हातो है, चुनांचे मुसनदे बज़्ज़ार की एक रिवायत जो हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. से मरवी है उस से भी यही मानी निकलता है।

عن ابی هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: يوشِكُ مَنْ عاشَ منكم ان يخرج المهدیُ عيسیٰ بن مريم اماماً مهدياً وحكماً عدلاً الخ (عارضة الأحوذ لابن العربی ٧٧/٩) यानी तुम में से जो ज़िंदा रहे गा वह यह देखे गा कि महदी यानी इसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम हिदायत याफता इमाम और मुनसिफ हाकिम बन कर ज़ाहिर हों गे।

खुलासा यह हुवा कि हज़रत इसा अलैहिस्सलाम और हज़त महदी दो अलग अलग लोग (शखसियत) हैं, लिहाज़ा जो लोग राहे हक़ से हट कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत महदी रज़ि. दोनों को एक ही मांते हैं और नतीजे में हज़रत महदी रज़ि. का इन्कार करते हैं वह गुमराही की राह पर हैं। खास तौर से कादयानी हज़रात जिन्हों ने तो पहले हज़रत इसा अलैहिस्सलाम और हज़रत महदी रज़ि. दोनों को एक ही आदमी माना और फिर मिरज़ा गुलाम अहमद कादयानी को इस शखसियत का मिसदा क कहा, वह लोग यकीनन राहे हक़ से बहुत दुर गुमराही की तारीक वादियों में सरगरदाँ हैं। बल कि यह लोग आयते करीमा (ظلمات بعضها فوق بعض، إذا اخرج يده لم يكد يراها ....الخ) के मिसदाक़ हैं।

सहीह बात तो यह है कि हज़रत महदी मुनतज़र मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह और ईसा अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक जिस कद्र अलामात अहादीस में आइ हैं उन में से कोई भी अलामत किसी तरह भी मिरज़ा कादयानी में हरगिज़ हरगिज़ नहीं पाइ जाती।

अक़ीदए ज़ुहूर महदी

(१) ज़ुहूरे महदी का अक़ीदा हर मुसलमान के लिए लाज़िम और वाजिब है। शरह अक़ीदतुस्सफारीनी में भी लिखा है। فالايمان بخروج المهدی واجبٌ، كما هو مقرر عند أهل العلم، ومدونٌ فی عقائد أهل السنة والجماعة (شرح عقيدة السفارينی ٨٠/٢) यानी हज़त महदी रज़ि.

के जुहूर पर इमान लाना वाजिब है, चुनांचे अहले इल्म हज़रात के यहाँ भी साबित है, और अहले सुन्नत वलजमाअत के अक़ाइद की किताबों में भी लिखा हुवा है।

नीज़ अल्लामा मोहम्मद बिन सुलेमान अलकलबी रह. भी लिखते हैं। واعلم انّه يجب الايمانُ بنزول عيسىٰ عليه السلام و كذا بخروج المهدى" (نخبة اللالى لشرح بدء الأمالى ٧١) तरजुमा : तो जान ले कि ईसा अलैहिस्सलाम के नुजुल और इसी तरह महदी रज़ि. के खुरुज पर इमान लाना वाजिब है।

हज़रत शाह वलियुल्लाह साहब मोहद्दिस दहलवी रह. फरमाते हैं : ''हज़रत महदी का कयामत के करीब में ज़ाहिर होना यकीनी अम्र है और हज़रत महदी रज़ि. और उन के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र में हाकिम बरहक हों गे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन के खलीफा होने की पेशीन गोइ फरमादी है।''

हज़रत शाह वलीयुल्लाह रह. फरमाते हैं : हज़रत महदी रज़ि. की खिलाफत का वक्त आए गा तो आप की इत्तेबा उन उमुर में वाजिब हो गी जो खलीफा से मुतअल्लिक हैं। (इज़ालतुल खिफा २६/१)

(२) जुहूरे महदी का अक़ीदा अहले सुन्नत वल जमाअत के मुसल्लमा अक़ादएद में से है। चुनांचे मौलाना बद्रे आलम साहब मीरठी रह. ने तरजुमानुस्सुन्नह में नक्ल किया है। ''शारेहे अक़ीदा सफारीनी'' ने हज़रत महदी रज़ि. की तशरीफ आवरी के मुतअल्लिक तवातुर का दावा किय है। और इन का अहले सुन्नत अल जमाअत के अक़ाएद में शुमार किया है। वह लिखते हैं। ''हज़रत महदी के खुरुज कि रिवायतें इतनी कसरत के साथ मौजुद हैं कि उस को मानवी तवातुर के साथ कहा जा सकता है और यह बात उलमाए अहले सुन्नत के दरमियान इस दरजा मशहुर है कि अहले सुन्नत के अक़ाएद में एक अक़ीदा की हैसियत से शुमार की गइ है। अबु नुऐम, अबु दाऊद,

तिरमिज़ी, नसाइ वगैरा ने सहाबा रज़ि. और ताबई रह. से इस बाब में बहुत सारी रिवायतें बयान की हैं, जिन के मजमुए से हज़रत महदी रज़ि. की आमद का कतई यकीन हासिल हो जाता है, लिहाज़ा हज़रत महदी रज़ि. की तशरीफ आवरी पर हस्बे बयाने उलमा और हस्बे अक़ाएदे अहले सुन्नत वल जामअत यक़ीन करना ज़रुरी है।'' (शरहे अक़ीदतु स्सफारिनी बहवाला तरजुमानुस्सुन्नह ३७७)

(३) अहादीस के ज़रीए आप के ज़ुहूर का कतई यकीन हासिल हो जाता है।

(४) मुफती निज़ामुद्दीन शामज़ई रह. फरमाते हैं कि ''इल्मे हदीस से तअल्लुक रखने वाले जांनते हैं कि मोहद्दिसीन अपनी कि़ताबों में जो अबवाब काएम करते हैं वह उन की नज़र में हदीस से साबित होते हैं। खास तौर से उस सुरत में जब बाब में हदीस नक्ल करने के बाद वह उस पर सुकुत करते हैं। इस क़ाएदे के मुताबिक अब यह बात बिला खौफ व खतर कही जा सकती है कि जिन मुहद्दिसीन ने ज़ुहूर महदी की अहादीस को अपनी किताबों में नक्ल किया है (जिन का तज़केरा ज़ुहूरे महदी की अहादीस में गुज़र चुका है) और उन अहादीस पर अबवाब भी काएम किए हैं तो यह उन का अक़ीदा था कि हज़रत महदी रज़ि. का ज़ुहूर हो गा। और वह कयामत की निशानियों में से एक निशानी हों गे।'' (अकीदए ज़ुहूर महदी ७३)

(५) हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक दौर से ले कर आज तक हर दौर में सल्फ व खल्फ ने और मुफस्सिरीन, मुतकल्लिमीन और जमहुर उलमाए उम्मत ने पुरे एहतेमाम के साथ अपनी तसानीफ और अपने अकवाल में ज़ुहूरे महदी रज़ि. को बहुत ही अहमियत से बयान किया है।

चुनांचे इस सिलसिले में अब. रहमान मुबारकपुरी रह. लिखते है।
اعلم أنّ المشهور بين الكافة من أهل الاسلام على ممرّ الأعصار أنّه لا بُدّ في آخر الزمان من ظهور رجل من أهل البيت... الى أن قال : ويسمّى

بـالـمهـدى (تحفة الأحوذى ٤٠١/٦، باب ماجاء فى المهدى) यानी हर ज़माने में तमाम अहले इस्लाम के नज़दीक यह बात मशहुर रही है कि अहले बैत में से अखीर ज़माने में एक शख्स ज़ाहिर हो गा और उस का नाम महदी हो गा।

खुलासा यह हुवा कि उम्मते मुसलेमा का सवादे आज़म तवातुर के साथ आप रह. की तशरीफ आवरी और आप के ज़ुहूर को मान रहा है।

(६) उलमाए अक़ाएद ने ज़ुहूरे महदी को हक कहा है।

चुनांचे हज़रत मुफती किफायतुल्लाह साहब फरमाते हैं कि क़यामत से पहले दज्जाल का निकलना, हज़रत मसीह और हज़रत महदी का तशरीफ लाना, और जिन चीज़ों की खबर सहीह और काबिले इस्तेदलाल अहादीस से साबित हुइ है उन का वाक़े होना हक़ है। (जवाहिरुल इमान ८)

हज़रत मौलाना मोहम्मद इद्रीस कांधलवी रह. अक़ाएदे इसलाम में लिखते हैं कि : अहले सुन्नत वल जमाअत के अक़ाएद में से है कि हज़रत महदी का ज़ुहूर अखीर ज़माने में हक और सिद्क है। और इस पर एतेकाद रखना ज़रुरी है, इस लिए कि हज़रत महदी रज़ि. का ज़ुहूर अहादीसे मुतवातिर और इजमाए उम्मत से साबित है, अगर चि इस की बाज़ तफसीलात अखबारे आहाद से साबित हों। अहदे सहाबा और ताबइन रह. से ले कर इस वक्त तक हज़रत महदी रज़ि. के ज़ुहूर को मशरिक और मगरिब में हर तबके के मुसलमान उलमा और सुलहा आवाम और खवास हर ज़माने में नक़्ल करते चले आए हैं। (अक़ाएदे इस्लाम ६४/१)

ज़ुहूर महदी के मुनकिर का हुक्म

हज़रत महदी रज़ि. का ज़ुहूर तमाम अहले सुन्नत वल जमाअत का मुशतरका अक़ीदा है इस लिए इन का इनकार नहीं किया जा सक्ता, चुनांचे

जो शख्स इस का इनकार करे उस के मुतअल्लिक फकीहुल उम्मत हज़रत मुफती महमुद हसन गंगोही रह. लिखते हैं।

सवाल :क्या हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर का अक़ीदा अज़रुए कुरआन व हदीस ज़रुरियाते दीन में से है? अगर कोइ हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर का क़ाएल ना हो तो उस के मुतअल्लिक शरीअत में क्या हुक्म है?

जवाब : हामिदां व्वमुसल्लियां व्वमुसल्लिमा , खलीफतुल्लाह हज़रत महदी के मुतअल्लिक अबु दाऊद में तफसील मज़कुर है, उन की अलामात, इन के हाथ पर बैअत, उन के कारनामे ज़िकर किए हैं, जो शख्स इन (इमाम महदी) के जुहूर का क़ाएल नहीं वह उन अहादीस का क़ाएल नहीं। इस की इस्लाह की जाए ता कि वह सिराते मुस्तकीम पर आजाए। (फतावा महमुदिया १/१११)

चुनांचे इस सिलसिले में हज़रत मौलाना अबु मोहम्मद अब. हक़ हक्कानी रह. लिखते हैं : अहले सुन्नत के अक़ाएद में से यह तो है कि अखीर ज़माने में हज़रत महदी रज़ि. ज़ाहिर हो कर कुफ्फार को मगलुब और इसलाम की क़वी करें गे। बाक़ी तफ़सील जो मज़कुर हुइ खबरे आहाद से साबित की गइ है, वह भी कहीं चंद अहादीस के टुकडों को मिला कर करीने से एक बात निकाली गइ है। इन बातों पर यकीन न करने से इसलाम से खारिज नहीं होता, यह और बात है अगर इस बारे में जो जो खबरें मुखबिरे सादिक सल्लल्लाहु अलैहि वहल्लम ने दी हैं, गो वह हम तक किसी ज़रीए से पहुंची और उन के समझने में भी हम से गलती हुइ, मगर सब बरहक़ है, ज़रूर हो कर रहें गी। यही बात दीगर अलामाते कयामत में मलहुज़ रहे। (अक़ाएदे इसलाम, बाब २, फस्ल २, सफहा १८५)

हज़राते सहाबा का फिक्र और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ से अजीब बशारत

عن ابی سعید الخدری رضي الله عنه قالَ : خَشِينَا أَنْ يكونَ بَعدَ نَبِيِّنَا حدثٌ، فَسئلنَا نبيّنا صلى الله عليه وسلم فقالَ : اِنَّ في اُمّتى المهدىّ يخرج يعيش خمساً أو سبعاً أو تسعاً. (زيدٌ الشاكّ) قال : وما ذاك؟ قال : سنين، قال : فيجئُ اليه الرجل فيقولُ : يا مهدى أعطنى أعطنى قال : فيُحثى له فى ثوبه ما استطاعَ أنْ يحمِله" هذا حديثٌ صحيحٌ (ترمذی باب ما جاء فی المهدی ج٢ ص٤٧)

तरजुमा : हज़रत अबु सईद खुदरी रजि. फरमाते हैं कि हम को डर हुवा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हादसात पेश आएं गे, हम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में सवाल किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मेरी उम्मत में महदी ज़ाहिर हों गे जो पांच या सात या नौ सा तक ज़िंदा रहें गे (हदीस के एक रावी ज़ैद से अदद में शक वाके हुवा है) ज़ैद रज़ि. फरमाते हैं कि हम ने पुछा यह तअदाद किस चीज़ की है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि सालों की, आप ने फरमाया कि इन के पास एक शख्स आ कर कहे गा कि महदी ! मुझे दी जिए, मुझे दी जिए, मुझे दी जिए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया फि वह उसे उस के कपडे में (इतने दीनार और दिरहम) लप भर दें गे कि वह उठा भी न सके गा।

मशहुर मुहद्दिस व फ़क़ीह हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह. इस हदीस शरीफ की रौशनी में फरमाते हैं कि : जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़राते सहाबा के सामने अव्वल तीन ज़मानों के खैर होने की बशारत दी तो हज़राते सहाबा समझ गए कि फितने और हादसात इस के बाद सामने आएं गे, और खैरुल कुरून के बाद ऐसा ज़माना आए गा कि हर आने

वाला दिन उम्मत के लिए गुज़रे हुए दिन से बदतर साबित हो गा।

इस बात से हज़राते सहाबा को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महबुब उम्मत के मुसतकबिल की फिकर लाहिक हुइ की उम्मत दुनया दारी में मशगुल हो और अचानक मौत आजाए तो इन का क्या हाल हो गा? नीज इस फसाद और गुमराही के दौर में उम्मते मुसलेमा को गफलत की नींद से कौन बेदार करे गा? हज़राते सहाबा की उस फिक्र को दुर करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुहूरे महदी रजि. की शुखशब्री दी ता कि उन को इतमेनान हो जाए कि इस खतरनाक ज़माने में भी हादियों का जुहूर हो गा, और हादियों का जुहूर इस बात की वाज़ेह दलील है कि उस दौरे पुर फितन में भी खैर का माद्दा मौजुद हो गा, और दीनी तालीम और सुन्नत की इशाअत का सिलसिला जारी रहे गा। (अलकवाकिबु द्दरी मआ हामिश २/५७)

नीज़ हज़रत महदी के रुए ज़मीन पर क्याम के मुतअल्लिक हदीस में वारिद इन तीनों आदाद पांच सात और नौ के दरमियान ततबीक की शकल के मुतअल्लिक आगे लिखते हैं। فيعيشُ خمساً أو سبعاً الخ، والتوفيق بين هذه الروايات أنَّ تجهيزه الجيش فى خمس سنين، ثُمَّ محاربته مع الكفار سنتان، ثُمّ يعيشُ بعد ذلك سنتين، فتلك تسعةٌ بأسْرِها، وعلى هذا فالترديد فى هذه الروايات ليس بشكٍّ من الراوى، بل هو تنويعٌ فى الرواية" (ایضاً) यानी पहले पांच साल लशकर की तय्यारी को लगें गे, फिर दो साल कुफ्फार से जंग हो गी और फिर आखरी दो साल आप ज़िंदा रह कर हुकूमत करें गे इस तरह हदीस के अलफाज़ में चंदाँ तआरुज़ नहीं रहता।

हज़रत महदी का दीनी, दुनयवी और उखरवी मकाम

(१) हदीस शरीफ में इरशाद है : لن تهلك أُمّةٌ أنا فى أولها، وعيسىٰ بن مريم فى آخرها، والمهدى فى أوسطها، أبو نُعيم فى أخبار

वह क़ौम المهدی عن ابن عباس (كنز العمال ٢٦٦/١٤ رقم ٣٨٦٧١) कैसे हलाक हो सकती है जिस की इबतेदा में मैं हुँ (याना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जिस के दरमियान में हज़रत महदी हों और जिस के आखिर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ लाएं गे।

(२) आप (यानी हज़रत महदी) आखरी खलीफा राशिद हों गे।

(३) आप आखरी मुजद्दिद हों गे।

(४) आप विलायत के आला तरीन मकाम पर फाएज़ हों गे।

(५) हदीस शरीफ में एक जगह आप को जन्नत के सरदारों में से एक सरदार बताया गया है। عن أنس بن مالكؓ قال : سمعتُ رسول الله صلي الله عليه وسلم يقول : نحنُ وُلد عبد المطلب سادةُ أهل الجنة، أنا وحمزة وعليٌ وجعفر والحسن والحسين والمهدى. (ابن ماجه باب خروج المهدى ٢٠٠) यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हम अबदुल मुतल्लिब की औलाद जन्नत से सरदार हों गे यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत हमज़ा रज़ि., हज़रत अली रज़ि., हज़रत जाफर रज़ि., हज़रत हसन रज़ि., हज़रत हुसैन रज़ि. और महदी रज़ि.।

यह रिवायत इब्ने माजा के मौज़ुआत में शामिल नहीं हैं। नीज़ इस के मुताबिआत और शवाहिद मौजुद हैं।

(६) अल्लाह तआला की तरफ से आप को बहुत बडी रुहानी ताकत दी गइ हो गी।

(७) खुलफाए राशिदीन के बाद आप ही का रुतबा है।

इस सिलसिले में मौलाना मोहम्मद इद्रीस कांधलवी रह. लिखते हैं। और इमाम महदी उम्मते मोहम्मदिया के आखरी खलीफए राशिद हैं, जिन का रुतबा जमहुर उलमा के नज़दीक अबु बक्र और उमर रज़ि. खुलफाए राशिदीन के बाद है उम्मत में। (अलकौलुल मुहकम फी नुज़ुले ईसा इब्ने मरयम मारुफ बि नुज़ुले इसा व ज़ुहूरे महदी ३५)

(८) आसमान व ज़मीन वाले सब आप से खुश हों गे।

(९) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नुजुल के बाद पहली नमाज़ आप की इकतेदा में फरमाएं गां और यह इस उम्मत मोहम्मदिया के लिए तकरीम है (कि इस उम्मत के बा कमाल अफराद वह हैं जिन के पीछे नबी नमाज़ अदा करे)

(१०) आप नबी और रसुल नहीं हों गे, ना आप पर वह्य नाज़िल हो गी और ना आप नुबुव्वत का दावा करें गे और ना कोइ आप को नबी समझ कर इमान लाए गा।

मालुम हुवा कि जो शख्स महदी होने के साथ साथ नबुव्वत का दावा करे वह झुटा है। (इसी तरहं जिन लोगों ने आज तक अपने मुतअल्लिक महदी होने के दावे किए वह भी झुटे हैं।)

(११) हज़रत इसा अलैहिस्सलाम के नुजुल तक हज़रत महदी मुसलमानों के खलीफा और हाकिम हों गे।

(१२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नुजुल के बाद अमीर की जगह हों गे, और हज़रत महदी वज़ीर हों गे और दोनों एक दुसरे के मशवरे से काम करें गे।

चुनांचे इस सिलसिले में मुफती युसूफ साहब लुधियानवी रह. फरमाते हैं : हज़रत इसा अलैहिस्सलाम का आसमान से नुजुल खलीफा की हैसियत से हो गा, और यह हैसियत इन की अहले इसलाम के मोतकेदात में शामिल है, इस लिए जब वह नाज़िल हों गे तो हज़रत महदी अलैहिर्रिज़वान उमुरे खिलाफत उन के पुसुर्द कर के खुद उन के मुशीरों में शामिल हो जाएं गे और तमाम अहले इसलाम उन के मुती हों गे। इस लिए ना किसी दावे की ज़रुरत हो गी, ना रस्मी चुनाव या इनतेखाब की। (अलमहदी वल मसीह २१)

ज़ुहूर के वक्त तक हज़रत महदी का मखफी रखा जाना

अहादीस के मुतालेअे से इस बात का अनदाज़ा होता है कि हज़रत महदी रज़ि. का ज़ुहूर एक वक्त तक मखफी रखा गया है। जब ज़ुहूर का वक्त हो गा उस वक्त अल्लाह की तरफ से अचानक लोगों पर राज़ ज़ाहिर हो जाए

गा। अजीब बात यह है कि जुहूर से पहले तक खुद हज़रत महदी भी अपने मकाम से ना आशना हों गे। इस सिलसिले में हज़रत अली रज़ि. से एक रिवायत मनकुल है। عن علی رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: المهدي منّا أهل البيت يُصلِحُهُ الله فى ليلةٍ (ابن ماجه باب خروج المهدى ٣١٠/٣ ومسند احمد ١٠٦/١) तरजुमा: अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: महदी हम अहले बैत में से हों गे, अल्लाह तआला एक ही रात में उन को यह सलाहियत अता फरमा दे गा।

इस हदीस की शरह में शाह अबदुल गनी दहलवी रह. फरमाते हैं أي يصلِحه اللهُ فى ليلةٍ أيُ يصلحه للامارة والخلافة بغاءةً وبغتةً (انجاح الحاجة على هامش ابن ماجه) यानी अल्लाह तआला एक ही रात में अचानक उन को अमीर और खलीफा बन जाने की यह सलाहियत अता फरमा दे गा।

अल्लामा इब्ने कसीर रह. इस हदीस की शरह में फरमाते हैं। أى يتوب الله عليه يُوَفِّقُهٗ ويُلهمه ويُرشدهٗ بعدَ أنُ لَمُ يكنُ كذلك (النهاية فى الفتن والملاحم ٣١/١) यानी अल्लाह तआला अपने खास फज़्ल और तौफीक से सरफराज़ फरमा कर पहले इन्हें (हक़ीकत का) इल्हाम करें गेऔर उस मुक़ाम से आशना करें गे जिस से वह पहले ना वाकिफ़ थे।

आप के कमालात और खुबियाँ जुहूर के वक्त तक मख़फ़ी और छुपी हों गी, इस लिए वक्ते जुहूर से पहले आप को कोइ पहचान नहीं सके गा। और जब जुहूर का वक्त मुकर्ररा आ पहुंचे गा तो अल्लाह तआला एक ही रात में अपनी कुदरते कामिला से इन में अमीर बनने की तमाम सलाहियतैं पैदा फरमा दें गे जिस की वजह से उन का महदी होना ऐसा नुमायाँ और वाज़ेह हो जाए गा कि एक अदना शख्स भी आसानी से आप की शखसियत को पहचान ले गा। मसाएब की कसरत की वजह से आप का जुहूर सब को महबुब और प्यारा हो गा।

हज़रत मौलाना बदरे आलम मीरठी मुहाजिर मदनी रह. लिखते हैं। एक अमीक़ हक़ीक़त इस से हल हो जाती है। और वह यह कि यहाँ पर कुछ

कमज़ोर इमान वाले दिलों पर यह सवाल उठ सकता है कि जब हज़रत महदी ऐसी खुली हुइ शोहरत रखते हैं तो फिर उन का तआरुफ अवाम व खवास में कैसे छुंपा हुवा रह सकता है? इस लिए मसाएब और आलाम के वक्त इन के जुहूर का इनतेज़ार माकुल मालुम नहीं होता। लेकिन इस शब्द يصلحه الله فى ليلة ने हल कर दिया कि यह सिफात चाहे कितने ही लोगों में क्यूँ ना हो। लेकिन उन के वह बातिनी तसर्रुफात और रुहानियत मशिय्यते इसलाहिया के तहत ओझल रखी जाएं गी। यहाँ तक कि जब उन के जुहूर का वक्त आए गा, तो एक ही रात के अंदर अंदर उन की अंद्रुनी खुसूसियत लोगों के सामने आ जाएं गी और जब वक्त आए गा, तो अल्लाह की कुदरत एक ही रात में उन के अंदर वह तमाम सलाहियतें और खुबियाँ उन में पैदा कर दे गी जिन के बाद उन का महदी होना एक नाबीना पर भी मुनकशिफ हो जाए गा।

देखिए दज्जाल का खुरुज अहादीसे सहीहा से कैसा साबित है, लेकिन यह साबित शुदा हकीक़त उस के खुरुज से पहले कितनी मखफी है, और जब कि यह दास्तान दौरे फितन की है तो अब हज़रत महदी के जुहूर और दज्जाल के वुजुद में इनकेशाफ का मुतालबा करना, या इस बहेस में पडना यह मुसतकिल खुद एक फितना है। (तरजुमानुस्सन्नह ४/४०४, ४०५)

हज़रत महदी का ज़ुहूर कब हो गा ?

अहादीस में बहुत ही ताकीद के साथ हज़रत महदी की तशरीफ आवरी और उस के बाद उम्मते मुसलेमा के उरुज और तरक्की की यकीनी खबरें दी गइ हैं। लेकिन साथ की किस वक्त कि साल, किस महीने आप का जुहूर हो गा यह नहीं बताया गया है।

हाँ अहादीस से जिस ज़माने में आप का जुहूर होने वाला है उस वक्त के उम्मते मुसलेमा के अहवाल का काफ़ी हद तक अंदाज़ा हो सकता है, जिस से यह पता चल सकता है कि अब जुहूरे महदी का ज़माना करीब है।

ज़मानाए ज़ुहूर के करीब उम्मत के उमुमी हालात

(१) ज़मीन ज़ुल्म व सितम से भर चुकी हो गी।

(२) ज़ुल्म इतना शदीद हो गा कि पनाह की जगह ना मिलती हो गी।

इस सिलसिले की एक रिवायत हाकिम रह. ने ज़िक्र की है। عن ابی سعيد الخدری رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ينزل بأُمّتى بلاءٌ شديدٌ من سلطانهم حتى يضيق الأرض عنهم فيبعثُ الله رجُلاً من عترتى فيملأ الأرض قسطاً وعدلاً كما ملئت ظلماً وجوراً الخ (مستدرك للحاكم) मेरी उम्मत पर उन के हुकमरानों की जानिब से बहुत सख्त मुसीबतें आएं गी यहाँ तक कि उन पर ज़मीन तंग हो जाए गी। फिर अल्लाह तआला मेरे खानदान में से एक शख्स को मबऊस फरमाए गा, वह ज़मीन को अद्ल व इनसाफ से ऐसी ही भर दे गा जैसे वह ज़ुल्म व सितम से भर चुकी थी।

(३) लोग एक दुसरे पर थुकते हों गे। عن على رضي الله عنه قال: لا يخرج المهديُّ حتى يبصُقَ بعضكم فى وجهِ بعضٍ (منتخب كنز العمال ٦/٣٣) यानी महदी उस वक्त तक ज़ाहिर नहीं हों गे जब तक तुम लोग एक दुसरे पर थुकने ना लग जाओ।

हज़रत मुफती निज़ामुद्दीन शामज़इ रह. की तहकीक के मुताबिक यह हदीस काबिले एतेबार है। (अकीदए ज़ुहूर महदी ७०)

(४) अल्लाह का नाम लेना गरदन ज़दनी का जुर्म हो गा। اذا قال الرجل "الله الله" قتل (مستدرك للحاكم ٤/٥٠٤)

(५) उम्मत पर बहुत ही आज़माइश हो गी।

(६) लोगों में इखतेलाफ और ज़लज़ले (यानी परेशान कुन हालात) हों गे।

(७) दीन पर ज़वाल आए गा।

(८) फितनों की भरमार हो गी।

(९) हालात ऐसे हों गे कि मुसलमान मायुसी से कहें गे कि अब महदी क्या आएं गे? यानी महदी की तशरीफ आवरी के मुतअल्लिक लोगों को मायुसी सी हो जाए गी। عن ابن عباس رضي الله عنه قال يبعث المهدى بعد أياسٍ وحتى يقولَ الناس "لا مهدي" (الحاوى ٢/٧٦) यानी महदी ऐसी ना उम्मीदी के आलम में ज़ाहिर हों गे कि लोग कहने लगें गे कि महदी का वजुद ही नहीं है।

(१०) दुनया पर शैतानी कुव्वतों का गलबा हो गा।

(११) मुसलमानों के दिलों में भी टेढा पन हो रहा हो गा।

(१२) दीन और शरीअत की दुनया में कोइ अहमियत नहीं हो गी।

(१३) हराम को हलाल समझा जाए गा।

(१४) मारुफ को मुनकर और मुनकर को मारुफ समझा जाता हो गा।

उम्मत पर आने वाले हालात का अनदाज़ा एक हदीस शरीफ के ज़रीए से लगाया जा सक्ता है। عن ثوبان رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يوشكُ الامَمُ انْ تداعى عليكم كما تداعى الاكلة الى قصعتها، فقال قائل: ومن قلّةٍ نحنُ يومئذ؟ قال: بل أنتم يومئذٍ كثير، ولٰكِنّكم غثاءٌ كغثاءِ السيل ولينزعنّ اللهُ من صدورِ عدوّكم المهابة منكم، ويقذِفنَّ الله فى قلوبكم الوهن، فقال قائل: يا رسول الله وما الوهنُ؟ قال: حبُّ الدنيا وكراهية الموت (أبو داؤد ٣/٥٩٠ رقم ٤٢٩٧) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि एक ज़माना ऐसा भी आए गा कि कौमें तुम पर हल्ला बोलने के लिए एक दुसरो को इस तरह दावत दें गी जैसे दस्तर खान पर खाने वालों को दावत दी जाती है। (और खाने वाले सब जानिब से दस्तर खान को घेर लेते हैं, इस तरह यह कुफ्फार की जमाअतें मुसलमानों को घेर लें गी) सहाबा ने पुछा : ऐ अल्लाह के

रसुल(सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) क्या उस वक्त हमारी तअदाद कम होगी? फरमाया : नहीं, बल कि तुम उस वक्त बडी तअदाद में हों गे, लेकिन (दीनी एतेबार से) तुम सैलाब के बालाइ कीचड और गंदगी की तरह हों गे, और दुशमनों के दिलों से तुम्हारा रोब निकल जाए गे और तुम ''वहन'' का शिकर हो जाओ गा, पुछने वाले ने पुछा : ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ''वहन'' क्या चीज़ है? फरमाया : दुनया से मोहब्बत और मौत से तफरत।

हज़रत महदी के हालात

नाम और नसब :

आप का नाम मोहम्मद हो गा। आप के वालिद का नाम अबदुल्लाह हो गा। आप का खानदानी तअल्लुक अहले बैत यानी बनु हाशिम से हो गा। आप अपने वालिद की तरफ से हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि. के बेटे हज़रत हसन की औलाद में से हों गे, यानी हसनी सैय्यद हों गे। और वालदा की तरफ से हरत हुसैन रज़ि. शहीदे करबला की औलाद में से हों गे यानी हुसैनी सैय्यद हों गे।

दर असल इस सिलसिले में रिवायत मुखतलिफ हैं। बाज में आप का हसनी होना और बाज़ में आप का हुसैनी होना मज़कुर है। चुनांचे इमाम अबु दाऊद रह. ने अपनी सुनन में ज़िमनन यह रिवायत ज़िक्र की है।

(١) قال أبو داؤد : وحُدّثتُ عن هارون بن المُغيرة، قال : حدثنا عمرو بن أبى قيس، عن شعيب بن خالد، عن اسحاق قال : قال على رضي الله عنه ونظر الى ابنه الحسن فقال : "ان ابنى هذا سَيّدٌ، كما سمّاه النبيُّ صلى الله عليه وسلم وسيخرجُ من صُلبه رجلٌ يسمَّى باسم نبيكم صلى الله عليه وسلم (أبوداؤد ر٢/٥٨٩ رقم ٤٢٩٠) तरजुमा : हज़रत अली रज़ि. ने अपने बेटे हज़रत हसन रज़ि. की तरफ देखते हुए युँ फरमाया है मेरा यह बेटा सरदार है जैसा के खुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे ''सैय्यद''

के लक़ब से नवाज़ा, इस की नसल से एक शख्स पैदा हो गा जिस का नाम तुम्हारे नबी के नाम जैसा हो गा।

(٢) حدثنا الوليد ورِشدين، عن ابن لهيعة، عن أبى قبيل، عن عبدالله بن عمرو رضي الله عنه قال: يخرج رجلٌ من ولد الحسين من قبل المشرق، لو اسقبلتُه الجبالُ لهدمها واتخذ فيها طُرقاً (اخرجه الحاكم وابن عساكر وكما فى الحاوى ٢/٦٦) यानी हज़रत हुसैन रज़ि. की औलाद में से एक शख्स मशरिक की जानिब से नमुदार हो गा, और अगर पहाड भी उस के रास्ते में रुकावट बने गे तो उसे तोड फोड कर उस में से अपना रास्ता निकाल ले गा।

इन दोनों रिवायतों के बाद अब साहबे निबरास का वह कलाम देखिए, जिस में दोनों रिवायाते में तआरुज़ के दो जवाब लिखे गए हैं। वह लिखते हैं। اختلف فى أنّ المهدى من أولاد الحسن او الحسين رضي الله عنهما؟ والراجع هو الأول، كما رواه أبوداؤد عن عليؓ (رقم الحديث ٤٢٩٠) وجمع بعضهم بأنّه من صلب حسنيٍ وبطنِ حسَينيةٍ (نبراس ٣١٦) यानी इस बात पर लोगों में इखतेलाफ है कि हज़रत महदी रज़ि. किस की औलाद में से हों गे? आया हज़रत हुसैन की औलाद में से या हज़रत हसन रज़ि. की औलादा में से? हालांके राजेह क़ौल यही है कि आप हज़रत हसन रज़ि. की औलाद में से हों गे। चुंकि इस कौल की ताइद में हज़रत अली की एक रिवायत भी है जिसे अबु दाऊद रह. ने नक्ल किया है। बाज़ हज़रात ने दोनों अकवाल में इस तरह ततबीक दी है कि आप के वालिद हज़रत हसन रज़ि. के खानदान से और वालदा हज़रत हुसैन रज़ि. की नसल से हों गी।

एक नुकता : इब्नुल कय्यिम अल ज़ौज़ी रह. लिखते हैं। وفى كونه من وُلْد الحسن سِرٌ لطيفٌ وهو أنّ الحسن رضي الله عنه ترك الخلافة لله، فجعل اللهُ من ولده من يقوم بالخلافة الحق، المتضمنُ للعدل الذى يملأُ الأرض وهذه سنة الله فى عباده أنه من ترك لأجله شيئاً أعطاه الله أو أعطى

ذريته أفضلَ منه" (المنار المنيف لابن القيم الجوزية ١٥١، و كذا قال المناوى فى فيض القدير ٢٧٩/٦) यानी हज़रत महदी रज़ि. के हज़रत हसन रज़ि. की औलाद होने में एक लतीफ नुकता है, वह यह कि हज़रत हसन रज़ि. अल्लाह तआला की खुशनुदी की खातिर खिलाफत से दस्त बरदार हुए थे, उस के नतीजें में अल्लाह तआला ने उन की औलाद में एक ऐसे शख्स का जुहूर मुकद्दर फरमा दिया जो सच्ची खिलाफत काएम करे गा, वह खिलाफत ऐसे इन्साफ वाली हो गी जो सारी सर ज़मीन को शामिल हो गी। और यह तो दस्तुरे खुदा वंदी है कि जो शख्स अल्लाह तआला की खातिर किसी चीज़ से दस्त बरदार होजाता है अल्लाह तआला खुद उस को या फिर उस की औलादा में से किसी को उस से बहतर चीज़ अता करते हैं।

नोट : (१) बाज़ रिवायात से मालुम होता है कि हज़रत महदी रज़ि. हज़रत अब्बास रज़ि. की औलाद में सें हों गे। चुनांचे हदीस اللهم انصر العباس وولد العباس ثلثاً، يا عمّ أما علمتَ أنّ المهدي من ولدك موفقاً، رضياً، مرضياً (منتخب كنز العمال ٣١/٦) के मुतअल्लिक साहिबे कनजुल उम्माल ने अखीर में लिखा है कि رجال سندهٗ ثقاتٌ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन मरतबा फरमाया : اللهم اغفر العباس وولد العباس ऐ अल्लाह अब्बास और उस की औलाद की मगफेरत फरमा दे। फिर फरमाया कि ऐ चचा क्या आप नहीं जानते कि महदी आप की औलाद में से हो गा जो तौफीक याफता, दज़ा मंद और रज़ा याफता हो गा।

इस रिवायत के कुछ तुरुक में محمد بن زكريا الغلّابى नामी रावी पाए जाते है जो गैर मोतबर हैं हत्ता कि बाज़ों ने इन के बारे में كان يضعُ الحديث लिखा है। (अलमुगनी लिज़्ज़हबी ३००/२)

और अगर इस रिवायत को कुबुल भी कर लिया जाए तो मुमकिन है हज़रत अब्बास रज़ि. की तरफ निसबत इस वजह से की गइ हो कि आप उस वक्त अपने खानदान के तनहा बुजुर्ग थे, और खानदान के बुजुर्गों और ज़िम्मे

दारों की तरफ बच्चों को मनसुब करना एक आम सी बात है।

नोट : (२) बाज़ किताबों में आप की वालदा का नाम आमना लिखा है लेकिन किसी मुसतनद हवाले से हमें यह बात नहीं मिल सकी।

लकब :

आप का लकब मारुफ महदी हो गा। जिस के मानी हैं हिदायत याफता (जिस को अल्लाह तआला की तरफ से हक़ की हिदायत मिली हो, साथ हो जो शखसियत दुसरों के लिए हिदायत का ज़रीआ बने) इस लिए लफ़्ज़ी एतेबार से हर नेक हिदायत याफता जो सिराते मुस्तकीम पर चले उस को महदी कह सकते हैं। लेकिन अहले सुन्नत वल जमाअत की इसतेलाह में (जो दर हक़ीक़त शरई इस्तेलाह) है। जो मायुस कुन हालात में नई उम्मीद बन कर तशरीफ लाएं गे, और उस उम्मत के लिए आलमी सर बुलंदी का ज़रीआ साबित हों गे। और जिन की खास अलामतें और तआरुफी अहवाल सहीह सनद के साथ सहीह अहादीस में मज़कुर हैं और उन अलामतों का इनतेबाक इस खास महदी के सिवा किसी और पर हो ही नहीं सकता।

इमाम का शब्द :

हज़रत महदी के नाम के साथ बज़ लोग इमाम का शब्द इस्तेमाल करते हैं, और हमारे बाज़ उलमा ने पुरे वुसुक दलाएल के साथ इस की इजाज़त भी दी है लेकिन سداً للباب इस को ना इस्तेमाल करना ही मुनासिब है। ना तो आप के हक़ में इस्तेलाह बना कर इस शब्द का इसतेमाल किया जाए और ना ही लुग़वी तौर इसतेमाल दुरुस्त है। कियुँ कि इमाम का शब्द इस्तेमाल करने में एक शीई नुकतए नज़र की तरवीज का शुबा होता है और वह यह है कि शीआ हज़रात जिन बारा अफराद की असमत के काएल हैं उन को इमाम से ताबीर करते हैं, लिहाज़ा हज़रत महदी के साथ इमाम का शब्द इसतेमाल करने में शीओं के इसतेमाल के पेशे नज़र इलतेबास हो गा, इस वजह से इस का तर्क ही अफ़ज़ल है। और लुग़वी एतेबार से भी हज़रत महदी

के लिए इस शब्द को इसतेमाल ना किया जाए कियुँ कि मरतबे में उन से भी बडे हज़रात खुलफाए राशिदीन के लिए इस शब्द के इस्तेमाल का रिवाज नहीं है।

अलैस्सिलाम का शब्द :

इस तरह बाज़ लोग आप के लकब के साथ अलैहस्सिलाम का शब्द बोलते हैं। जब कि आम तौर पर यह शब्द नबियों और फरशितों के लिए ही इस्तेमाल होता है, और हज़रत महदी ना तो नबी हैं और ना फरशिते, इस लिए अलैस्सिलाम का शब्द नहीं इस्तेमाल करना चाहिए बलकि रज़िअल्लाहु अन्हु कहना मुनासिब है।

चुनांचे उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मुफती सईद अहमद साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ''हुज्जतुल्लाहुलबालेग़ा'' की अपनी बे मिसाल शरह ''रहमतुल्लाहिलवासेआ'' में लिखते हैं : तंबीह : हज़रात हसनैन रज़ि. के असमाए गिरामी के साथ शब्द इमाम का इस्तेमाल हज़रत शाह साहब रह. ने खुतबाते जुमआ के खुतबए सानिया में भी फरमाया है जब की इन की इमामत का अक़ीदा शीओं का है, और यह उज़्र कि शायद लुग़वी मानी में इसतेमाल किया हो इस लिए द्रुस्त नहीं है कि खुलफाए राशिदीन के नामों के साथ यह शब्द इसतेमाल नहीं फरमाया, जब के वह ज़्यादा हकदार थे। इसी तरह बहुत से मुसन्नेफीन के कलम से उन बुजुर्गों के नाम के साथ अलैहस्सिलाम निकल जाता है जो अहले सुन्नत के नज़दीक किसी भी तरह द्रुस्त नहीं कियुँ कि बारह इमामों की नुबुव्वत और असमत का अकीदा शीओं का है। (१/८५)

अलैहिस्सलाम के शब्द के इस्तेमाल के सिलसिले में तकरीबन यही बातें मौलाना खैर मोहम्मद जलांधरी साहब ने (खैरुल फतावा १/१४७) में एक फतवे के सवाल के जवाब में लिखी है।

ग़रज़ इमाम महदी अलैस्सिलाम यह लकब जो लोगों में मशहुर हो गया है, शीआ असरात का नतीजा हो सकता है, या बे खबरी में मोहब्बत के

गलबे की बिना पर ऐसी बातैं ज़बान और कलम से निकल जाती हैं। इस लिए इहतियात बहुत ज़रुरी है। रही बात यह कि आप को रज़िअल्लाहु अन्हु कहना कैसे सहीह हो सकता है? तो वह इस वजह से कि आप तकरीबन दो साल तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की सोहबत में रहें गे, और कुछ रिवायतों में हज़रत महदी के मुतअल्लिक يرضى عنه ساكن السماء وساكن الأرض के अलफाज़ आए हैं, देखें (कनजुल उम्माल १४/२७०, सं. ३८५८५६) यानी आसमान और ज़मीन के लोग इन से राज़ी हों गे। इस लिहाज़ से जुहूर के बाद रज़िअल्लाहु अन्ह के पाकीज़ा कलमात के साथ हज़रत महदी रज़ि. का तज़केरा जाएज़ हो गा।

नोट : अहादीस में हज़रत महदी रज़ि. के लिए कसरत से लफ़्ज़ इमाम इस्तेमाल हुवा है, इसी वजह से पुराने ज़माने के और नए ज़माने के ओलमाए किराम का एक बडा गरोह हज़रत महदी रज़ि. के लिए इमाम का शब्द इसतेमाल करते आ रहा है, अलबत्ता चुंकि इमामत का अकीद शीओं का बुनियादी और अहम अकीदा है, हमारे लिए यही मुनासिब है कि हम इस शब्द के इस्तेमाल से बचें।

खुलासा यह हुवा कि आप का मुनासिब लकब हज़रत महदी रज़िअल्लाहु अन्ह है।

वतन :

عن امّ سلمة زوجِ النبي صلى الله عليه وسلم قال : يكون اختلاف عند موت خليفةٍ، فيخرجُ رجلٌ من أهل المدينة هارباً الى مكة فيأتيه ناسٌ من اهل مكةَ فيُخرِجُونه وهو كارهٌ فيُبَايعونه بَين الرّكن والمَقام ...الخ (ابوداؤد ٢/٥٨٩) तरजुमा : एक खलीफा की मौत के वक्त इखतेलाफ हो गा, तब मदीना वालों में से एख शख्स मक्का की तरफ भाग निकले गा, लोग इस के पास आ कर उसे इमामत के लिए निकालें गे हालांकि वह उस को पसंद ना करता हो गा, फिर वह लोग हजरे असवद और मक़ामे इब्राहीम के बीच उस से बैअत करें गे।

आप का वतने मालुफ और जाए विलादत मदीना मुनव्वरा है और जाए जुहूर मक्का मुकर्रमा है। और आप बैतुल मुकद्दस (मुल्के शाम) की तरफ दीन की सरबुलंदी के लिए हिजरत करें गे।

मुल्ला अली कारी रह. शरहे फिक्हे अकबर में लिखते हैं ان المهدى يظهر اولا فى الحرمين الشريفين ثم يأتى بيت المقدس ..الخ (شرح فقه اكبر ٦٣١) कि हज़रत महदी रज़ि. पहले हरमैन शरीफैन में ज़ाहिर हों गे, फिर बैतुल मुकद्दस (यरोशलम) तशरीफ ले जाएं गे।

शकल व सुरत (हुलिया मुबारक) :

आप रज़ि. की शकल व सुरत के मुतअल्लिक शाह रफीउद्दीन साहब दहलवी रह. लिखते हैं कि : आप का कद व कामत कदरे लंबा, बदन चुस्त, रंग खुला हुवा और चेहरा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे से मुशाबा हो गा। नीज़ आप रज़ि. के अखलाक़ पैगमबरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पुरी तरह मुशाबहत रखते हों गे। (अलामाते कयामत १०)

अहादीस में आप के नाम व नसब के साथ शकल व सुरत को भी इजमालन ज़िक्र किया गया है, ता कि आप की शखसियत को पहचानने में कोइ शक व शुबह न रहे।

इस सिलसिले में अबु दाऊद शरीफ की रिवायत के अलफाज़ यह है عن أبى سعيد الخدري رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : المهديُّ مِنّى أجْلى الجَبْهَةِ أقنى الأنف يمْلأُ الأرضَ قِسطاً وعَدلاً كما مُلِئتْ ظلماً وجُوراً ويملكُ سبعَ سنين (أبو داؤد كتاب المهدى ٢/٥٨٨) यानी हज़रत महदी रज़ि. मेरी औलाद में से है, जो कुशादा पेशानी और बुलंद व बारीक नाक वाले हैं।

इस हदीस में आंखों से नज़र आने वाली हज़त हमदी रं. की दो जिसमानी निशानियों का भी ज़िक्र किया गयाहै, एक यह कि वह रौशन और कुशादा पेशानी वाले हों गे, और दुसरी यह कि वह बुलंद बीनी हों गे, इन दोनों

चीज़ों को इनसान की खुबसुरती और हुस्न व जमाल में खास दखल होता है। इसी लिए खुसूसियत से इन का ज़िक्र किया गया है, यही वजह है कि रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुलियए मुबारक में भी इन दोनों चीज़ों का ज़िक्र आता है। (शमाएले तिरमिज़ी २)

इन दो निशानियों के ज़िक्र का मतलब समझ लेना चाहिए कि वह हसीन व जमील भी हों गे। लेकिन उन की असल निशानी और पहचान उन का यह कारनामा हो गा कि दुनिया से ज़ुल्म का खातमा हो जाए गा, और हमारी यह दुनिया इनसाफ की दुनिया हो जाए गी। (मआरिफुल हदीस १७१/८)

इसी किस्म की एक रिवायत मुसतदरक हाकिम में भी है : عـن ابـى سعيد الخدري رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : المهديُّ مِنّا أهل البيت أشمُّ الأنف، أقنى، أجلى يملأُ الأرضَ قِسطاً وعدلاً كما مُلئت جَوراً وظُلماً يعيشُ هكذا، وبسط يسارَهُ واصبعين من يمينه المُسبّحةَ والابهام وعقد ثلاثة" هذا حديث صحيح على شرط مسلم، ولم يُخرِجاه (مستدرك للحاكم ٤/٠٠٦، رقم ٨٦٧٠) तरजुमा : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि महदी हम अहले बैत में से होगा, सीधी और बारीक नाक वाला, खुली पेशानी वाला हो गा। वह ज़मीन को उसी तरह अद्ल व इनसाफ से भर दे गा जिस तरह वह ज़ुल्म और सितम से भरी हुइ थी। वह इतने (साल) ज़िंदा रहे गा (यह फरमाने के बाद) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (पांचों उंगलियाँ फैलाते हुए) उलटे हाथ को खोल दिया और सीधे हाथ की दो उंगलियों (शहादत की उंगली और अंगुठा) को खोल दिया और बाक़ी तीन बंद रखीं (गोया कुल सात उंगलियाँ खोल दी)

और कुछ रिवायत में मज़ीद एक जिसमानी सिफत इस तरह वारिद हुइ है। عن علي رضي الله عنه قال : المهدى فتىً من قريش ادم ضربٍ من الرجال (منتخب كنز العمال ٣٦/٦ على هامش مسند احمد) कि हज़रत

महदी रज़ि. गंदुमी रंग और छरीरे बदन वाले कुरैश के नवजवान हों गे।

मज़कुरा नुसूस में आप के तीन औसाफे जिस्मानिया का ज़िक्र है। मगर बतौरे अलामत तो यही वारिद है कि आप को रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सीरत में मुशाबहत हो गी, हाँ इस बात से इनकार नहीं कि इल्म व अमल, रुहानी और इखलाकी कमालात के साथ साथ आप की वजीह शकल व सुरत आप की तरफ लोगों की कशिश का ज़रीआ हो गी।

चुनांचे अबुदाऊद रह. ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. की रिवायत के ज़ेल में ज़िक्र किया है। يشبهـه فى الخُلُق ولا يشبهه فى الخَلق (अबुदाऊद ५८९/२, नं. ४२९१) हज़रत महदी रज़ि. अखलाक में तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह हों गे लेकिन शकल सुरत में नहीं।

चुनांचे साहबे बज़लुल मजहुल फरमाते हैं। يشبهه فى الخُلُق أى فى أخـلاقه العالية ولا يشبهه فى الخَلق أى فى ظاهر الصورة (बज़लुल मजहुद १०३/५) यानी हज़रत महदी रज़ि. अपने बुलंद अखलाक में तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबह हों गे लेकिन ज़ाहिरी शकल व सुरत में मुशाबह नहीं हों गे।

इस से एक बात यह भी ज़ाहिर होती है कि हज़रत महदी रज़ि. के अखलाक जब अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाके तय्येबा से मुशाबहत रखते हों गे तो यह अखलाक़ी मुशाबहत आप को पहचानने के लिए बहुत बडी अलामत साबित हो गी, और यह भी मालुम हुवा कि ज़रुरी नहीं कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिसमानी तौर पर कामिल मुशाबहत नहीं रखते हों गे।

ज़ुहूरे महदी रज़ि.
और उस वक्त के हालात

हज़रत महदी रज़ि. का ज़ुहूर किस तरह हो गा :

हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर के वक्त का तअय्युन हम नहीं कर सकते। हाँ बहुत सी अहादीस में हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर का वाकेआ बयान किया गया है, इस का हासिल यह है कि एक खलीफा का इनतेकाल हो गा और मुसलमानों में इमारत के बारें में इखतेलाफ हो गा कि किस को अमीर बनाया जाए। अहले मदीना में से एक बा कमाल शख्स (हज़रत महदी रज़ि. जो अभी लोगों में पहचाने नहीं गए हों गे) मक्का मुकर्रमा की तरफ चला जाए गा। उन को अंदेशा हो गा कि लोग मुझ को खलीफा बना दें गे और वह खुद यह मनसब कुबूल करना पसंद नहीं करते हों गे। और अपने आप को छुपाने की कोशिश करें गे लेकिन अहले मक्का आप की वजीह और बा कमाल शखसियत से पहचान लें गे और उन (हज़रत महदी रज़ि.) के ना चाहने के बावजुद हजरे असवद और मकामे इब्राहीम के दरमियान उन के हाथ पर बैअत करना शुरु कर दें गें। बिलकुल शुरु में जो लोग हज़रत महदी रज़ि. के दस्ते बाबरकत पर बैअत की सआदत हासिल करें गे उन की तअदाद असहाबे बदरिय्यीन और असहाबे तालुत की तरह ३१३ हो गी। (गज़वए बदर के मौके पर मशहुर कौल के मुताबिक ३१३ सहाबा थे और हज़रत तालुत के साथ उन की हिदायत पर अमल कर के जालुमत की तरफ मुकाबले के लिए आगे बढने वाले भी ३१३ थे) यह ३१३ हज़रात बहुत ही उंचे दरजे के इमान वाले हों गे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के बाद से अगले पिछले तमाम लोगों से अफज़ल हों गे। फिर जैसे जैसे खबर फैलती जाए गी मुखलिसीन मुखतलिफ जमाअतों में पहुंच कर आप के गिर्द जमा होते रहें गे। मशरिक की तरफ से एक जमाअत आए गी और हज़रत महदी रज़ि. की ताइद कर के कयामे हुकूमत में तआवुन करे गी।

इस सिलसिले की रिवायात इस तरहैं।

(١) حدثنا حرملةُ بن يحيى المصرى و ابراهيم بن سعيد الجوهريُ قالا : حدثنا ابو صالح عبدالغفار بن داوٗد الحرانى قال : حدثنا ابن لهيعة، عن أبى

زرعة عمرو بن جابر الحضرمی، عن عبدالله بن الحارث بن جزء الزبیدی رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلی الله علیه وسلم : یخرج ناسٌ من المشرق فیوطون للمهدی یعنی سلطانه (सुनन इब्ने माजा २००, नं. ४०८८) यानी मशरिक से लोग आएं गे और कयामे सलतनत में हज़रत महदी रज़ि. की मदद करें गे।

इस हदीस के तमाम रुव्वात पर तफसीली कलाम करते हुए हज़रत मुफती निज़ामुद्दीन शामज़ई रह. फरमाते हैं कि यह हदीस भी काबिले एतेबार है, कियुँ कि किसी ने इस को मोजु नहीं कहा है।

इराक, शाम, यमन के अबदाल भी आएं गे और हज़रत महदी रज़ि. के हाथ पर बैअत करें गे।

इबतेदाइ मरहले में हज़रत महदी रज़ि. का लशकर असबाब के एतेबार से कमज़ोर हो गा। लेकिन अल्लाह तआला की नुसरत और मदद उन के शामिले हाल होगी जिस की बरकत से आप आगे बढते चले जाएं गे।

(٢) أخبرنا عبد الرزاق، عن معمر، عن قتادة الى النبي صلی الله علیه وسلم قال : یکون اختلافٌ عند موت خلیفةٍ، فیخرجُ رجلٌ من المدینة فیأتی مکة، فیستخرجه الناس من بیته وهو کارهٌ، فیبایعونه بین الرکن والمقام، فیبعثه الیه جیش من الشام، حتی اذا کانوا بالبیداء خسف بهم، فیأتیه عصائبُ العراق وأبدال الشام، فیبایعونه فیستخرج الکنوزَ ویقسّم المال، ویُلقی الاسلامُ بجِرانه الی الأرض، یعیش فی ذلك سبع سنین أو قال تسعَ سنین" (मुसन्नफ अब. रज़्ज़ाक़ ३७१/११, नं. २०७६९ व अबु दाऊद नं. ४२८६) तरजुमा : एक खलीफा की मौत के वक्त जब इखतेलाफ होगा, उस वक्त एक शख्स मदीना मुनव्वरा से निकल कर मक्का मुकर्रमा की तरफ चला जाए गा, लोग उसे जबरन उस के घर से निकाल कर हजरे असवद और मकामे इब्राहीम के दरमियान उस से बैअत हों गे। शाम की जानिब से उस के मुकाबले में एक लशकर भेजा जाए गा, वह लशकर मुकामे बैदा पर हो गा तो

उसे धंसा दिया जाए गा, फिर उन के पास इराक की टुकडियाँ और शाम के अबदाल हज़रात तशरीफ लाएं गे और उन से बैअत लें गे, वह खज़ानों को निकालें गे और माल तकसीम करें गे और इसलाम को ज़मीन में इसतेकरार हासिल हो गा। और वह उसी हाल में सात या नौ साल रहें गे।

(٣) عن حفصة رضي الله عنها أنها سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: ليؤمنّ هذا البيت جيشٌ يغزونه حتى اذا كانوا بِبَيْداءَ من الأرض يُخسَفُ بأوسطهم، ويُنادى أولُهم آخرَهم ثم يخسف بهم فلا يبقىٰ الّا الشريد الذى يخبر عنهم" فقال رجلٌ أشهد عليك أنك لم تكذب على حفصة، وأشهد على حفصة أنها لم تكذب على النبي صلى الله عليه وسلم (मुसलिम ३८८/२, ना. २८८३) तरजुमा : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि बखुदा एक दिन लशकर इस घर (बैतुल्लाह) का कस्द करे गा यहाँ तक कि जब वह मुकामे बैदा पर हो गा तो उस के दरमियनी हिस्सा (कल्ब) दो धंसा दिया जाए गा, उस का अगला हिस्सा उन के पिछले हिस्से को पुकारे गा, फिर उन दोनों को भी धंसा दिया जाए गा, तब खबर रसाँ शख्स के इलावा कोई ज़िंदा ना बचे गा।

(٤) حدثنى محمد بن حاتم بن ميمون، حدثنا الوليد بن صالح، حدثنا عبيد الله بن عمرو، أخبرنا زيد بن أبى انيسة، عن عبد الملك العامرى، عن يوسفَ بن ماهَكَ قال: أخبرنى عبدالله بن صفوان، عن أم المؤمنين أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: "سيعوذ بهذا البيت يعنى الكعبة قومٌ ليست لهم منعةٌ ولا عددٌ ولا عُدّةٌ، يُبعث اِليهم جيشٌ حتى اذا كانوا بيداء من الأرض خُسف بهم" قال يوسف: وأهلُ الشام يومئذٍ بِبيداء يسيرون الى مكة، فقال عبدالله بن صفوان أمَ والله ما هو بهذا الجيش، قال زيدٌ: وحدثنى عبدالملك العامرى، عن عبدالله بن سابط، عن الحارث بن أبى ربيعة، عن أُمّ المؤمنينؓ بمثل حديث يوسفَ بنِ ماهَك غيرَ أنّه لم يذكر فيه الجيش الذى ذكره عبدالله بن صفوان (मुसलिम

३८८/२) यानी अनकरीब बैतुल्लाह में एक क़ौम पनाह गज़ीन हो गी जिस के पास ना कुव्वते मुदाफेअत हो गी ना तअदाद और ना तय्यारी, उस की तरफ लशकर कशी की जाए गी, यहाँ तक कि जब वह लशकर मकामे बैदा पर होगा तो उस को धंसा दिया जाए गा, युसूफ बिन माहक (रावी) फरमाते हैं कि उस वक्त अहले शाम मक्का की जानिब कुच कर रहें हों गे।

सुफयानी का खुरूज और हज़रत महदी रज़ि. की पहली मुबय्यना करामत :

सुफयानी का वाकेआ हज़रत महदी रं. के वाकेआत में बहुत ही अहम है। सुफयानी (खादिल बिन यज़ीद बिन अबु सुफियान की औलाद में से हो गा इस लिए उस को सुफयानी कहते हैं। इस का नाम उरवा बताया गया है) यह खानदान कुरैश से तअल्लुक रखने वाला एख शख्स हो गा और इस का ननिहयाल बनुल कल्ब कबीले से हो गा, इस लिए बनुकल्ब के लोग इस के हम नवा हों गे।

सुफियानी का तअल्लुक मुल्के शाम (सीरिया) में दिमशक के सहराइ अतराफ से हो गा, उस का हुक्म शाम और मिस्र से अतराफ में चले गा। यह बहुत ही ज़ालिम और जाबिर शख्स हो गा, लोगों का कत्ले आम करे गा, खास तौर पर सादात इस का निशाना हों गे, औरतों के पेट चाक करे गा, बच्चों का कत्ल करे गा। कबीलए कैस के लोग उस के मुकाबले के लिए जमा हों गे तो वह उन सब को कत्ल कर दे गा।

इस सिलसिले की रिवायतें इस तरह हैं।

(١) عن أبى هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: يخرج رجلٌ يقالُ له السفيانى فى عُمُق دمشق، وعامّةُ من يتبعهُ من كلب، فيَقتُل حتى يبقربُطون النساء ويقتل الصبيان، فتَجمع لهم قيس فيقتلها حتى لا يمنعَ ذَنَبَ تلعةٍ، ويخرجُ رجلٌ من اهل بيتى فى الحرّة فيبلغ السفيانيّ، فيبّعث له جنداً من جُنده، فيَهزِمهم، فيسيرُ اليه السفيانى بمن

معه، حتى اذا صار ببيداءَ مِنَ الارض خُسف بهم، فلا ينجو منهم الّا المُخبِرُ عنهم، هذا حديث صحيح الاسناد على شرط الشيخين، ولم يُخرجاه (मुसतदरक अलस्सहीहैन नं. ८५८६) तरजुमा : एक शख्स दिमशक से निकले गा, जिस को सुफयानी कहा जाए गा, उस के हम नवाओं की अकसरियत कबीलए बनु कल्ब से हो गी, वह लोगों को कत्ल करता फिरे गा यहाँ तक कि औरतों के पाट चाक करे गा और बच्चों को कत्ल करे गा। कबीलए कैस के लोग लशकरे सुफयानी के मुकाबले में जमा हो जाएं गे, वह उन का भी कला कमा करदे गा यहाँ तक कि उन में कोइ भी ज़िनदं नहीं बचे गा, फिर मेरे अहले बैत में से एक शख्स (यानी महदी रज़ि.) हर्रा के मुकाम पर निकले गा। जब सुफयानी को इस की खबर पहुंचे गी तो वह उन से मुकाबले के लिए अपनी एक फौज भेचे गा, महदी उस सब को शिकस्त दे दें गे, फिर खुद सुफयानी अपना लशकर ले कर उन के मुकाबले के लिए आए गा, यहाँ तक कि जब वह बैदा के मुकाम तक पहुंचे गा तो ज़मीन उन को निगल ले गी, उन में से खबर रिसाँ के इलावा कोइ बच ना पाए गा।

हासिल यह है कि इस ज़ालिम व जाबिर शख्स को जब हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर की खबर हो गी तो वह फौरी तौर पर अपना एक लशकर हज़रत महदी रज़ि. के मुकाबले के लिए भेजे गा। वह लशकर मक्का मुकर्रमी की तरफ चले गा और मकामे बैदा तक पहुंच कर पडाव डाले गा (बैदा : जुलहुलैफा के सामने मक्का की तरफ एक चटियल मैदान है) अचानक लशकर का दरमियानी हिस्सा ज़मीन में धंस पडे गा, आगे वाले पीछे वालों को इस की खबर करें गे कि कहीं वह भी इस मुसीबत का शिकार न हो जाएं लेकिन कुछ कर लेने से पहले इन दोनों को (यानी आगे औा पीछे वालों को) भी धंसा दिया जाए गा, सिर्फ एक आदमी बडी मुशकिल से बच सके गा। जो दुसरों को इस हादसे की इत्तेला दे गा। इस बडे लशकर का ज़मीन में धंसाया जाना हज़रत महदी रज़ि. के लिए नुसरते इलाही और आप की एक अजीब करामत

हो गी जिस से दुर दुर तक आप का शोहरा हो गा।

(٢) عن عائشة رضي الله عنها قالت : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : العَجَبُ أنَّ ناساً من أمتى يؤُمُّونَ البيتَ برجلٍ من قريش قد لَجّأ بالبيت حتى اذا كانوا بالبيداء خُسف بهم، فقُلنا يا رسول الله : انَّ الطريق يجمع الناس، قال : نعم، فيهم المُستبصر والمجبور وابن السبيل، يهلكون مهلكاً واحداً ويصدرون مصادر شتّى، يبعثُهم الله على نيّاتهم" मुसलिम किताबुल फितन ३८८/२, नं. २८८४) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तअज्जुब की बात है कि मेरी उम्मत के चंद लागे कुरैश के एक शख्स (के साथ जंग) के लिए बैतुल्लाह का रुख करें गे, जिस ने बैतुल्लाह में पनाह ले रखी हो गी, यहाँ तक कि जब वह लशकर मकामे बैदा पर पहुंचे गा तो उस को धसा दिया जाए गा, हम ने पुछा : ऐ अल्लाह के रसुल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल) रासतेर पर तो कुसुर वार और बे कुसुर हर किस्म के लोग होते हैं ? तौ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जी हाँ ! उन धंसने वालों में रज़ा मंद, मजबुर और राह गुज़र हर किस्म के लोग हों गे, सब यक बारगी हलाक हो जाएं गे, फिर अल्लाह तआला उन्हें अपनी अपनी निय्यतों के मुताबिक कयमात में दोबारा उठाएं गे।

फायदा : जब सुफयानी लशकर के धंसा दिए जाने की खबर मिले गी तो वह खुद लशकर ले कर मक्का की तरफ चले गा, और मक्का मुकर्रमा पर चढाइ करे गा। मुसलमान उस वक्त हज़रत महदी रज़ि. की इमारत में ज़ाहिरी असबाब के लिहाज़ से बहुत ही कमज़ोर हों गे, गोया बदर जैसा मंज़र हो गा, लेकिन अल्लाह तआला की मदद आए गी और सुफयानी के लशकर को भारी शिकस्त हो गी और हज़रत महदी रज़ि. का लशकर ग़ालिब आ जाए गा।

इस सिलसिले में अबु दाऊद शरीफ में हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. से एक रिवायत इस तरह है। حدثنا محمد بن المُثنّى، حدثنا مُعاذ بن هشام، حدثني أبى، عن قتادةَ، عن صالح أبى الخليل، عن صاحب لهُ، عن أُمِّ سلمة

زوج النبي صلى الله عليه وسلم قال : يكون اختلافٌ عند موت خليفةٍ، فيخرُجُ من أهل المدينة هارباً الى مكة، فيأتيه ناسٌ من أهل مكة، فيُخرجونه وهو كاره، فيبايعونه بين الركن والمقام، ويبعثُ اليه بعثٌ من الشام، فيُخسف بهم بالبيداء بين مكة والمدينة، فإذا رأى الناسُ ذلك أتاه أبدالُ وعصائب اهل العراق، فيبايعونه، ثُمَّ ينشا رجلٌ من قريش أخواله كلبٌ فيَبعث اليهم بعثاً، فيظهرون عليهم وذلك بعثُ كلبٍ، والخيبةُ لِمَنْ لم يشهدُ غنيمةَ كلبٍ، فيقسم المال ويعمل فى الناس بسنة نبيهم صلى الله عليه وسلم ويُلقى الاسلام بِجرانه الى الأرض فيلبث سبعَ سنين، ثُمّ يتوفىٰ ويصلّى عليه المسلمون (अबुदाऊद ५८९/३ किताबुल महदी)

तरजुमा : हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करती हैं कि आप ने इरशाद फरमाया कि : एक खलीफा के इनतेकाल के वक्त इखतेलाफ हो गा, तब अहले मदीना में से एक शख्स भाग कर मक्का मुकर्रमा की तरफ जाए गा, तब अहले मक्का उस के पास आएं गे और उन्हें ज़बरदस्ती निकालें गे फिर हजरे असवद और मकामे इबराहीम के दरमियान उस से बैअत करें गे। फिर मुल्के शाम से उन की तरफ एक लशकर भेजा जाए गा, इस लशकर को मकामे बैदा में धंसा दिया जाए गा जो मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के दरमियान वाके है। जब लोग इस को देखें गे तो शाम के अबदाल और इराक के नेक लोगों की जमाअतें उन के पास आ कर बैअत करे गी। फिर कुरैश का एक शख्स ज़ाहिर हो गा जिस के मामुं कबीलए बनु कल्ब के हों गे और हज़रत महदी रज़ि. के मुकाबले के लिए लशकर कशी करे गा तो उन का लशकर इस (सुफयानी) के लशकर पा गालिब आजाए गा, यह कबीलए बनु कल्ब का लशकर हो गा। जो कबीलए कल्ब की गनीमत में हाज़िर ना हुवा उस के लिए खसारा है। फिर हज़रत महदी रज़ि. माल तकसीम करें गे और लोगों में आखरी रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शरीअत के मुताबिक अहकाम नाफ़िज़ फरमाएं गे। और इसलाम अपनी गरदन ज़मीन पर डाल दे

गा (यानी इसलाम को ज़मीन में चैन नसीब हो गा) और वह सात साल तक ज़िंदा रहें गे फिर हज़रत महदी रज़ि. वफात पा जाएं गे और मुसलमान उन की नमाज़े जनाज़ा पढें गे।

इस रिवायत में "عن صاحب له" की इबारत से मालुम हुवा कि एक रावी मजहुल है मगर दुसरे तरीके से इस रावी मजहुल की तायीन हो जाती है कि इस से मुराद हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने हारिस हैं।

नोट : सुफयानी और कबीलए कल्ब की शिकस्त के बाद हज़रत महदी रज़ि. हासिल शुदा गनीमत का माल तकसीम करें गे। तकसीमे गनीमत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करें गे और माल लेने वालों को लप भर भर कर जितना वह उठा कर ले जा सकें गे अता फरमाएं गे।

हदीस शरीफ में इस मारके में हासिल शुदा माले गनीमत की भी बडी अहमियत बतलाइ गइ है। عن أبى هريرة رضي الله عنه مرفوعاً : المحروم من حرم غنيمة كلبٍ ولو عقالا، والذى نفسى بيده لتُباعَنّ نسائهم على درج دمشق، حتى تُردَّ المرأةُ من كسرٍ يوجَد بساقها (मुसतदरिक लिलहाकिम, नं. ८३२९ अला शरतिश्शैखैन)

खुलासा यह है कि जो कल्ब की गनीमत में शरीक हो जाए गा (चाहे एक इकाल के बराबर ही उसे मिला हो) वह सब से सआदत मंद समझे जाएं गे, और जो इस गनीमत में शरीक नहीं हुवा उन को महरुम माना जाए गा, गोया सुफयानी के लशकर से मुकाबला करने के लिये अहले हक़ को हदीस शरीफ में तरग़ीब दी गइ है। माले गनीमत के इलावा कल्ब की औरतों को बांदियां बनाया जाए गा। और बादंदियों की इतनी कसरत हो गी कि वह दिमशक की शाहराह पर फरोख्त हों गी, उन में से एक औरत (बांदी) सिर्फ पिंडली टुटी हुइ होने की वजह से वापस की जाए गी।

मुल्के शाम की फतेह :

हज़रत महदी रज़ि. के ज़ुहूर के बाद सुफयानी का लशकर धंसा दिए

जाने से आप की शोहरत व मकबुलियत आम हो जाए गी। अहले हक मुखतलिफ इलाकों से जोक दर जोक आप के पास आप की खिदमत में हाज़िर हों गे। आप मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाएं गे। रौज़ए अकदस पर हाज़री के बाद आप मुल्के शाम की तरफ रवाना हों गे। मुल्के शाम में उस वक्त रुमियों का तसल्लुत हो गा।

हज़रत महदी रज़ि. की मा तहती में होने वाली जंगों और दीगर अहवाल की वज़ाहत के लिए हज़रत अबदुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. की उस मुफस्सल रिवायत का ज़िक्र करना मुनासिब मालुम होता है जिस को नुऐम बिन हम्माद रह. ने ''अलफितन'' में और इन ही के हवाले से अल्लामा सुयुती रह. ने ''जामे कबीर'' में और सैय्यद बरज़ंजी रह. ने ''अलइशाआ'' में ज़िक्र किया है, उस रिवायत से इस बाब के वाकेआत की तरतीब पर काफ़ी रौशनी पडती है। नीज़ इस से बेशतर अजज़ा की ताइद सिहाह में सराहतन मिल जाती है।

عن عبدالله بن مسعود رضي الله عنه، عن النبي صلى الله عليه وسلم قال : يكون بين المسلمين وبين الروم هدنة وصلح، حتى يقاتلوا معهم عدوا لهم، فيقاسمونهم غنائمهم، ثم ان الروم يغزون مع المسلمين فارس، فيقتلون مقاتلتهم ويسبون ذراريهم، فيقول الروم : قاسمونا الغنائم كما قد قاسمناكم، فيقاسمونهم الأموال وذرارى الشرك، فيقول الروم : قاسمونا ما أصبتم من ذراريكم، فيقولون : لا نُقاسمكم ذرارى المسلمين أبداً، فيقولون غدرتم بنافترجع الروم الى صاحبهم بالقسطُنطنية فيقولون : ان العرب غدرت بنا، ونحن أكثر منهم عدداً، وأتم منهم عدة، وأشد منهم قوة، فأمدّنا نقاتلهم، فيقول : ما كنتُ لاغدربهم، قد كانت لهم الغلبة فى طول الدهر علينا، فيأتون صاحب رومية فيُخرجونه بذلك فيوجه ثمانين غايةً تحت كل غاية اثنا عشر ألفاً فى البحر، ويقول لهم صاحبهم اذا رسيتم بسواحل الشام فأحرقوا المراكب لتقاتلوا عن أنفسكم لهم

صاحبهم : اذا رسيتم بسواحل الشام فأحرقوا المراكب لتقاتلوا عن أنفسكم فيفعلون ذلك، ويأخذون أرض الشام كلها برها وبحرها، ما خلا مدينة دمشقَ والمعتق، ويخربون بيت المقدس.

قال : فقال ابن مسعودٍ رضي الله عنه : وكم تسع دمشقُ من المسلمين؟ قال : فقال النبي صلى الله عليه وسلم : والذى نفسى بيدى لتتسِعنَّ على من يأتيها من المسلمين كما يتّسعُ الرحمُ على الولد.

قال : قلت : وما المُعتق يا نبي الله ؟ قال : جبل بأرض الشام من حمص على نهر يقال لها الأرنط، فتكون ذرارى المسلمين فى أعلى المعتق والمسلمون على نهر الأرنط، والمشركون خلف نهر الأرنط يقاتلونهم صباحاً ومساءً، فاذا أبصر ذلك صاحبُ القسطنطينية وجّهَ فى البَر الى قِنَّسُرين ستَّمائةِ ألف حتى تجيئهم مادةُ اليمن سبعين ألفاً، ألّفَ الله قلوبهم بالايمان، معهم أربعون ألفاً من حمير حتى يأتوا بيت المقدس فيقاتلون الروم فيهزمونهم ويخرِجونهم من جند الى جند، حتى يأتوا قِنَّسرين وتجيئهم مادة الموالى، قال : قلتُ وما مادّة الموالى يا رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : هم عِتاقَتكم، وهو منكم قومٌ يجيئون من قِبَل فارسَ فيقولون تعَصبتم يا معشر العرب، لا نكون مع أحد من الفريقين أو تجتمع كلمتكم، فتقاتل نزارُ يوماً واليمن يوماً والموالى يوماً، فتُخرجون الرومَ الى العمق وينزل المسلمون على نهر يقال له كذا وكذا يعزى، والمشركون على نهر يقال له الرقية وهو النهر الأسود، فيقاتلونهم فيرفع الله تعالى نصره عن العسكرين وينزل صبره عليهما حتى يقتل من المسلمين الثلث، ويفر الثلث، ويبقى الثلث، فأما الثلث الذين يُقتلون فشهيدهم كشهيد عشرةٍ من شهداء بدر يشفع واحدٌ من شهداء بدر لسبعين، وشهيد الملاحم يشفع لسبع مائة، وأما الثلث الذين يفرون فانهم يفترقون ثلثة أثلاث، ثلثٌ يلحقون بالروم ويقولون : لو كان الله بهذا الدين من حاجة لَنصرَهم وهم مسلمة العرب بهراء وتنوخ وطيء وسليح

وثلثٌ يقلن : منازلُ ابائنا وأجدادنا خيرٌ لا تنالنا الروم أبداً، مُرّوا بنا الى البدو وهم الأعراب، وثلثٌ يقول :إنّ كلّ شيءٍ كاسمه، وأرض الشام كاسمها الشؤم، فسيروا بنا الى العراق واليمن والحجاز حيث لا نخاف الروم، وأما الثلثُ الباقى بعضهم الى بعض يقولون : الله الله دعوا عنكم العصبيّة ولتجتمع كلمتكم وقاتلوا عدوكم فانكم لن تنصروا ما تعصبتم، فيجتمعون جميعاً ويتبايعون على أن يقاتلوا حتى يلحقوا باخوانهم الذين قتلوا، فاذا أبصر الروم الى من قد تحوّلَ اليهم ومن قتل ورأو قلّة المسلمين قام روميٌّ بين الصفين معه بُندٌ فى أعلاه صليبٌ فينادى "غلبَ الصليبُ" فيقوم رجلٌ من المسلمين بين الصفينِ ومعهُ بندٌ فينادى "بل غلب أنصارُ الله، بل غلب أنصار الله وأولياء ه" فيغضب الله تعالى على الذين كفروا من قولهم "غلب الصليب" فيقول يا جبريلُ أغث عبادى فينزل جبريلُ فى مائة ألف من الملائكة ويقول يا إسرافيل أغث عبادي فينحدر أسرافيل فى ثلاث مائة ألف من الملائكة وينزل الله نصره على المؤمنين وينزل بأسه على الكفار فيُقْتلون ويهزمون ويسير المسلمون فى أرض الروم حتى يأتوا عَمُّوريةَ وعلى سورها خلقٌ كثير يقولون : ما رأينا شيئاً أكثر من الروم كم قتلنا وهزمنا وما أكثرهم فى هذه المدينة وعلى سورها، فيقولون : امنونا على أن نودّىَ اليكم الجزية، فيأخذون الأمان لهم ولجميع الروم على أداء الجزية وتجتمع اليهم أطرافهم فيقولون : يا معشر العرب ان الدجال قد خالفكم الى دياركم، والخبر باطلٌ فمن كان فيهم منكم فلا يُلقِينّ شيئاً مما معه فانه قوةٌ لكم على ما بقى فيَخرجون فيجدون الخبر باطلاً، ويثِبُ الروم على ما بقى في بلادهم من العرب فيقتلونهم حتى لا يبقى بأرض الروم عربيٌّ ولا عربيةٌ ولا ولدُ عربيّ الّا قُتل، فيبلغ ذلك المسلمين فيرجعون غضباً لله عزوجل فيقتلون مقاتلتهم ويَسبون الذرارى ويجمعون الأموال، لا ينزلون على مدينة ولا حصنٍ فوق ثلثة أيام حتى يفتح لهم، وينزلون على الخليج ويمد الخليج حتى يفيض فيصبح أهلُ القسطنطينية يقولون : الصليبُ مَدَّلنا بحرنا والمسيح ناصرنا فيصبحون والخليج يابسٌ

فتُضرب فيها الأخبيةُ ويحسر البحر عن القسطنطينية ويحيط المسلمون بمدينة الكفر ليلة الجمعة بالتحميد والتكبير والتهليل الى الصباح ليس فيهم نائمٌ ولا جالسٌ، فاذا طلع الفجر كبرَ المسلمون تكبيرةً واحدةً فيسقط ما بين البُرجين، فتقول الروم : انما كنا نقاتل العرب فالآن نقاتل ربنا وقد هدم لهم مدينتنا وخرّبها لهم، فيمكثون بأيديهم ويكيلون الذهب بالأترسة ويقتسمون الذرارى حتى يبلغ سهم الرجل منهم ثلث مائة عذراء، ويتمتعوا بها فى أيديهم ما شاء الله، ثم يخرج الدجال حقا ويفتح الله القسطنطينية على بيد أقوامٍ هم أولياء الله يرفع الله عنهم الموت والمرض والسقم حتى ينزل عليهم عيسى بن مريم عليه السلام فيقاتلون معه الدجال . (अलफितन लिनुऐम ३२३, नं. १२४५, वलजामे अल कबीर लिस्सुयुती २३८/१५नं. १३१५१)

मुसलमानों और रुमी (इसाइयों) के बीच सुलह हो गी, तब मुसलमान रुमियों के साथ मिल कर पहले एक बार रुमियों के किसी दुशमन से जंग करें गे, जिन में उन की फतह हो गी और दुशमन से हासिल शुदा माले गनीमत दोनों आपस में तकसीम कर लें गे।

इस के बाद फिर यह रुमी लोग मुसलमानों से मिल कर फारस से जंग करें गे, वह उन के लशकरी लोगों को कत्ल कर दें गे और उन की औलाद को कैद कर लें गें। रुमी मुसलमानों से कहें गे कि जिस तरह पहले हम ने माले गनीमत तकसीम कर के तुम को दे दिया था उसी तरह इस बार तुम भी माल और कैदी सब बराबर तकसीम कर के हमें दे दो। इस पर अहले इसलाम हासिल शुदा माल और मुशरिक कैदियों की तकसीम तो कर लें गे (मगर जो मुसलमान कैदी उन के पास हों गे उन्हें तकसीम न करें गे) तो रुमी कहें गे कि मुसलमानों की भी तकसीम की जाए, मुसलमान इनक़ार कर दें गे, रुमी कहें गे कि यह मुआहेदे के खिलाफ बात है।

रुमी शाह कुसतुनतुनिया के पास जा कर शिकायत करें गे कि अरबों

ने हम से दग़ा बाज़ी की (आप हमारी मदद की जिए), हम तो मुसलमानों से माल व मता में और लशकरी ताकत व कुव्वत में बहुत ज़्यादा हैं, शाह कुसतुनतुनिया कहे गा कि मैं मुसलमानों से अहेद शिकनी नहीं कर सकता, वह अरसए दराज़ से हम पर गालिब ही रहे हैं, आखिर कार रुमी साहबे रुमिया के पास शिकायत ले कर जाएं गे, वह ८० झंडों पर मुशतमिल एक बहुत बडा लशकर समुंदर के रास्ते से उन के साथ कर दे गा, जिस के हर झंडे के नीचे बारह हज़ार सिपाही हों गे (गोया उन की कुल तेदाद ९६,००० हो `गी) इन लशकरियों के सिपेह सालार मुल्के शाम के साहिल पर पहुंच कर कशतियां जला देने का हुकुम दे गा ता कि यह लशकर अपनी जान की बाज़ी लगा कर जंग करे, यह लशकत उस के हुक्म की बजा आवरी करे गा, रुमी इसाइ दिमश्क और मोतक पहाड के सिवा शाम का तमाम मुल्क फतेह कर लें गे और बैतुलमुकद्दस (यरोशलम) को बरबाद कर डालें गे।

हज़रत अबदुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. के एक सवाल के जवाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि उस वक्त दिमश्क में मुसलमानों की बहुत बडी तअदाद हो गा, और मोतक मुल्के शाम के मुकाम हमस की नहर के पास एक पहाड का नाम है।

इस जगा का नकशा कुछ इस तरह हो गा कि मुसलमानों के बच्चे मोतक के उपर हों गे, मुसलमान नहरे अरनत पर और मुशरिकीन नहेर के पिछली जानिब हों गे, वह सुबह शाम आपस में लडें गे।

जब शाहे कुसतुनतुनिया यह नकशा देखे गा तो वह किन्नसरीन के पास छे लाख का लशकर खुशकी के रासते से रवाना करे गा। मुसलमानों के पास यमनियों का एक लशकर आ मिले गा जिन की तअदाद ७० हज़ार हो गी, और यमन के चालीस हज़ार कबीलए हिमयर के लोग आ मिलें गे, अल्लाह तआला ने इमान की ज़रीए उन के लिदों को आपस में जोड दिया हो गा। यह

हज़रात बैतुल मुकद्दस पहुंच कर रुमियों से जंग करें गे, आखिर उन को शिकस्त देंगे और किन्नसरीन के पास पहुंचे गे।

आज़ाद किए गए गुलामों का एक लशकर (फारस की तरफ से) अरब की मदद के लिए आए गा और कहे गा कि ऐ अरब ! तुम तअस्सुब की बात छोडो, जब तक तुम बाहम मुत्तहिद नहीं हो जाते हम तुम दोनों में से किसी की मदद नहीं करें गे, कभी अरब, कभी यमन और कभी यह गुलामों का लशकत कुफ्फार से लडे गा, मुसलमान इसाइयों को दुर घाटियों की जानिब निकाल बाहर कर दें गे,मुसलमान किसी नहर के पास एकट्टे हो कर एक दुसरे की खबर गीरी में मसरुफ हों गे और कुफ्फार नहरे रकबा के पास जमा हों गे, उस नहर को नहरे असवद भी कहा जाता हैं।

और फिर मुसलमानों की मुशरिकीन से जंग हो गी मगर अल्लाह तआला मुसलमानों के दोनों लशकरों से फतेह छीन कर उन पर सब्र इलका करें गे, एक तिहाइ मुसलमान शहीद हों गे, एक तिहाइ भाग निकलें गे और एक तिहाइ बाक़ी रह जाएं गे।

इस लशकर के शोहदा में से हर शहीद गज़वए बदर के दस शहीदों के दरजे के सवाब पर हो गा, चुनांचा बदर का एक शहीद सत्तर लोगों कि शिफाअत करे गा और आखरी ज़माने में इन शहीदों में से हर एक को सात सौ लोगों की शिफाअत की इजाज़त हो गी।

लशकर का जो तिहाइ हिस्सा भाग खडा हुवा था वह भी तीन हिस्सों में बट जाएं गे, एक तिहाइ मुरतद हो कर रुमियों से जा मिलें गे, वह कहें गे कि अगर अल्लाह को इस दीन की ज़रुरत हो तो वह खुद उस की पासदारी कर ले, यह मुकामे हरा, तनुख, तीअ और सुलेह के अरब बाशिंदे हों गे, एक तिहाइ देहाती लोग हों गे, वह यह कहते हुए अपने देहातों को रवाना हो जाएं गे कि हमारे आबा व अजदाद की सरज़मीन ही हमारे लिए बहतर है, रुमी हम तककभी नहीं पहुंच पाएं गे, और एक तिहाइ यह कहें गे कि हर चीज़ पर उस

के नाम के असरात होते हैं, इसी लिए यह मुल्के शाम भी अपने नाम ही की तरह मनहुस है, हमें इराक, यमन और हिजाज़ ले चलो, हमें वहाँ रुमियों से कोइ अंदेशा नहीं रहे गा। अब बचे हुए एक तिहाइ कहें गे कि अब आपसी दुशमनी छोड कर सब मुत्तफिक हो जाओ, और सब मिल कर दुशमन से जंग करो, यही दुशमनी हमारी कामयाबी में रुकावट है।

अब यह इस अज़्म के साथ लडें गे कि हमें भी अपने शहीद भाइयों से जा मिलना है। जब रुमी लशकर मुसलमानों की इस किल्लत का एहसास करे गा, कि इन के एक तिहाइ तो मर गए और एक तिहाइ हमारे हमनवा हो गए और अब सिर्फ एक तिहाइ ही बाकी रह गए हैं तो एख शख्स सिलेब वाला झंडा ले कर खडा हो गा और कहे गा कि सिलेब का बोल बाला हो, इस पर एक मुसलमान दोनों सफों के बीच झंडा ले कर नारा लगाए गा कि अल्लाह के अनसार का गलबा हो।

रुमियों के इस कलमा पर अल्लाह तआला को गुस्सा आए गा और वह मुसलमानों की छे लाख फरशितों के साथ मदद फरमाए गा, एक लाख हज़रत जिबरईल के साथ हों गे, दो लाख हज़रत मीकाइल के साथ, और तीन लाख हज़रत इसराफील के साथ। अल्लाह तआला मुसलमानों की मदद फरमाएं गे और कुफ्फार पर अपना कहर नाज़िल करें गे, कुफ्फार बुरी तरह मारे जाएं गे और जो बच रहे वह बहुत रुसवाई के साथ शिकस्त खा जाएं गे।

उस के बाद मुसलमान मुल्के रुम में दाखिल हो कर मुकामे अम्मोरिया तक पहुंच जाएं गे, अम्मोरिया की सरहद पर बहुत से लोग जमा हों गे, मुसलमान उन्हें देख कर बडी हैरत में पड जाएं गे कि यह रुमी कितनी बडी तअदाद में हैं, कितनों को हम ने कत्ल कर डाला, कितनों को शिकस्त दे कर भगा दिया फिर भी यह माजरा कि अभी पुरा अम्मोरिया और उस के आस पास इन की कसीर तअदाद है। वहाँ के लोग जिज़या अदा करने की शर्त पर मुसलमानों से अमन तलब करें गे, मुसलमान इन की इस पेश कश पर रज़ा

मंद हो कर तमाम रुमियों को अमान दें गे। फिर आस पास के रुमी यह अफवाह उडाएं गे कि दज्जाल मुसलमानों के आबाइ वतन पहुंच चुका है। यह खबर बिलकुल बे असल हो गी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक्त मौजुद रहने वालों को नसीहत की है कि वह रुम से हासिल शुदा गनीमत हरगिज़ ना जाने दें, वह इन की अगली जंगों में काम आए गी। खैर मुसलमान इधर उधर भाग पडें गे, बाद में उन को मालुम हो गा कि यह खबर गलत थी। इधर बाकी बचे मुसलमानों पर रुमी टुट पडें गे और उन को बरबाद कर दें गे। यहाँ तक कि रुम में अरब का कोइ आदमी या औरत नहीं बचे गा, रुमी मुसलमानों की पुरी नस्ल को कत्ल कर डालें गे। वहाँ मुसलमानों को जैसे ही यह खबर पहुंचे गी वह गुस्से में आ कर वापस लौटें गे। दोबारा रुमियों से जंग करें गे और इस बार मुसलमान इसाइयों के लडाकु लोगों को कत्ल करें गे और उन की औलाद को कैद कर दें गे, सारा माल व मता जमा कर लें गे, जिस शहर या जिस किला से उन का गुज़र हो गा तीन दिन के अंदर अंदर अल्लाह उन को कामयाब करें गे, जब मुसलमान समनदर के पास पहुंचे गे तो वह भी छलक जाए गा, यह देख कर नसारा कहें गे कि सिलेब की बरकत से समुंदरी सतह हमारे बचाओ के लिए छलक गइ और मसीह हमारा मदद गार है।

जब सुबह हो गी तो वह देखें गे कि समनदर सूख चुका है, समनदर कुसतुनतुनिया से अपना रुख मोड ले गा, बस फौरन इस में अपने खीमे लगा दें गे। इधर मुसलमान जुमा की शब में कुफ्फार के इस शहर का मुहासरा कर लें गे और सुबह तक अलहमदुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर और ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र करते रहें गे। ना कोइ शख्स सोए गा और ना बैठे गा। जब सुबह हो गी तो तमाम मुसलमान मिल कर एक बार अल्लाहु अकबर का नारा लगाएं गे, उसी वक्त शहर की एक जानिब गिर पडे गी। इस पर हैरान हो कर रुम कहें गे कि पहले तो हमारी जंग अरब से थी, अब तो खुद परवरदिगार आलम ही से हमें बराहे रास्त जंग करनी पड रही है। अल्लाह तआला ने

मुसलमानों के लिए हमारा पुरा शहर तहस नहस कर डाला।

इस के बाद मुसलमान कुछ तवक्कुफ करें गे और माले गनीमत का सोना ढालों में भर भर कर तकसीम हो गा, और उन की आल औलाद भी तकसीम की जाएं गी (औरतें इस कसरत से हों गी कि) एक एक शख्स के हिस्से में तीन तीन सौ औरतें आएं गी, एक मुकर्ररा वक्त तक मुसलमान इस गनीमत के नफा उठाएं गे।

फिर इस के बाद दज्जाल सच में निकल आए गा और कुसतुनतुनिया अल्लाह के ऐसे नेक बंदों के हाथ फतेह हो गा जो ज़िंदा सलामत रहें गे। ना बीमार पडें गे और ना कोइ मर्ज़ उन को हो गा, यहाँ तक कि ईसा अलैहिस्सलाम उतरें गे, और उन के हमराह यह जमाअत दज्जाल (और उस के लशकर यहुद) के साथ जंग में शरीक हो गी।

रिवायत में आए हुए चंद अलफाज़ के इखतेलाफ की तहकीक :

"معتق" : त के साथ, एक पहाड का नाम है। (मोजमुल बुलदान लिलहमवी २८६/८) बाज़ रिवायात में यह معنق न के साथ है (अलफितन लिनुऐम) और बाज़ रिवायत में معيق य के साथ है।

"الارنط" न के साथ है (अलफितन लिनुऐम) और बाज़ रिवायत में "الاريط" य के साथ है। (अलजामे उल कबीर २३८/१५, कामुस में भी)

"عموريه" अम्मुरिया, मुल्क रमु का एक शहर (मोअजमुल बुलदान ३५५/६)

इस जंग में आसमानी मदद के तौर पर नाज़िल होने वाले फरशितों की तअदाद में भी बहुत इखतेलाफ है। चुनांचे अलफितन और अलइशाआ की रिवायत में हज़रत जिबरईल, मीकाईल और इसराफील अलैहिमुस्सलाम तीनों का ज़िक्र है। और अलजामे उलकबीर में सिर्फ हज़रत जिबरईल और मीकाइल अलैहिमस्सलाम ही का ज़िक्र मिलता है। और कुछ रिवायतों में तीन लाख और कुछ रिवायतों में छे लाख फरशितों की तअदाद बताइ गइ है।

नोट : मुमकिन है कि इस रिवायत के बाज़ मज़ामीन से हैरत हो, लिहाज़ा यह याद रहे कि इस रिवायत की सनद को मशहुर मुतकल्लम फीह रुव्वात इबने लहीआ, हारिस आवर और मोहम्मद बिन साबित के सबब ज़ईफ करार दिया गया है, अलबत्ता इस बात का भी खयाल रखा जाए कि इस रिवायत के बहुत सारे मज़ामीन सहीह अहादीस से साबित हैं, जैसा कि पहले गुज़र चुका है।

मुहद्दिस नुऐम बिन हम्माद रह. की ज़िक्र की हुइ रिवायत के बाद अब इस सिलसिले में सहीह मुसलिम की चंद रिवायतें देखिए।

عن أبى هريرة رضي الله عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : لا تقوم الساعة حتى تنزل الروم بالأعماق أو بدابق، فيخرجُ اليهم جيش من المدينة من خيارِ أهل الأرضِ يومئذٍ، فاذا تصافّوا قالت الرومُ : خلّوا بيننا وبين الذين سُبوا منّا نقاتلهم، فيقول المسلمون : لا، والله لا نُخلّى بينكم وبين اخواننا، فيقاتلونهم فينهزم ثلثٌ لا يتوبُ اللهُ عليهم أبداً، ويُقتلُ ثُلُثٌ هم أفضلُ الشهداء عندالله، ويفتح الثُلُثُ لا يفتنون أبداً، فيفتتحون قسطنطنيه فبيناهم يقتسمون الغنائم قد علّقوا سيوفهم بالزيتون اذ صاحَ فيهم الشيطان أنّ المسيح قد خلفكم فى أهليكم، فيخرجون وذلك باطلٌ فاذا جاء والشام خرج، فبيناهم يعدّون للقتال يسوّون الصفوفَ اذ أُقيمت الصلوٰة، فينزل عيسىٰ بن مريم عليه الصلوٰة والسلام فأمّهم، فاذا راه عدوُّ اللهُ ذابَ كما يذوب المِلحُ فى الماء، فلو تركه لاندابَ حتى يهلك، ولكن يقتله الله بيده، فيُريهم دمهٗ فى حربته (मुसलिम किताबुल फितन ३९२/२, नं. २८९७) तरजुमा : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि कयामत उस वक्त तक काएम नहीं हो गी जब तक रूमो (इसाइयों) ने आमाक या दाबिक (हल्ब और अनताकिया के करीब मुल्के शाम के दो शहर) में पडाव ना डाल दिया हो। फिर इन रुमियों से मुकाबला के लिए मदीना मुनव्वरा से एक लशकर रवाना हो गा जो उस वक्त ज़मीन पर बसने वाले

तमाम मुसलमानों से अफज़ल हो गा। तो जब वह सफ लगा लें गे तब रूमी कहें गे कि तुम (मुसलमान) हम और हमारे कैदियों के बीच से हट कर हमें इन से किताल करने दो। तब मुसलमान कहें गे कि (यह ना मुमकिन है) बखुदा हम तुमहारे बीच और अपने भाइयों के बीच से हरगिज़ नहीं हटें गे। तब वह आपस में लड पडें गे। मुसलमानों के लशकर का एक तिहाइ हिस्सा भाग निकले गा, अल्लाह तआला इन भागने वालों को कभी मआफ नहीं फरमाएं गे। लशकर का दुसरा तिहाइ हिस्सा शहीद हो जाए गा, जिन का शुमार अल्लाह तआला के यहाँ (क़यामत में) अफ़ज़ल तरीन शहीदों में हो गा। बाकी बचे एक तिहाइ लशकर जीत जाए गा (अल्लाह की जानिब से उन पर यह बडी नेमत हो गी कि) यह जीतने वाले एक तिहाइ लोग कभी किसी बला और मुसीबत में नहीं हों गे। यह लोग कुसतुनतुनिया को फतेह कर लें गे। अभी यह हज़रात ज़ैतुन के दरखतों पर अपनी तलवारें लटका कर माले गनीमत तकसीम कर ही रहें हों गे कि अचानक एक शैतान चिल्ला कर कहे गा कि दज्ञाल तुम्हारी गैर मौजुदगी में तुम्हारे घरों पर जा पहुंचा है (यह खबर झुटी होगी) यह हज़रात (सब कुछ छोड छाड कर) निकल पडें गे, जब वह शाम पहुंचे गे तब दज्ञाल निकल चुका हो गा। यह लोग जंग की तय्यारी के लिए सफ लगा रहे हों गे तब नमाज़ का वक्त हो जाए गा। तब ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम (आसमान से) उतरें गे, फिर इन की इमामत फरमाएं गे। अल्लाह का दुशमन (दज्ञाल) इन्हें देख कर ऐसे ही पिघलने लगे गा जैसे पानी में नमक पिघलता है। अगर आप अलैहस्सिलाम बिलफर्ज़ उसे युंही छोड देते तो वह खुद बखुद पिघल कर हलाक हो जाता। लेकिन अल्लाह तआला उसे ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों कत्ल करें गे, फिर ईसा अलैहिस्सलाम लोगों को इस का खुन अपने नेज़े में दिखलाएं गे।

गुज़िशता रिवायत नुऐम और रिवायत मुसलिम में मुसलमान और रुमी इसाइयों के बीच हुइ सुलह के टुटने और जंग छिडने की मुखतसर वजह

युँ समझनी चाहिए कि उस से पहले के ज़माने में इसलामी लशकर और रूमी लशकर दोनों ने मिल कर फारस पर जो कामयाब हमला किया था उस की तकसीम गनीमत में कैदियों के बारे में इखतेलाफ हो जाए गा, कियुँ कि फारस के कैदियों में कुछ मुसलमान कैदी भी हों गे, जो या तो जंग के बाद इमान लाए हों गे या पहले ही मुसलमान थे, और मुलकी सियासत के पेशे नज़र ना चाहते हुए भी उन्हें जंग में शरीक होना पडा हो।

मुल्के शाम की फतेह के सिलसिले में मशहुर सहाबीए रसुल हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. से जो तफसीलात सहीह मुसलिम में मनकुल हैं वह हस्बे ज़ेल हैं।

عن يسير بن جابر قال : هاجت ريح حمراء بالكوفة فجاء رجل ليس له هجيرىٰ الا "يا عبدالله بن مسعود جاء ت الساعة" قال فقعد و كان متكئا، فقال : "ان الساعة لا تقوم حتى لا يقسم ميراث ولا يفرح بغنيمةٍ، ثم قال بيده هكذا ونحّاها نحو الشام فقال : عدُوّ يجمعون لأهل الشام ويجمعُ لهم اهل الاسلام، قلت : الروم تعنى؟ قال : نعم، قال : ويكون عند ذاكم القتال رِدّة شديدةٌ، فيشترط المسلمون شرطة للموت لا ترجع الا غالبة فيقتتلون حتى يحجزَ بينهم الليل، فيفيء هؤلاء وهؤلاء كل غير غالب وتفنى الشرطةُ، ثم يشترط المسلمون شرطة للموت لا ترجع الا غالبةً فيقتتلون حتى يحجز بينهم الليلُ، فيفى هولاء وهؤلاء كلّ غير غالب وتفنى الشرطةُ، ثم يشترط المسلمون شرطة للموت لا ترجع الا غالبة فيقتتلون حتى يُمسوا، فيفيء هؤلاء وهؤلاء كل غير غالب وتفنى الشرطةُ، فاذا كان اليوم الرابع نَهَدَ اليهم بقية اهل الاسلام، فيجعل الله الدائرة عليهم، فيقتتلون مقتلة اِمّا قال لا يرى مثلها واما قال : لم ير مثلها حتى أن الطائر ليمرّ بجنباتهم فما يخلفهم حتى يخرّ ميتاً، فيتعاد بنو الأب كانوا مائة فلا يجدونه بقى منهم الا الرجل الواحد، حتى يخرّ ميتاً، فيتعاد بنو الأب كانوا مائةً فلا يجدونه بقى منهم الا الرجل الواحد، فبأيّ غنيمةٍ

(मुसलिम ३९२/२ नं. २८९९) يفرح أو أيّ ميراث يقاسم" ... الخ

हज़रत युसैर बिन जाबिर फरमाते हैं कि एक मरतबा कूफा में बहुत तेज़ सुर्ख आंधी चली, एक शख्स जिस का तकयए कलाम "جاءت الساعة" (यानी कयामत आ गइ) था वह हज़रत अबदुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. के पास आ कर पुछने लगा, कयामत आगई? इस पर हज़रत अबदुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. ने फरमाया कि कयामत उस वक्त तक आए गी जब कि मीरास की तकसीम रुक जाए गी, और माले गनीमत से कोइ खुशी न हो गी, फिर हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. ने अपने हाथों से शाम की तरफ इशारा किया और फरमाया कि मुसलमानों से किताल के लिए दुशमन जमा हों गे और मुसलमान उन दुशमनों से किताल के लिए जमा हों गे। रावी कहते हैं कि में ने पुछा कि क्या (दुशमन से) आप की मुराद रुमी (नसारा) हैं? तो इब्ने मसऊद रज़ि. ने फरमाया कि हाँ, और कहा कि इस किताल के वक्त शुरु में शदीद हज़ीमत हो गी, तब अहले इसलाम लशकर की एक टुकडी को इस शर्त पर आगे भेजें गे कि या तो वह शहीद हो जाएं या फतेह याब हो कर लौटें। वह लडते रहें गे यहाँ तक कि रात हो जाए गी और दोनों लशकर बिना जीते या हारे वापस लौट जाएं गे और यह टुकडी शहीद हो जाए गी।

मुसलमान (दोबारा) लशर की एक टुकडी को इस शर्त पर आगे भेजें गे कि या तो शहीद हो जाएं या तो फतेह हासिल करें, वह भी रात होने तक लडते रहें गे और बिना जीते या हारे लौट आएं गे और यह टुकडी भी शहीद हो जाए गी।

मुसलमान (तीसरी मरतबा) इस शर्त पर लशकर की एक टुकडी को आगे भेजें गे कि वह शहीद हो जाएं या फतह हासिल कर के लौटें, वह शाम तक लडते रहें गे और बिना जीते या हारे लौट आएं गे और यह टुकडी भी शदही हो जाए गी।

फिर जब चौथा दिन आए गा तब बाकी मुसलमान उन की जानिब

उठ खडे हों गे तब अल्लाह तआला उन दुशमनों को शिकस्त दे गा, कियुँ कि यह एक ऐसी जंग हो गी इस तरह की जंग कभी ना देखी जाए गी या (इब्ने मसऊद रज़ि. ने युँ फरमाया कि) ऐसी जंग कभी भी ना देखी गइ हो गी, यहाँ तक कि एक पक्षी भी मरे हुए लोगों पर से गुज़रे गा तो वह उन्हें पार कर लेने से पहले ही मर जाए गा।

उस वक्त जब एक खानदान के लोग जब खुद को गिनें गे तो सिर्फ एक फीसद ज़िंदा बचा हुवा पाएं गे। तो भला वह किस माले गनीमत से शुख हों गे और किस को मीरास तकसीम करें गे ....

तंबीह : अगर चे उस वक्त मुल्के शाम के अकसर इलाकों में रुमियों का तसल्लुत हो गा लेकिन बाज़ जगहों (शायद दिमश्क और उस के अतराफ) मुसलमानों का तसल्लुत बरकरार रहे गा, और उन मुसलमानों के पास कुछ रुमी कैदी भी हों गे।

रिवायात में है कि शाम में जो इसाइ फौज हो गी वह सत्तर (७०) झंडों के नीचे हो गी और हर झंडे के नीचे १२,००० अफराद हों गे। कुल आठ लाक चालीस हज़ार (८,४०,०००) का लशकर हो गा, यह एक हिसाब है। बाज़ रिवायात में दुसरी तअदाद भी है।

चुनांचे इस सिलसिले में औफ़ बिन मालिक रज़ि. से एक तवील मरफु हदीस के ज़िम्न में मरवी है कि कयामत से पहले वाके होने वाली एक अलामत यह है कि तुम्हारे और रुमियों के बीच सुलह हो गी, फिर वह अहेद शिकनी कर के तुम्हारी तरफ ८० झंडों तले बढें गे, हर झंडे के तहत १२,००० सिपाही हों गे।

عن عوف بن مالك رضي الله عنه مرفوعاً فى حديث طويل، فيه "والسادسة هدنة تكون بينكم وبين بنى الأصفر، فيسيرون اليكم على ثمانين غايةً، قلت : وما الغاية؟ قال : الرايةُ، تحت كل رايةٍ اثنا عشر ألفا، فُسطاطُ المسلمين يومئذٍ فى أرضٍ يقالُ لها الغوطة فى مدينة يقال له

دمشـــق (अहमद, हस्ब तरतीबिल फतीह अर्रब्बानी २४/२४,२५) तुम्हारे और रुमियों के बीच सुलह हो गी, वह तुम्हारी तरफ ८० झंडों तले बढें गे, हर झंडे के नीचे १२,००० सिपाही हों गे, उस वक्त मुसलमानों का पडाव गौता नाम की ज़मीन पर हो गा जो दिमश्क में है।

मज़कुरा बाला दोनों रिवायतों से रुमी लशकर की तअदाद ९६,०००० मालुम होती है। मुल्क शाम की फतह के बाद हज़रत महदी रज़ि. इसाइयों के मरकज़ और अकसरयती इलाका (रुम), इटली वगैरा की फतेह के लिए रवाना हों गे।

फतेह कुसतुनतुनिया :

अल्लामा इबने जरीर तबरी रह. अपनी माया नाज़ तफसीर में आयते करीमा "وَمَن أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ، لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ...الخ की तफसीर में फरमाते हैं।

आयते करीम में मुराद वह रुमी हैं जिन्हों ने बैतुल मुकद्दस को वीरान किया और "لهم فی الدنیا خزيٌ" की तफसीर करते हुए फरमाते हैं कि इस से महदी रज़ि. का कुसतुनतुनिया (स्तंबोल) को फतेह करना और रुमियों को कत्ल करना मुराद है। (तफसीर तिबरी ५८४/१)

हज़रत महदी रज़ि. युरप वगैरा को फतेह करने के बाद कुसतुनतुनिया की तरफ मुतवज्ज़े हों गे, अंदाज़ा यह है कि कुसतुनतुनिया पर इसाइयों का गासिबाना कबज़ा हो गा। कुसतुनतुनिया एक जज़ीरा नुमा शहर है, अहादीस से यह अंदाज़ा होता है कि हज़रत महदी रज़ि. के तशरीफ ले जाने के वक्त कुसतुनतुनिया के चारों तरफ फसीलैं (शहर की दीवारैं) हों गी।

फतेह कुसतुनतुनिया के सिलसिले में सही मुसलिम शरीफ किताबुल फितन में जो हदीस मुबारक वारिद है वह हस्बे ज़ेल है।

عن أبي هريرة رضي الله عنه ان النبي صلى الله عليه وسلم قال : "هل

سـمـتـعـم بـمـدينةٍ جانبٌ منها فى البر وجانب منها فى البحر، قالوا : نعم يا رسول الله، قال : لا تقوم الساعة حتى يغزوَها سبعون ألفا من بنى اسحاق، فـاذا جاء وها نزلوا، فلم يقاتلوا بسلاحٍ ولم يرموا بسهمٍ، قالوا لآ اِلٰهَ الّا الله والـلـهُ اكبـر فيسـقُـطُ أحـدُ جانبيها، قَالَ ثورٌ : لا أعلمه الا قال : الذى فى البـحـر، ثُمّ يقولون الثانيةَ لا اِلٰه الّا الله واللهُ أكبر فيسقُطُ جانبها الآخر، ثم يـقـولـون الـثـالثة لا الٰـه الا الـلـه والله اكبر فيُفرّج لهم، فيدخلونها فيغنموا، فبيـنـمـاهـم يـقتسـمـون الـمغانمَ اِذْ جاء هم الصريح فقالَ : اِنَّ الدجّالَ قد خـرج، فيتـركـون كـل شـىءٍ ويـرجعون" (मुसलिम ३९६/२ नं. २९२०)

तरजुमा : रसुलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने हज़राते सहाबा रज़ि. से फरमाया कि क्या तुम उस शहर के मुतअल्लिक कुछ जानते हो जिस की एक जानिब खुशकी और दुसरी जानिब समंदर है? सहाबा (रज़ि.) ने कहा : जी हाँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : कयामत उस वक्त तक नहीं आए गी जब तक कि बनु इसहाक या बनु इसमाईल के सत्तर हज़ार मुसलमान उस पर चढाइ नहीं करें। तो जब यह मुसलमान इस शहर पर पहुंचे गे और वहाँ पडाव डालें गे तो ना हथियार से किताल करें गे और ना तीर चलाएं गे। बस यह मुसलमान ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर का नारा लगाएं गे, इस नारे की बरकत से शहर की एक फसील ज़मीन पर गिर पडे गी, सौर बिन यज़ीद रह. रावी कहते हैं कि मेरी याद दाश्त के मुताबिक यह समुनदर वाली सिम्त के मुतअल्लिक है, फिर मुसलमान दोबारा ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर का नारा बुलंद करें गे तो दुसरी फसील भी गिर जाए गी, फिर तीसरी मरतबा ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर का नारा लगाएं गे तो मुसलमानो के लिए रास्ता खुल जाए गा और वह शहर में फातेह बन कर दाखिल हों गे। फतेह के बाद वह माले गनीमत तकसीम कर रहें हों गे तो शैतान आवाज़ लगाए गा कि दज्जाल ज़ाहिर हो चुका है। इस खबर को सुन कर मुसलमान सब छोड छाड कर (हिफाज़त की नियत से) अपने घर लौट जाएं गे।

फायदा : इस रिवायत में आए हुए अलफाज़ ''बनु इसहाक के सत्तर हज़ार लोग (मुसलमान)'' के बारे में कुछ मोहद्दिसीन की राए यह है कि दर असल यहाँ बनु इसमाईल मुराद हैं, ताहम मुसलिम शरीफ के तमाम नुसखों में बनु इसहाक के लोगों में से ही आया है।

अल्लामा नववी रह. लिखते हैं। قال القاضى : كذا هو فى جميع اصول صحيح مسلم "من بنى اسحاق" قال : قال بعضهم : المعروف المحفوظ "من بنى اسماعيل" وهو الذى يدل عليه الحديث وسياقهُ لأنه انما أراد العرب وهذه المدينة هى القسطنطنية (नववी, मुसलिम शरीफ के हाशिए पर ३९६/२) यानी बनु इसहाक के लोगों में से का शब्द ही मुसलिम शरीफ के तमाम नुसखों में आया है, अलबत्ता मशहुर और मुसतनद बात यह है कि मुराद बुन इसमाईल हों चुंकि इसी मानी पर हदीस की दलालत भी है और सियाके हदीस का मनशा भी यही है चुंकि इन से मुराद अरब हैं और मदीन (शहर) से मुराद कुसतुनतुनिया है।

इस सिलसिले में यह तावील भी पेश की जाकसती है कि बनु इसमाइल के लिए बनु इसहाक का शब्द लाने की वजह यह हो सकती है कि हज़रत इसहाक बनु इसमाईल के चचा हैं और ''किसी आदमी का चचा उस के बाप के बराबर का दरजा रखता है'' के मुताबिक चचा की तरफ निसबत सहीह है।

और अगर हदीस को उस के ज़ाहिरी मानी पर ही रखें तो बनु इसहाक से मुराद वह अफराद हों गे जो इस ज़माना में मुसलमान हो कर महदी रज़ि. के लशकर में शामिल हो गए हों गे जैसा कि पहले की रिवायतों से मालुम हो चुका है।

रिवायात से मालुम होता है कि दज्जाल के खुरुज की अफवाह की तहकीक बडे पैमाने पर की जाए गी, यहाँ तक कि हज़रत महदी रज़ि. एक जमाअत को इस काम के लिए मुकर्रर फरमाएं गे, चुनांचे हदीस में है। فيبعثون

عشرَ فوارس طليعة، قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انى لاعرف اسمائهم واسماء آبائهم وألوانَ خيولهم، هم خيرُ فوارس على ظهر الأرض يومئذٍ أو (قال) من خير فوارس على ظهر الأرض يومئذٍ (मुसलिम ३९२/२ नं. २८९९) हज़रत महदी रज़ि. दस सवारों का एक दसता इस खबर की तहकीक के लिए आगे भेजें गे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं उन के नाम, उन के बाप दादा के नाम और उन केघोडों के रंग तक जांता हुँ और वह उस वक्त ज़मीन पर सब से बहतर लोग हों गे।

तहकीक करनेपर पता चले गा कि यह खबर सहीह नहीं थी, लेकिन जब हज़त महदी रज़ि. अपने लशकर के साथ मुल्के शाम पहुंचे गे तो दज्जाल हक़ीक़त में निकल चुका हो गा, चुनांचे इस हदीस में है "فاذا جاء والشام خرج" (मुसलिम ३९२/२ नं. २८९९)

नोट : इन ही फुतुहात के दौरान हज़रत महदी रज़ि.(Vatican City) كنيسة الذهب तशरीफ ले जाएं गे। यहाँ वह अज़ीम खज़ाने महफुज़ है जो कैसरे रुम ने बनी इसराइल से बैतुल मुकद्दस फतेह कर के हासिल किए थी, जिसे अपने दौर में कैसरे रुमे एक लाख सत्तर हज़ार गाडियों पर लाद कर ले गया था।

हज़रत महदी रज़ि. इन ही खज़ानों को एक लाख सत्तर हज़ार कशतियों पर लाद कर बैतुलमुकद्दस लाएं गे और इसी जगह अल्लाह तआला अव्वलीन और आखरीन को जमा फरमाएं गे।

(तफसील के लिए देखिए अत्तज़किरा लिलकुरतबी ६५३, तफसीर कुरतुबी २२२/१०)

नुज़ुले इसा और वफाते महदी

कयामत की निशानियों में से एक बहुत अहम निशानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ुल भी है। यह एक ऐसा तवील और अहम बाब है कि

जहाँ मोहद्दिसीन ने अपनी किताबों में इन के मुसतकिल अबवाब काएम किए हैं वहीं दीगर अहले इल्म और मुसतशरिकीन ने भी इस मज़मुन पर अपना कलम उठाया है।

बहर हाल यहाँ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ऐन नुज़ुल के वक्त चंद अहम वाकेआत बडे इखतेसार के साथ तरतीब से नक्ल कर देना मुनासिब मालूम होता है, ता कि हज़रत इसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में होने वाले हज़रत महदी रज़ि. के रौशन कारनामे और आप के मकाम व मरतबा की सहीह तसवीर और उस का नकशा मोतमद रिवायात और मुसतनद तारीखी नुकुल की रौशनी में हमारे सामने आ सके।

दज्जाल पहली बार शाम (सीरिया) और इराक के दरमियान ज़ाहिर हो गा, लेकिन उस वक्त लोगों में ज़्यादा मशहुर नहीं होगा, फिर दोबारा असबेहान के एक मुकाम यहुदिया से नमुदार हो गा, और वहाँ वह चारों तरफ मशहुर हो जाए गा और फितना बर्पा कर दे गा।

दज्जाल के ज़ाहिर होने की जगह के बारे में अहादीस में मुखतलिफ मकामात का ज़िक्र मिलता है, चुनांचे शाम और इराक के बीच, खुरासान, हुज़ व करमान और असबेहान का तज़केरा आता है।

सहीह मुसलिम की रिवायत में शाम और इराक के बीच की एक घाटी का ज़िक्र है। عن نواس بن سمان رضي الله عنه مرفوعاً انه (الدجال) خارجٌ خَلّةً بين الشام والعراق (मुसलिम ४०१/३ नं. २९३७) यानी दज्जाल शाम और इराक के बीच की घाटी से नमुदार हो गा।

अलफतहुर्रब्बानी में हज़रत अबुबकर सिद्दीक रज़ि. की एक रिवायत में खुरासान का ज़िक्र है। عن أبي بكر رضي الله عنه قال: حدثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم أنّ الدّجال يخرجُ من أرضٍ بالمشرق يقال لها خراسان (अलफतहुर्रब्बानी ७२/२४) यानी दज्जाल मशरिक में खुरासान से ज़ाहिर हो गा।

अलफतहुर्रब्बानी ही में हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. से हुज़ुकरमान का ज़िक्र इस तरह मिलता है। وعن ابى هريرة رضي الله عنه قال : سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : لينزلنّ الدجال حوزو كرمان (अलफतहुर्रब्बानी ७३/२४) इब्ने इसहाक मदलक - यानी दज्ज्ञाल हुज़ुकरमान में उतरे गा।

मज़कुरा बाला रिवायत में से पहली तीनों रिवायतें सहीह है अलबत्ता चौथी रिवायत में रावी इब्ने इसहाक के मुदल्लस होने के सबब ज़ोफ पाया जाता है।

अब इखतेलाफ का दफीआ किस तरह मुमकिन है कि दज्ज्ञाल का खुरुजे अव्वलीन इराक और शाम के बीच की घाटी से हो गा लेकिन उस वक्त शोहरत नहीं पाए गा चुंकि उस के आवान व अनसार की बडी जमाअत करया यहुदिया में उस की मुनतज़िर हो गी। फिर वह खुरासान में वाके मकामे इसबेहान की एक बसती यहुदिया जा कर अपने हामियों के हमराह सारी दुनया का दौरा करे गा, और इस मकसद से वह हुज़ुकरमान में पडाव डाले गा, चुनांचे हदीस में لينـزلن الدجال حوزو كرمان के शब्द से मालुम होता है कि यह उस के ठहरने की जगह हो गी, और इस बार उस का खुरुज और उस का शर सारे आलम में मशहु हो जाए गा।

अब दज्ज्ञाल पुरी दुनया का तुफानी दौरा करे गा, सिर्फ चालीस दिन दुनिया में रहे गा, एक दिन एक साल के बराबर, दुसरा दिन एक महीने के बराबर और तीसरा एक हफते के बराबर होगा, बाकी दिन सब जैसे होते हैं वैसे ही हों गे।

दज्ज्ञाल के मानने वालों में अकसर यहुद हों गे।

हज़रत महदी रज़ि. दिमशक पहुंच कर ज़ोर व शोर से जंग की तय्यारियां शुरु कर दें गे, लेकिन सुरते हाल पुरी दज्ज्ञाल के मुवाफिक हो गी, चुंकि उस के पास ज़बरदस्त माद्दी कुव्वत हो गी। हज़रत महदी रज़ि. और

आप के चाहने वाले दिमश्क में रह कर जंग की तय्यारियों में मशगुल हों गे, आम तौर पर आप और आप के साथी जामा अमवी में नमाज़ अदा करें गे।

उस पुर फितन दौर में मुमिनीन उर्दन (जॉर्डन) और बैतुलमुकद्दस (यरोशलम) में जमा हो जाएं गे, पहले मुसलमान उर्दन की एक वादी उफीक में सिमट जाएं गे। मुसनफ इब्ने अबी शैबा में है : فينحار (المسلمون) الى عقبة أفيق (१३७/१५) - कि (मुसलमान) उलैक नामी वादी में सिमट जाएं गे।

बाज़ रिवायतों से तो यहाँ तक पता चलता है कि उस दौर के अल्लाह और कयामत पर इमान लाने वाले सभी लोग तकरीबन उर्दन की उस वादी में मौजुद हों गे। وكل واحد يؤمنُ بالله واليوم الآخر ببطن الاردن (कनजुल उम्माल ३१५/१४ नं. ३८७९१ व मुसतदरक लिलहाकिम ५३७/४ नं. ८५०७)

मुसलमान अखीर में बैतुल मुकद्दस (यरोशलम) के एक पहाड जबलुद्दुखान पर जमा हों गे।

दुसरी तरफ दज्ज़ाल दुनया भर में हंगामा आराइ कर के दिमश्क पहुंचे गा, और इस पहाड के दामन में पडाव डाल कर मुसलमानों की एक जमाअत का मुहासरा कर ले गा।

فيفر الناس الى جبل الدخان وهو بالشام، فيأتيهم فيُحاصرهم، فيشدّ حصارهم، ويجهدهم جهداً شديداً (अत्तज़केरा लिलकुरतुबी ७५४ अहमद ३१७/३१८/३) यानी लोग मुल्के शाम में जबले दुखान की तरफ भाग निकलें गे, तब दज्ज़ाल वहाँ आ कर उन को घेर ले गा, और उन्हें सख्त मुशक्कत में डाल दे गा।

इस मोहासरे की वजह से मुसलमान सख्त मुशक्कत और फक्र व फाका में मुबतेला हो जाएं गे, यहाँ तक कि बाज़ लोग अपनी कमान की तांत जला कर खाने पर मजबुर हों गे। जब दज्ज़ाल का यह मोहासरा बहुत तवील

हो जाए गा तो मुसलमानों के अमीर (हज़रत महदी रज़ि.) इन से कहें गे कि अब इस सरकश से जंग करने में पस व पेश में क्युँ मुबतेला हो? और वह उन को फतेह या शहादत पर आमादा करें गे, लोग सुबह फजर की नमाज़ के बाद इस फैसला कुन जंग का पक्का इरादा कर लें गे।

यह रात सख्त तारीक होगी, लोग जंग की तय्यारियों में मसरुफ हों गे। इस सुबह की तारीकी में मुसलमान फजर की नमाज़ की तय्यारी कर रहे हों गे। हज़रत महदी रज़ि. फजर की नमाज़ पढाने के लिए आगे बढ चुके हों गे, और नमाज़ की इकामत भी कही जा चुकी हो गी, अचानक किसी की आवाज़ आए गी कि ''तुम्हारा फरयाद रस आ पहुंचा'' लोग इधर उधर देखें गे तो उन की नज़र हज़रत इसा अलैहिस्सलाम पर पडेगी, जो दो हरी चादरें पहने हुए दो फरिशतों के कांधों पर हाथ रखे हुए दिमश्क की जामा मस्जिद के सफीद मीनारे पर नाज़िल हों गे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सीढी मंगवा कर मीनारे से उतरें गे। فبينما هو كذلك أذ بعث الله المسيح بن مريم، فنزل عند المنارة البيضاء شرقى دمشق بين مهرودتين واضعاً كفيه على أجنحة ملكين (अत्तज़केरा ७०२) यानी मुसलमान इसी हालत में हों गे कि अचानक अल्लाह तआला ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम को मशरिकी दिमश्क से सफेद मिनारे पर उतारें गे, वह दो फरशितों के परों (कंधों) पर अपने हाथ रखे हुए हों गे।

जिस जमाअत पर आप का नुजुल हो गा वह उस ज़माने के सालेह तरीन ज़न व मर्द की जमाअत होगी (एक रिवायत में उन की तअदाद आठ सौ मर्द और चार सौ औरतैं बतलाइ गइ हैं) عن ابى هريرة رضي الله عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ينزل عيسىٰ بن مريم على ثمان مائة رجل وأربع مائة امرأةٍ خيار من على الأرض يومئذٍ وكصلحاء من مضىٰ (किताबुत्तज़केरा ७६२ और कनज़ुल उम्माल नं. ३८८६३) हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. से मरवी है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फरमाया : ईसा इबने मरयम अलैहिस्सलाम ऐसे आठ सौ मर्द और चार सौ औरतों के बीच नाज़िल हों गे जो उस वक्त ज़मीन पर बसने वाले तमाम लोगों में बेहतरीन लोग हों गे, और पिछले दौर से सालिहीन के हम मरतबा हों गे।

हज़रत महदी रज़ि. हज़रत इसा अलैहिस्सलाम को इमामत के लिए बुलाएं गे और जा नमाज़ छोड कर पीछे हटने लगें गे तो हज़रत इसा अलैहिस्सलाम उन की पीठ पर हाथ रख कर फरमाएं गे कि तुम ही नमाज़ पढाओ कियुँ कि इस की इकामत तुम्हारे लिए कही जा चुकी है, और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इमामत से इनकार कर दें गे और कहें गे कि यह इस उम्मत का एज़ाज़ है कि इस के बाज़ लोग बाज़ के अमीर हैं।

عن ابی امامة رضي الله عنه مرفوعاً فرجع ذلك الامامُ ينكصُ يمشى القَهُقرىٰ ليتقدّم عيسىٰ يصلى بالناس، فيضعُ عيسىٰ يدهٗ بين كتفيه ثم يقول : تقدَّم فصلِّ فانها لك اُقيمت (इब्ने माजा, नं. ४०७७)

चुनांचे उस वक्त की नमाज़ हज़रत महदी रज़ि. ही पढाएं गे, और हज़रत इसा अलैहिस्सलाम भी यह नमाज़ उन के पीछे अदा करें गे।

इस मुकाम पर यह भी याद रहे कि इमामते सलात के बारे में मज़कुरा रिवायत के बर अक्स हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. से ईसा अलैहिस्सलाम की भी इमामत का तज़केरा मिलता है। عن ابی هريرة رضي الله عنه قال : سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : ينزل عيسى ابن مريم فيؤمُّهم (सिआया १८४/३) इसी तरह فينزل عيسىٰ عليه السلام فأمّهم (मुसलिम नं. २८९७) यानी हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम लोगों की इमामत फरमाएं गे।

इन रिवायतों का तआरुज़ दुर करते हुए अल्लामा कशमीरी रह. फरमाते हैं : पहली नमाज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत महदी रज़ि. के पीछे पढें गे। चुंकि उस की इकामत उन ही के लिए कही हुइ हो गी। (फैज़ुल बारी ४७,४७/४)

قد رُوی أنّہٗ يصلّی وراء امام المسلمين । आरिज़तुल अहवज़ी में है
خضوعاً لدين محمدٍ صلى الله عليه وسلم وشريعته واتباعاً واسخاناً
لأعيُنِ النصارى واقامة الحُجّة عليهم (٧٨/٩) के ईसा अलैहिस्सलाम आप
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन व शरीअत के सामने इनकेसार और ताबेदारी
के लिए मुसलमानों के इमाम के पीछे नमाज़ अदा करें गे, और यह भी वजह है
कि नसारा खुद इस बात का मुशाहदा कर लें और उन पर हुज्जत काएम हो
जाए।

अल्लामा इब्ने हजर असकलानी रह. लिखते हैं : وفى صلاة عيسىٰ
خَلْفَ رجلٍ مِنْ هذه الامة مع كونه فى آخر الزمان وقُرب قيام الساعة
دلالةٌ للصحيح من الأقوال، أن الارضَ لا تخلوا عن قائم لله بحُجّةٍ
(फतहुल बारी ६११/६) कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इस उम्मत के
एक शख्स के पीछे नमाज़ अदा करने में इस बात की सरीह दलील है कि यह
सर ज़मीन अल्लाह तआला के अहकाम के काएम करने वालों से हरगिज़ खाली
नहीं हो गी, बा वजुद यह कि यह वाकेआ उस आखरी दौर का है जब कयामत
बिलकुल करीब हो गी।

लेकिन इस पहली नमाज़ के बाद फिर हज़रत ईसा अलैस्सिलाम खुद
इमामत करने लगें गे और हज़रत महदी रज़ि.उन के पीछे नमाज़ पढने लगें गे।

चुनांचे यही मज़मुन हज़रत कअब रज़ि. की रिवायत से साबित होता
है : عن كعب رضي الله عنه مرفوعاً قال : فينظرون فاذا بعيسىٰ بن مريم،
قال : وتقام الصلوه فيرجع امامُ المسلمين المهدى، فيقول : عيسىٰ : تقدّم
فلك أُقيمت الصلوة، فيُصلى بهم ذلك الرجل تلك الصلوٰة، قال : ثم يكون
عيسىٰ اماماً بعده (अलफितन ३९३ नं. १३३६) यानी लोग देख रहे हों गे
कि ईसा इबने मरयम अलैहिस्सलाम उतर रहे हैं, उस वक्त जमाअत खडी हो
रही हो गी और मुसलमानों के इमाम हज़रत महदी रज़ि. पीछे हटने लगें गे तो
ईसा अलैहिस्सलाम कहें गे कि आप आगे बढ कर नमाज़ पढाइए, आप ही के

लिए तकबीर कही जा चुकी है, तो वह शख्स यानी हज़रत महदी रज़ि. वह नमाज़ पढाएं गे,उस के बाद फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही इमाम रहें गे।

मुल्ला अली करी रह. अपनी किताब शरहुल फिकहुल अकबर में लिखते हैं कि : الأصح أن عيسىٰ يصلى بالناس، ويقتدى به المهدى (१३७) यानी सहीह बात यही है कि (पहली नमाज़ के बाद) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही इमाम हों गे और हज़रत महदी रज़ि.उन की इकतेदा करें गा।

बहरहाल फजर की नमाज़ के बाद तफसीली गुफतगु और मशवरे हों गे, फिर दज्ञाल और उस के मुत्तबेईन के साथ जंग का सिलसिला शुरु हो गा।

दज्ञाल जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को देखे गा तो हैरान हो कर भाग खडा हो गा। तकरीबन सत्तर हज़ार यहुदी उस के साथ हों गे। दज्ञाल दिमश्क से निकल कर इसराईल की तरफ भागे गा। उफैक की घाटी से गुज़रे गा और शहर लुद्द पहुंचे गा लेकिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत महदी रज़ि. की फौज उस का तआकुब कर रही हो गी। दज्ञाल जब लुद्द में घुसना चाहे गा तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस के करीब पहुंच जाएं गे। दज्ञाल की यह हालत हो गी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कुछ ना करें तो भी वह नमक की तरह घुल कर खत्म हो जाए। लेकिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने हथियार से उस को खत्म करें गे। दज्ञाल के हमनवा यहुदियों का भी कत्ल हो गा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत महदी रज़ि. दज्ञाल के बाद दुनया के बाकी मांदा इलाकों की फतेह की तरफ मुतवज्जह हों गे और सारी दुनया में इसलाम को काएम फरमाएं गे। अल्लाह तआला इसलाम को हर एतेबार से गालिब फरमाएं गे। और नबी करीम सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की पेशीन गोइ पुरी हो गी जिस की तरफ इस हदीस में इशारा है। عن المقداد رضي الله عنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : لا يبقى على ظهر الأرض بيت مدر ولا وبر الا أدخله الله كلمة الاسلام بعز عزيز وذلِّ

ذليل، وما يعزّهم الله فيجعلهم من أهله أو يذِلّهم فيدينون لها، قلتُ: فيكونُ الدين كله لله (अहमद २३६/२९, नं. २३८१४) हज़रत मिकदाद रज़ि. से मरवी है कि उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि रूए ज़मीन पर कोइ पक्का और कच्चा मकान बाकी ना रहे गा मगर यह कि अल्लाह तआला उस में इसलाम का कलमा दाखिल करे गा। किसी को इज़्ज़त दे कर और किसी को ज़िल्लत दे कर। बहर हाल अल्लाह तआला जिस को इज़्ज़त देना चाहें गे उन्हे खुद बखुद मुसलमान होने की तौफीक दे गा और जिन्हें ज़लील करे गा वह भी आखिर में दीन को इखतियार कर लें गे। में ने कहा तब दीन सारा का सारा अल्लाह ही का हो जाए गा।

खुलासा यह है कि हज़रत महदी रज़ि. ज़ुहूर के बाद सात साल तक इसाइयों के साथ मुखतलिफ जंगों में मशगुल हों गे, और आठवां साल दज्जाल के साथ मुकाबला आराइ में, और ९वाँ साल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ गुज़रे गा। उस वक्त पुरी दुनया में इमान ही इमान की बहार हो गी। माद्दी फरावानी की भी कसरत हो गी। कत्ले दज्जाल के बाद हज़रत महदी रज़ि. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ मुखतलिफ इलाकों का दौरा फरमाएं गे। और जिन लोगों को दज्जाल की वजह से तकलीफ पहुंची थी उन को अज्र की बशारत और तसल्ली भी दें गे और दाद व दहिश के ज़रीए उन का दिल भर दें गे।

वफाते हज़रत महदी रज़ि.

हज़रत महदी रज़ि. की वफाति के सिलसिले में गालिब बात तो यही है कि आप किसी जंग में शहीद नहीं हों गे अलबत्ता आप रज़ि. के ज़ुहूर के ९वें साल (एक कौल के मुताबिक) कुल ४९ बरस की उमर में आप रज़ि. की वफात हो गी। लेकिन यह वफात किस शहर में हो गी और आप रज़ि. कहाँ दफ्न हों गे इस का तज़केरा नहीं मिलता। सुनन अबु दाऊद में सिर्फ इतना ही

मिलता है ثم يتوفى ويصلى عليه المسلمون (अबुदाऊद ५८९/२, नं. ४३८६) यानी आप रज़ि. का इनतेकाल हो गा और मुसलमान आप रज़ि. की नमाज़े जनाज़ा अदा करें गे।

इस रिवायत के रिजाल के बारे में अलऔनुल माबुद में है कि : ورجاله رجال الصحيح لا مطعَنَ فيهم ولا مغمز (२५५/११) यानी इस रिवायत के रिजाल सहीहैन ही के हैं, इन में जरह और तअन की कोइ गुंजाइश नहीं है।

चुनांचे अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह. अरअरफुश्शजी में फरमाते हैं ويُبعث المهدى لاصلاح المسلمين، فبعدَ نزول عيسىٰ عليه السلام يرتحل المهدى من الدنيا الى العقبى (العرف الشذى على هامش الترمذى ٢/٤٧ حسب النسخة الهندية) यानी हज़रत महदी रज़ि. मुसलमानों की इसलाह की गरज़ से मबउस हों गे, चुनांचे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ुल के बाद आप रज़ि. दुनया से उकबा की तरफ रिहलत कर जाएं गे।

और ज़ाहिर यही है कि आप रज़ि. की जनाज़े की नमाज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पढाएं गे।

यह बात तो मुसल्लम है कि जुहूर के बाद हज़रत महदी रज़ि. दुनया में तकरीबन ९ साल रहें गे, अलबत्ता जुहूर के वक्त आप की उमर चालीस साल की हो गी। यह बात मुखतलिफ किताबों में लिखी तो है लेकिन हमें कोइ सहीह रिवायत नहीं मिल सकी, अलबत्ता कुछ ज़ईफ रिवायात में तअय्युन मिलता है।

أخرج ابو نعيم عن أبى امامة رضي الله عنه مرفوعاً فقال له رجلٌ : يا رسول الله صلى الله عليه وسلم من امامُ الناس يومئذٍ؟ قال صلى الله عليه وسلم : من ولدى ابنُ أربعين سنة.. الخ (अलहावी २२/२) हज़रत अबु नुऐम रज़ि. से मरफुअन मनकुल है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक शख्स ने

(अखीर ज़माने के मुतअल्लिक) पुछा कि उस वक्त लोगों का इमाम कौन हो गा? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी औलाद में से महदी नामी शख्स हो गा जो उस वक्त चालीस साल का हो गा।

मुखतसर हयाते ईसा अलैहिस्सलाम

हज़रत महदी रज़ि. के इनतेकाल के बाद हुकुमत का मुकम्मल इनतेज़ाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम संभालें गे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चालीस साल दुनया में कयाम फरमाएं गे, आप शादी भी करें गे और औलाद भी हो गी। आप ही के ज़माने में याजुज माजुज का भी वाकेआ पेश आए गा। और आखिर में मुकअद नामी एक शख्स को आप अपना जा नशीन बना कर दुनया से तशरीफ ले जाएं गे यानी दुना में आने के बाद अब आप की वफात हो गी। रौज़ए अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीब तदफीन हो गी। फिर कयामत की आखरी अलामतों का जुहूर हो गा।

قال كعب الأحبار : ان عيسىٰ عليه السلام يمكثُ فى الأرض أربعين سنة، وقال : وأنّ عيسىٰ عليه السلام يتزوج بأمرأة من ال فُلان، ويرزق منها ولدين فيسمّى أحدهما محمداً والآخر موسىٰ، ويكون النَاس معه على خيرٍ وفى خير زمانٍ، وذلك أربعين سنة، ثم يقبض الله روح عيسىٰ ويذوق الموت ويدفن الى جانب النبي صلى الله عليه وسلم فى الحجرة، ويموت خيار الأمة ويبقى شرارُها فى قلّةٍ من المؤمنين

(अत्तज़केरा लिलकतबी ७६३)

तरजुमा : हज़रत कअब रज़ि. फरमाते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दुनया में चालीस साल रहें गे। वह किसी कबीले की औरत से निकाह करें गे, उस औरत के दो बेटे भी हों गे जिन का मोहम्मद और मुसा नाम होगा, आप अलैहिसकसलाम के हमराह लोग भलाइ में और भले ज़माने में रहें गे, यह चालीस साल मुद्दत हो गी, फिर अल्लाह तआला हज़रत ईसा

अलैहिस्सलाम की रुह कब्ज़ फरमा लें गे, इस तरह ईसा अलैहिस्सलाम को भी मौत आजाए गी, और वह हुजरए मुबारक में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलु में दफन हों गे, उम्मत के सालिहीन भी इस दुनया से रुखसत हो जाएं गे और बदकिरदार लोग बाकी रह जाएं गे।

इसी सिलसिले में तौरैत की एक आयत हज़रत अबदुल्लाह इब्ने सलाम रज़ि. से मंकुल है। : عن يوسف بن عبدالله بن سلام عن أبيه قال : نجدُ فى التورلة أن عيسىٰ ابن مريم يُدفن مع النبي صلى الله عليه وسلم (अलफितन नं. १३३८) कि हम ने तौरैत में लिखा देखा कि ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलु में मदफुन हों गे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दुनया में चालीस साल तक ज़िंदा रहने के मुतअल्लिक मुसनद अहमद और मसन्नफ अब. रज़्ज़ाक में भी रिवायात आइ हैं। عن عائشة رضي الله عنها قالت : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : يخرج الدجالُ وينزل عيسىٰ فيقتله ثم يمكُثُ عيسىٰ فى الأرض أربعين عاماً اماماً عادلاً وحكما قسطاً (मुसनद अहमद नं. २४४६७, इब्ने अबी शैबा १३४/१५ नं. १९३२०) तरजुमा : हज़रत आइशा रज़ि. फरमती हैं कि अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि : दज्ज़ाल के ज़ाहिर होने के बाद ईसा अलैहिस्सलाम उतरें गे, वह दज्ज़ाल को कत्ल करें गे, फिर रुए ज़मीन पर चालीस साल तक आदिल इमाम और मुनसिफ हकम बन कर रहें गे।

عن أبى هريرة رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ينزل عيسىٰ بن مريم ويقتل الدجال ويمكث أربعين عاماً، يعمل فيهم بكتاب الله تعالىٰ وسنتى ويموت ويستخلفون بأمر عيسىٰ رجلاً من بنى تميم يقال له المقعد، لم يأت على الناس ثلث سنين حتى يرفع القرآن من صدور الرجال ومصاحفهم (अलहावी ८२/३) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम आसमान से

उतर कर दज्जाल को कत्ल करें गे, और चालीस साल तक लोगों में किताब व सुन्नत को नाफिज़ करें गे, इस के बाद उन की वफात हो गी। लोग बनी तमीम के मुकअद नामी एक शख्स को उन का काएम कुमाम बना दें गे, तीन साल के कलील अरसे में ही लोगों के सीनों और मसाहिफ से कुरआन करीम उठा लिया जाए गा।

नोट : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, इन की मुकम्मल हयात, दुनया में उन का दोबारा नुजुल, दज्जाल का कत्ल, इस के लिए हमारी दुसरी किताब नुजुले ईसा का मुतालेआ करें।

बिल आखिर जब अल्लाह तआला को कयामत काएम करना हो गी तो एक खुशगवार हवा चले गी जो तमाम मोमिनीन की रुह कब्ज़ कर ले गी, और फिर बचे हुए बदतरीन लोगों पर कयामत वाके हो गी, और सुर फुंक दिया जाए गा।

عن عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه ثم يبعث الله ريحاً كريح المسك مسُّها مسُّ الحرير، فلا تترك نفساً فى قلبه مثقال حبةٍ من الايمان الّا قبضته، ثم يبقى شرارُ الناس، عليهم تقوم الساعة (मुसलिम, हदीस नं. १९२४)

यानी अल्लाह तआला रेशम की सी मुलाएम हवा चला कर तमाम मुसलमानों की रुह कब्ज़ कर लें गे, फिर बदतरीन लोगों पर कयामत काएम हो गी।

हज़रत महदी रज़ि. के अहम कारनामे

(१) आप ज़मीन को अद्ल व इनसाफ से भर दें गे जैसा कि वह पहले जुल्म व जौर से भरी थी। गोया आप के अमल व हुकुमत में जुल्म नहीं हो गा।

(२) आप का अद्ल व इनसाफ बिला तखसीस सब के लिए आम हो गा।

(३) आप खिलाफते राशिदा के नुरानी तर्ज़ कि मिसाली हुकूमत काएम फरमाएं गे।

(४) आप के दौर में तमाम रुए ज़मीन पर इसलाम को गलबा हो गा और इसलाम को इसतेकरार हो गा।

(५) आप उम्मत के कुलुब का तज़किया फरमाएं गे।

(६) तालीम को आम करें गे।

(७) लोगों को शिर्क व बिदआत से पाक करें गे।

हज़रत गंगोही रह. फरमाते हैं कि : فيــزكّيهــم (أى الـمهــدىُ) ويُـعـلِّـمهـم ويـطهّـرهـم عـن دَنَـس البدعات ويكملهم (अल कौकबुद्दरी ५७/२) कि हज़रत महदी रज़ि. लोगों का तज़किया फरमाएं गे, उन्हें इल्म दें गे, उन्हें बिदआत की गंदगी से पाक करें गे और इन्हें कामिल व मुकम्मल करें गे।

(८) आप के जुहूर के सातवे साल दज्ञाल का खुरुज हो गा और आप हज़त ईसा अलैहिस्सलाम के साथ मिल कर उस से किताल करें गे।

(९) आप के ज़माने में माल खलियान में पडे अनाज के ढेर की तरह (बहुत ज़यादा) हो जाए गा।

(१०) आप के ज़माने में मवेशी की कसरत हो गी (यह चारों चीज़ें अल्लाह तआला की आप के ज़माने वालों पर खुसूसी इनायत हो गी)

(११) आप के ज़माने में आसमान मौसला धार बारिश बरसाए गा।

(१२) आप के ज़माने में ज़मीन से बहुत ही पैदावार हो गी।

عـن أبـى سعيد الخدرى رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسـلـم يـخـرج فى آخر امتى المهدى، يسقيه الله الغيث، وتخرج الأرض نبـاتها، ويُعطى المال صحاحاً، وتكثر الماشيةُ، وتعظم الأمة، ويعيشُ سبعاً أو ثـمـانيـاً يـعـنـي حـجـجـاً (मुसतदरक लिलहाकिम ६०१/४, नं. ८६७३)

तरजुमा : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत के अखीर

ज़माने में महदी रूनुमा हों गे, अल्लाह उन्हें सैराब फरमाए गा, ज़मीन अपने नबातात उगाए गी, वह बराबर माल तकसीम करें गे, मवेशियों की कसरत हो गी, और उम्मत (उस वक्त) इज़्ज़त के मकाम पर हो गी। वह सात या आठ साल रहें गे।

(१३) इस कद्र खुश हाली हो गी कि ज़िंदों को तमन्ना हो गी कि काश पहले के लोग जो तंग हाली में मर गए वह भी ज़िंदा होते, और इस खुश हाली के मंज़र को देखते।

हदीस शरीफ में है कि لا تدع السماء من قطرها شيئاً الا صبّته مدراراً، ولا تدعُ الأرض من ماء ها شيئاً الا أخرجته، حتى تتمنّى الأحياءُ الأموات (मुसनफ अब. रज़्ज़ाक ३८२/११ नं. २०७७०)

यानी आसमान अपना एक एक कतरा पानी बरसा दे गा, और ज़मीन अपना सारा पानी उगल दे गी, यहाँ तक कि (आसुदगी के सबब) ज़िंदा लोग मुरदों की (ज़िंदगी की) आरज़ु करें गे।

(१४) आप लोगों के कुलुब को (अपनी सखावत के ज़रये) गिना से भर दें गे। ويملأ قلوب أمة محمدٍ غني (मुनतखब कनज़ुल उम्माल २९/६)

(१५) आप बे हिसाब माल तकसीम फरमाएं गे।

(१६) काबा के दरवाज़े के आगे एक ख़ज़ाना जिस को रिताजुल काबा कहते हैं, उसे निकाल कर मुसलमानों में तकसीम फरमाएं गे।

नोट : रिताजुल काबा के सिलसिले में एक रिवायत मुनतखब कनजुल उम्माल में मौजुद है, जिस रिवायत के बारे मुफती निज़ामुद्दीन शामज़ई साहब रह. नक्ल फरमाते हैं कि वह सहीह है। (अकीदए ज़ुहूर महदी ७०)

حدثنا ابن وهبٍ، عن اسحاق بن يحىٰ بن طلحة التميمى، عن طاؤس قال : ودّع عمر بن الخطاب (رضي الله عنه) البيت ثُمّ قال : والله ما أرانى أدعُ خزائن البيت وما فيه من السّلاح والمال أمْ أُقسمه فى سبيل الله؟ فقال له

علی بن أبی طالب رضي الله عنه : امض يا أمير المؤمنين ! فلست بصاحبه، انما صاحبه منّا شابٌّ من قريش يقسّمه فی سبيل الله فی آخر الزمان (अलफितन लि नुऐम बिन हम्माद २८४, हदीन सं. १०६२)

ताऊस रह. से मरवी है वह फरमाते हैं कि उमर बिन अलखत्ताब रज़ि. ने बैतुल्लाह को विदा किया और फिर कहा बखुदा मुझे नहीं मालुम कि मैं बैतुल्लाह के खजाने, उस के हथयार और माल को युँ ही छोड दुँ या अल्लाह के रास्ते में तकसीम कर दुँ? तो इन से हज़रत अली रज़ि. ने कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन ! आप इस के ज़िम्मे दार नहीं, इस के ज़िम्मेदार तो हममें से एक कुरैशी नौजवान हों गा, जो आखरी ज़माने में वह माल अल्लाह की राह में तकसीम फरमाएं गे।

(१७) आप बिगैर गिने हुए दोनों हाथ भर भर कर लोगों को माल दें गे।

(१८) उम्मते मुसलेमा को अज़मत का आली मकाम हासिल हो गा।

(१९) आप के ज़माने की खुशहाली और आप की मिसाली सखावत को एक रिवायत में इस तरीके से बयान किया गया है।

عن أبی هريرة رضي الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : أبشروا بالمهدی رجلٌ من قريش من عترتی، يخرُجُ فی اختلافٍ من الناس وزلزال فيملأ الأرض قسطاً وعدلاً كما ملئت ظلماً وجوراً ويرضى ساكن السماء وساكن الارض ويقسم المال صحاحاً بالسوية ويملأ قلوب أمة محمدٍ غني ويسعهم عدلُه حتى أنّهٗ يأمُر منادياً ينادی من له حاجة اليّ، فما يأتيه أحدٌ الّا رجلٌ واحدٌ، يأتيه فيسئله فيقول : ائتِ السادنَ حتى يعطيَك، فيأتيه فيقول : أنا رسول المهدی اليك لتُعطينی مالا، فيقول : أحثُ، فيُحثی ولا يستطيع أن يحمله، فيُلقی حتى يكون قدر ما يستطيع أن يحملهٗ، فيخرج به فيندمُ فيقول : أنا كنتُ أجشعَ أمةِ محمد نفساً، كُلُّهم دُعیَ الی هذا المال فتركه غيری، فيرد عليه، فيقول : انّا لا نَقبل شيئاً أعطيناه، فيلبثُ فی ذلك ستا أو سبعاً أو ثمانياً أو تسعَ سنين، ولا خير فی

الحيوة بعده (मुनतखब कनजुलउम्माल २९/६)

तरजुमा : हज़रत अबु सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, वह फरमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि : तुम खुश हो जाओ महदी (की बशारत) से जो कि मेरे खानदान से हो गा, जिस का जुहूर लोगों के इखतेलाफ और ज़लज़लों के दरमियान हो गा, वह ज़मीन को अद्ल व इनसाफ से उसी तरह भर दे गा जिस तरह वह जुल्म व ज़्यादती से भरी हुइ थी, आसमान और ज़मीन का हर रहने वाला उस से खुश हो जाए गा, वह इनसाफ से माल को ठीक ठीक तकसीम करे गा, और उम्मते मोहम्मदिया के दिलों को गनी कर दे गा, और उस का अद्ल तमाम पर फैल जाए गा, यहाँ तक कि वह अपने मुनादी को हुक्म दें गे कि वह आवाज़ लगाए गा क्या किसी को मुझ से कोई ज़रूरत वाबस्ता है? तब उन के पास सिर्फ एक ही आदमी आ कर कुछ मांगे गा, वह कहें गे कि खज़ांची के पास जा, वह तुझे दे दे गा। तो वह शख्स खज़ांची के पास जाए गा और कहे गा कि मुझे महदी रज़ि. ने इस लिए भेजा है कि तुम मुझे कुछ माल दे दो, वह खज़ांची कहे गा कि तुम खुद निकाल लो, वह शख्स उठाने की कुव्वत से ज़्यादा भर ले गा, फिर उस को कम करते रहे गा यहाँ तक कि वह उठा सके, फिर वह माल ले जा कर शरमिंदा हो गा और कहे गा कि मैं उम्मत का इनतेहाइ लालची शख्स हुँ, कि पुरी उम्मत को उस माल की तरफ बुलाया गया और मेरे सिवा सब ने छोड दिया, तब वह उस माल को वापस करना चाहे गा, तो खज़ांची कहे गा कि हम दी हुइ चीज़ें वापस नहीं लेते, फिर महदी रज़ि. छे, सात, आठ या नौ सालरहें गे, और इस मुद्दत के बाद लोगों के लिए ज़िंदा रहने में भलाई न रहे गी।

दौरे महदी रज़ि. का मिसाली मोआशरा

हज़रत महदी रज़ि. के दौर में अल्लाह तआला का उम्मते मोहम्मदिया पर बहुत बडा फजल यह हो गा कि सब हज़रत महदी रज़ि. को बिल इत्तेफाक

अपना काएद व पेशवा तसलीम कर लें गे और किसी को इखतेलाफ न हो गा, और बा हम इत्तेहाद व उलफत की एक अजीब मिसाल क़ाएम हो गी।

عن دينار بن دينار قال : يظهر المهدى وقد تفرّق الفیء، فيواسى بين الناس فی ما وصل اليه لا يُواثر أحداً على أحد، ويعمل بالحق حتى يموتُ ثم تصير الدنيا بعده هرج (अलफितन २५४ नं. ९९५) यानी हज़रत महदी रज़ि. इस हाल में ज़ाहिर हों गे कि लोगों का शीराज़ा बिखर चुका हो गा, वह लोगों की गम खारी करें गे, किसी को किसी पर बरतरी नहीं दे गे, मौत तक दुरुस्त मोआमला फरमाते रहें गे, फिर सारी दुनया फितने व फसाद से भर जाए गी।

कुछ अहेम वाकेआत

अहादीस शरीफा में बाज़ बहुत ही अहम वाकेआत का तज़केरा मिलता है, यह वाकेआत कयामत के करीब आखरी दौर में पेश आएं गे, मगर उन अहादीस में सराहत नहीं है कि यह वाकेआत कब पेश आएं गे, अलबत्ता वाकेआत पर गौर करने नीज़ मोहद्दिसीन ने जिस अंदाज़ से उस को ज़िक्र किया है, साथ ही हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक असलाफे किराम रह. से जो मज़ामीन मंकुल हैं उन का मुतालेआ करने से यह अंदाज़ा होता है कि यह सारे वाकेआत हज़रत महदी रज़ि. के करीब तर ज़माने में पेश आएं गे। वह वाकेआत यह हैं।

(१) इराक, मिस्र, और शाम (सीरिया) पर रुमियों और अजमियों की तरफ से नाका बंदी :

عن أبى نصرة قال : كنا عند جابر بن عبدالله فقال : يوشك أهل العراق أن لا يجیءَ اليهم قفيزٌ ولا درهم، قلنا من أين ذاك قال من قِبَل العجم، يمنعون ذك، ثم قال يوشك أهل الشام أن لا يجیء اليهم دينار ولا درهم، قلنا من أين ذاك قال من قبل الروم، ثم سكت هنيةً، ثم قال : قال رسول الله صلى

الله عليه وسلم : يكون فى اخر امتى خليفة يحثى المالَ حثياً ولا يعدّهٗ عداً، قال قلت لأبى نضرة وأبى العلاء : أتريان أنه عمر بن عبدالعزيز فقالا : لا
(मुसलिम ३९५/२, नं. २९१३)

अबु नज़रह रह. फरमाते हैं कि हम जाबिर बिन अबदुल्लाह के पास थे, उन्हों ने कहा : अन करीब अहले इराक की यह हालत हो जाए गी कि उन के पास एक कफीज़ अनाज और एक दिरहम भी ना आ सके गा, हम ने कहा : यह पाबंदी कहाँ से आएद हो गी? उन्हों ने फरमाया : अजमियों की तरफ से, कुछ देर बाद फरमाया कि अनकरीब अहले शाम की यह हालत हो जाए गी कि उन के पास एक दीनार और एक मुद भी पहुंच न सके गा, हम ने कहा कि : यह पाबंदी कहाँ से आएदँ हो गी? उन्हों ने फरमाया : रुमियों की तरफ से, फिर कुछ देर खामुश रहे फिर आप रज़ि. से फरमाया कि हुजुर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया कि मेरी उम्मत के आखरी दौर में एक खलीफा हो गा, जो लप भर भर कर माल तकसीम करे गा और शुमार नहीं करे गा, रावी फरमाते हैं कि में ने अबु नज़रह और अबुल अला से पुछा कि क्या आप के खयाल में वह उमर बिन अबदुल अज़ीज़ है? कहा : नहीं।

अल्लामा तकी उसमानी साहब ने अपने तकमेला में कुरतबी के हवाले से नक्ल किया है कि उलमा की एक जमाअत का रुजहान यही है कि इस के मिसदाक हज़रत महदी रज़ि. हैं।

وذهب جمعٌ من العلماء الى أن المراد منه خليفة الله المهدى الذى يخرج فى آخر الزمان (تكمله فتح المهلم ٦/٣٢٩)

(2) शाम पर इसाईयों की यलगार :

कुछ किताबों से पता चलता है कि शाम पर जो इसाइयों की हुकुमत हो गी वह खैबर तक फैली हुइ हो गी।

(3) अरबों की उस ज़माने में किल्लत हो गी, वह बैतुल मुकद्दस (यरोशलम) में जमा हों गे :

یا رسـول الـلـه صـلی الله علیه وسلم فأین العرب یومئذ؟ قال : هم یومئذ
قلیل ببیت المقدس (इब्ने माजा ३०८ नं. ४०७७)

यानी किसी ने पुछा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पुछा कि : ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उस वक्त अरब कहाँ हो गे? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह बहुत कम तअदाद में हों गे और बैतुलमुकद्दस के पास जमा हों गे।

(४) मदीना मुनव्वरा को बे रगबती से छोडा जाए गा :

लोग मदीना मुनव्वरा को बे रगबती से छोडें गे, सुन लिया फुला जगह पर बाग और ज़राअत की फरावानी और अरज़ानी है तो लोग मदीना छोड कर वहाँ चले जाएं गे। हालांकि मदीना उन के लिए बहतर हो गा। लेकिन जो लोग मदीना को छोड कर जाएं गे अल्लाह तआला उन से बहतर लोगों को वहाँ आबाद फरमाएं गें।

عن جابر بن عبدالله رضي الله عنه مرفوعاً، لا یخرج رجل من المدینة رغبةً عـنهـا الّا أبـدلهـا الـلـه خیراً منه، ولیسُمعنَّ ناسٌ برخصٍ من أسعارٍ وریفٍ فیتبـعـونـه، والـمـدینة خیرٌ لهم لو کانوا یعلمون (मुसतदरक लिलहाकिम ५०१/४, नं. ८४०)

यानी जो लोग मदीने को बे रगबती से छोड कर जाएं गे अल्लाह तआला उन से बहतर लोगों को वहाँ आबाद फरमाएं गे, लोग जिस जगह कीमतों की कमी और फरावानी के बारे में सुन लें गे तो उस जगह के लिए चल पडें गे हालांकि मदीना मुनव्वरा उन के लिए बहतर है, काश कि उन्हें मालुम होता।

(५) सोने के पहाड का ज़ुहूर :

इमाम मुसलिम रह. ने हज़रत उबइ बिन कअब रज़ि. से रिवायत नकल की है कि : عـن أبی بن کعبٍ رضي الله عنه قال : انّی سمعتُ رسول الـلـه صـلی الله علیه وسلم یقول : "یوشكُ الفُراتُ أنْ یحسرَ عن جبلٍ من

ذهبٍ، فاذا سمع به الناسُ ساروا اليه، فيقولُ من عنده : لئن تركنا الناس يأخذون منه ليذهبنّ به كله، قال : فيقتلون عليه فيُقتل من كلّ مائةٍ تسعةٌ وتسعون" (मुसलिम ३९१/३, नं. २८९५) तरजुमा : मैं ने रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि अनकरीब दरयाए फुरात से एक सोने का पहाड ज़ाहिर हो गा जब लोग उस के बारे में सुनें गे तो उस को हासिल करने के लिए निकल पडें गे, यह देख कर उस इलाके के बाशिंदे कहें गे कि अगर हम ने युँ ही छोड दिया तो यह सारा सोना ले जाएं गे (इस इलाके के लोगों के मना करने पर उन के दरमियान) ऐसी भारी जंग होगी कि इन (जंग करने वालों) में निनानवे फीसद कत्ल हो जाएं गे।

इसी के करीब करीब इब्ने माजा में हज़रत सोबान रज़ि. से एक रिवायत है। عن ثوبان رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : "يقتتل عند كنزكم ثلاثةٌ، كلّهم ابن خليفةٍ، ثُمّ لا يصير الى واحدٍ منهم، ثمّ تطلع الرايات السود من قبل المشرق، فيقتلونكم قتلاً لم يقتله قوم، ثم ذكر شيئاً لا أحفظه، فقال : فاذا رأيتموه فبايعوه ولو حبواً على الثلج فانه خليفةُ الله المهدى (इब्ने माजा बाब खुरुजुल महदी स. ३१०) तरजुमा : रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारे खज़ाने के पास तीन शख्स जंग करें गे और उन तीनों में से हर एक खलीफा का लडका हो गा, लेकिन यह खज़ाना उन तीनों में कि किसी को भी न मिल सके गा, फिर मशरिक की जानिब से सियाह झंडे नमुदार हों गे, और यह तुम्हारे साथ ऐसी खतरनाक जंग करें गे कि उस से पहले कोइ कौम तुम से इस शिद्दत से नहीं लडी हो गी, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोइ बात कही जो मुझे याद न रही फिर खरमाया : जब तुम उन को देखो तो फौरन बैअत कर लेना, चाहे बरफ पर घिसट कर आना पडे कियुँ कि वह यकीनन अल्लाह के खलीफा हज़रत महदी रज़ि. हों गे।

फतहुल बारी में हाफ़िज़ इब्ने हजर असकलानी रह. ने फरमाया है

कि अगर मज़कुरा हदीस में खज़ाने से वह खज़ाना मुराद है जो सोने के पहाड वाली रिवायत में है तो यह उस बात की दलील है कि यह वाकेआत जुहूरे महदी रज़ि. के वक्त हों गे। (फतहुल बारी १३/८१)

(६) नफ्से ज़किया का कत्ल :

मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा की एक रिवायत का खुलासा है कि एक नफ्से ज़किया यानी एक जलीलु कद्र बुज़ुर्ग की शहादत के बाद हज़रत महदी रज़ि. का जुहूर हो गा। (मुन्नसफ इब्ने अबी शैबा १८८/१५ नं. १९५९९)

(७) मुसलमान और नसारा का इत्तेहाद :

सुनन अबु दाऊद शरीफ की एक हदीस का मज़मुन भी है कि عـــن الهُدنة رضي الله عنه قال : سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : ستصالحون الرومَ صلحاً امناء، فتغزون أنتم وهم عدواً من ورائكم، فتنصرون وتغنمون وتسلمون ثم ترجعون حتى تنزلوا بمرجٍ ذى تلول، فيرفع من أهل النصرانية الصليب فيقول : غلب الصليب، فيغضب رجلٌ من المسلمين، فيدقهُ، فعند ذلك تغدرُ الروم وتجمعُ للملحمة) अबु दाऊद ५९०/२, नं. ४२९२)

यानी मुसलमान रुमियों से पक्की सुलह कर लें गे। और दोनों मिल कर अपने दुशमन से जंग करें गे, कामियाबी और माले गनीमत भी हासिल हो गा। मुसलमान और रुमियों का लशकर टीले और सबज़ा वाली ज़मीन पर पडाव डाले गा, एक नसरानी सलेब (क्रास) उठा कर कहे गा कि सलेब का बोल बाला हो, तो उस बात पर एक मुसलमान गुस्से में आ कर उस सलेब को तोड डाले गा, उस वक्त रुमी गद्दारी करें गे और बडी जंग के लिए जमा हो जाएं गे। यह रिवायत इजमालन सहीह मुसलिम में भी मौजुद है।

(८) अय्यामे हज में खुँरेज़ जंग :

एक रिवायत से पता चलता है कि अरज़े मुकद्दस (मिना) पर अय्यामे हज में खुं रेज़ जंग होगी। यहाँ तक कि जमरए अकबा खुन आलुद हो जाए गा।

عن عمرو بن شعيب، عن أبيه، عن جده قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فى ذى القعدة تحازب القبائل، وعامئذ ينهب الحاجّ فتكون ملحمةٌ بمنى، فيكثر فيه القتلى، وتسفك فيها الدماء حتى تسيلَ دماؤهم على عقبة الجمرة.... الخ (अलफितन २६७ नं. ९९५)

ज़ी कादा के महीने में कबीलों की ग्रिरो बंदी हो जाए गी, इसी साल हज में लुट मार की वारदातें हों गी, मिना में ऐसी ज़बरदस्त जंग छिड जाए गी कि मरने वालों की तअदाद बे शुमार हो गी, खुन इतनी कसरत से बहे गा कि जमरए अकबा तक पहुंच जाए गा।

(९) एक और जंग के बारे में मुसतदरक हाकिम की रिवायत:

أخبرني أحمدُ بن محمدٍ بن سلمةَ العنزيُّ، حدثنا عثمانُ بن سعيد الدارميُّ، حدثنا سعيد بن أبى مريم، أنبأنا نافعُ بن يزيد، حدثنى عيّاش بنُ عباس أن الحارث بن يزيدَ حدّثه سمع عبد الله بن زُريرٍ الغا فقيَّ يقول سمعت عليَّ بن أبى طالب رضي الله تعالىٰ عنه يقول : ستكون فتنة يحصل الناس منها كما يحصل الذهب فى المعدن، فلا تسُبوا أهل الشام، وسُبّو ظلمتهم، فانّ فيهم الأبدال، وسيُرسِلُ الله اليهم سيبا من السماء فيغرقهم حتى لو قاتلتهم الثعالبُ غلبتهم، ثم يبعث الله عند ذلك رجلاً من عترة الرسول صلى الله عليه وسلم فى اثنى عشر ألفا ان قَلُّوا، وخمسة عشر ألفا ان كثُروا، أمارتهم أو علامتهم "أمِت أمِت" علىٰ ثلث رأيات يقاتلهم أهل سبع رأيات، ليس من صاحب رأية الا وهو يطمع بالملك، فيقتتلون ويهزمون ثم يظهر الهاشمى فيردّ الله الى الناس ألفتهم ونعمتهم، فيكونون على ذلك حتى يخرج الدجال، هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه (मुसतदरक ८९६/४ नं. ८६५८)

तरजुमा : हज़रत अली रज़ि. फरमाते हैं कि अनकरीब फितना हो गा, इस में लोग ऐसे छट जाएं गे जैसे सोना कान से छांटा जाता है, तुम लोग अहले शाम को बुरा भला मत कहो, उन के ज़ालिमों को बुरा कहे, चुंकि उन में

अबदाल हों गे, अल्लाह तआला शाम के लोगों पर बारिश बरसाएं गे जो उन को डुबा दे गी। वह लागे (डुब जाने की वजह से) इतने कमज़ोर हो जाएं गे कि अगर लोमडी भी उन से लडे तो उन पर गालिब आ जाए।

फिर उस वक्त अल्लाह तआला हाशमी (यानी महदी रज़ि.) को भेजे गा जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद में से हों गे, उन के साथ कम अज़ कम १२००० और ज्यादा से ज्यादा १५००० तक का लशकर हो गा, उन की फौज का शेआर "أَمِـت أَمِـت" का लफ़्ज़ हो गा, इन का लशकर तीन झंडों के नीचे लडे गा, उन के सामने लडने वाले सात झंडों के नीचे हों गे। हर झंडे वाला इकतेदार की लालच में हो गा, वह लडें गे और हार जाएं गे, फिर अल्लाह तआला हाशमी यानी महदी रज़ि. को फतेह दे गा। फिर अल्लाह तआलो उन की (गुम करदा) उलफत व नेमत लौटा दे गा। फिर लोग दज्जाल के जुहूर तक इसी खुशहाली में हों गें।

खुरूजे महदी रज़ि. की चंद आम फहेम निशानियाँ

हज़रत महदी रज़ि. के सिलसिले में मुसतनद और गैर मुसतनद दोनों किस्म की अलामात किताबों में मिलती हैं, उन में से चंद अलामात तो इस कद्र आम फहेम हैं कि एक अदना इनसान भी अलामत पा कर हज़रत महदी रज़ि. को पहचान सकता है। यहाँ सिर्फ दो अलामतों का ज़िक्र कर रहे हैं।

(१) सुरज के साथ किसी निशानी का तुलू:

أخبرنا عبدالرزاق، عن معمرٌ، عن ابن طاؤس، عن على بن عبدالله بن عباسٍ، قال : لا يخرجُ المهديُّ حتى تطلُع مع الشمس آية (मुसनफ अब. रज़्ज़ाक ३७३/११, नं. २०७७५) तरजुमा : हज़रत महदी रज़ि. उस वक्त तक नहीं ज़ाहिर हों गे जब तक कि सुरज के साथ कोई निशानी तुलु ना हो जाए।

इस रिवायत को हरत मुफती निज़ामुद्दीन शामज़ई साहब ने काबिले एतेबार बतलाया है। (अकीदए जुहूरे महदी रज़ि. ५३)

अलफितन लिनुऐम बिन हम्माद में भी ऐसी ही एक रिवायत मिलती है जो सनद के एतेबार से हसन है। حدثنا ابن المبارك وابن ثور وعبدالرزاق، عن معمرٍ، عن طاؤس، عن عليّ بن عبدالله بن عباس رضي الله عنه قال : لايخرجُ المهدى حتى تطلُع الشمسُ آية (अलफितन लिनुऐम बिन हम्माद २६०, हदीस नं. ९५९) तरजुमा : महदी रज़ि. उस वक्त तक रुनमा नहीं हों गे जब तक सुरज एक निशानी के तौर पर तुलु न हो जाए।

(2) खुरासान और सियाह झंडे :

हज़रत हमदी रज़ि. के जुहूर के वक्त के वाकेआत में खुरासान से सियाह झंडों के नमुदार होने के मुतअल्लिक भी बहुत सी रिवायतें वारिद हुइ हैं। उन में से सिर्फ चंद रिवायतों को मुखतसर उसुली कलाम के साथ यहाँ नक्ल कर देते हैं।

(١) عن علي رضي الله عنه ابن ابى طالب : قال : إذا خرج خيلُ السفيانى الى الكوفة بَعَثَ فى طلبِ أهلِ خُراسان، ويخرج أهلُ خراسان فى طلب المهديّ، فيلتقى هو والهاشمى براياتٍ أسودٍ، على مُقدّمة شعيب بن صالح، فيلتقى هو واصحاب السفيانى بباب اصطخر، فتكون بينهم ملحمةٌ عظيمة فتظهر الراياتُ السود وتهرب خيل السفيانى، فعند ذلك يتمنّى الناس المهدى ويطلُبونه (मुनतखब कनजुल उम्माल अला हामिश मुसनद अहमद २३/६, फितन लिनुऐम २१९ नं. ८६८)

तरजुमा : हज़रत अली रज़ि. से मरवी है कि जब सुफयानी का लशकर कुफा आए गा तब वह अहले खरासान की तलब में लशकर भेजे गा और अहले खुरासान महदी रज़ि. की तरफ जाएं गे। तो वह काले झंडों के साथ मिलें गा। उन लशकर के आगे वाले हिस्से में शुऐब बिन सालेह हो गा। तब वहाँ पर हाशमी और सुफयानी के लशकरों में जंग हो गी। हाशमी का

लशकर गाबिल आ जाए गा और सुफयानी का लशकर भाग जाए गा। उस वक्त लोग महदी रज़ि. की तमन्ना करें गे और उन को तलाश करें गे।

यह रिवायत अगर चे मौकुफ है लेकिन हुक्म के ऐतेबार से मरफु ही है, चुंकि यही अलफाज़ बहुत सी मरफु रिवायात में भी आए हैं और नीज़ मुहद्दिसीन व उसुलीय्यीन के हाँ यह काएदा भी मशहुर है कि सहाबी का वह कौल जो कयास से बाला हो, वह खबरे मरफु के हुक्म में है।

(٢) عن ام سلمة رضي الله عنها اذا رأيتم الرايات السود قد جاء ت من قبل خراسان فأتوها، فانّ فيها خليفةُ الله المهدى (मुनतखब कनजुल उम्माल २९/६)

तरजुमा : जब तुम खुरासान की तरफ से काले झंडों को नमुदार होता हुवा देख लो तो उस की तरफ चले जाओ, इस लिए कि उस में अल्लाह के खलीफा हज़रत महदी रज़ि. हों गे।

यह रिवायत भी काबिले एतेबार है। (अकीदए ज़ुहूर महदी ६५)

(٣) حدثنا محمد بن يحيى وأحمد بن يوسف، قالا حدثنا عبدالرزاق، عن سفيان الثورى، عن خالد الحذاء، عن أبى القلابة، عن أبى أسماء الرحبى، عن ثوبان قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : يقتل عند كنز كم ثلاثة، كلهم ابن خليفة، ثم لا يصير الى واحد منهم، ثم تطلع الرايات السود من قِبَل المشرق، فيقتلونكم قتلا لم يقتله قومٌ، ثم ذكر شيئاً لا أحفظه فقال : فاذا رأيتموه فبايعوه ولو حبواً على الثلج، فانه خليفة الله المهدى (सुनन इब्ने माजा ३१०)

तरजुमा : हज़रत सोबान रज़ि. फरमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने फरमाया तुम्हारे खज़ाने के पास तीन शख्स लडें गे, उन में से हर एक खलीफा का बेटा (शहज़ादा) हो गा। लेकिन वह खज़ाना उन तीनों में से किसी का भी नहीं हो गा। फिर मशरिक की तरफ से सियाह झंडे ज़ाहिर हों गे। वह तुम से ऐसी लडाइ लडें गे के उस से पहले किसी कौम ने तुम से ऐसी

लडाइ नहीं लडी हो गी। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ कहा जो मुझे (रावी को) याद न रहा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने फरमाया कि जब तुम उन को देखो तो उस से बैअत हो जाओ अगर चि तुम्हें बर्फ पर घिसट कर ही उन के पास क्युँ न आना पडे, इस लिए कि वह अल्लाह के खलीफा महदी रज़ि. हैं।

यह रिवायत भी काबिले हुज्जत है अगरचे सुनन अबु दाऊद की है, कियुँ कि इब्ने माजा की ज़ेआफ और मौजुआत में से नहीं। और सुनन अबु दाऊद के किताब अलमहदी और मुसतदरक लिलहाकिम में उस की मुताबे रिवायात भी हैं, और दुसरे सहाबा की मरवियात से भी इस रिवायत की ताईद होती है। मुफस्सल कलाम के लिए डॉ. निज़ामुद्दीस शामज़ई रह. की किताब ''अकीदए जुहूरे महदी'' में सफहा ३७/३८ में देखें।

अल्लामा सिंधी रह. फरमाते है कि : इस रिवायत को अबुल हसन बिन सुफयान रह. ने अपनी मुसनद में, और अबु नुऐम ने किताबुल महदी में इबराहीम बिन सुवैद शामी रह. के तरीक से ज़िक्र किया है। और सनद के ऐतेबार से यह रिवायत सहीह भी है, और इस के तमाम रिजाल सिका हैं। (तरजुमानुस्सुन्नह २९०/४)

(٤) عن ثوبان رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اذا رأيتم الرايات السود قد جاء ت من قبل خراسان فأتوها، فانّ فيها خليفة الله المهدى (रवाहू अहमद १७७/५ नं. २२७४६)

तरजुमा : हज़रत सोबान रज़ि. से मरवी है कि रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जब तुम खुरासान की तरफ से सियाह झंडे नमुदार होते देखो तो तुम उन के पास चले जाना कियुँ कि उन में अल्लाह तआला के खलीफा महदी रज़ि. हों गे।

इस सिलसिले में अबु दाऊद शरीफ की एक रिवायत है, जिस में खुरासान के एक बादशाह का हज़रत महदी रज़ि. की मदद के लिए आना इस

तरह वारिद है।

(٥) عن هلال بن عمرو قال : سمعت علياً كرّم الله وجهه يقول : قال النبي صلى الله عليه وسلم : يخرجُ رجل من وراء النهر يقال له الحارث (بن فى نسخة) حراث على مقدّمته رجلٌ يقال له منصورٌ يوطى أو يمكّن لآل محمدٍ كما مكّنت قريش لرسول الله صلى الله عليه وسلم وجب على كلّ مؤمنٍ نصرةٌ أو قال اجابتهٗ (अबुदाउद ५८९/२ नं. ४२९०)

तरजुमा : हज़रत बिलाल बिन उम्र रह. से मरवी है कि उन्हों ने फरमाया कि मैं ने हज़रत अली रज़ि. को यह कहते हुए सुना कि रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि : नहर के पीछे से एक शख्स निकले गा जिसे अलहारिस हरास (हारिस बिन हरास) कहा जाए गा, उस के मुकद्दमे पर एक शख्स हो गा जिसे मनसुर कहा जाए गा, वह आले मोहम्मद को वैसे ही तसल्लुत या पनाह दे गा जैसे कुरैश ने रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पनाह दी थी। हर मोमिन पर उस की मदद करना वाजिब है या फरमाया हर मोमिन पर उस का हुक्म कुबुल करना वाजिब है।

इस सिलसिले में शाह रफीउद्दीन साहब अपनी किताब अलामाते कयामत स. ११ पर फरमाते हैं कि :

जब यह खबर यानी हज़रत महदी रज़ि. के ज़ुहूर की खबर इसलामी दुनिया में मुनतशिर हो गी तो खुरासान से एक शख्स कि जिस के लशकर का मुकद्दमा अलजैश मनसुर नामी शख्स के ज़ेरे कमान हो गा एक बहुत बडी फौज ले कर आप की मदद के लिए रवाना हो गा जो रास्ता में बहुत से इसाई और बद दीनों का सफाया कर दे गा।

फायदा : मज़कुरा बाला रिवायात की सनदों में कुछ ना कुछ कलाम ज़ुरुर मौजुद है। अलबत्ता कुछ तुरुक की वजह से किसी दरजा कुव्वत तो बहरहाल पैदा हो जाती है।

चंद मशहुर अलामात का इलमी एहतेसाब और उन की तरदीद

(१) ज़ुहूरे महदी से पहले रमज़ान में सुरज और चांद गहन :

हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर के मुतअल्लिक जो बातें मशहुर हैं उन में से एक यह भी है कि जिस वक्त आप का जुहूर होने वाला हो गा, उस से कब्ल गुज़िशता रमज़ान में चांद और सुरज को गहन लग चुके गा। और ऐसा अजीब मामला आसमान और ज़मीन की पैदाइश के बाद कभी नहीं हुवा हो गा। खुद हज़रत शाह रफीउद्दीन साहब दहलवी रह. तहरीर फरमाते हैं।है

इस वाकेए की अलामत यह है कि उस से पहले गुज़िशता माहे रमज़ान में चांद व सुरज को गहन लग चुके गा। (अलामाते कयामत १०)

यह बात जो मशहुर हुइ है कि उस की बुनयाद एक रिवायत है जिस के अलफाज़ यह हैं : حدثنا ابو سعيد الاصطخرى، حدثنامحمد بن عبدالله بـن نوفل،حدثنا عبيد بن يعيش، حدثنا يونس بن بكير، عن عمرو بن شمر، عـن جـابـر، عـن محمد بن على قال : ان لمهدينا آيتين لم تكونا منذ خلق السمـاوات والأرض، ينـكسف الـقـمر لأوّل ليلة من رمضان وتنكسف الشمـس فى الـنـصف منه، ولم تكونا منذ خلق الله السماوات والأرض (सुनन दार कुतनी बाब सिफति सलातिल खुसुफि वल कुसुफि वहैअतिहिमा ४८/२ नं. १७७७ या १८८/१) के बे शक हमारे महदी की दो निशानियाँ ऐसी हैं जो आसमान व ज़मीन की तखलीक के वक्त से अब तक नहीं पेश आइ (अव्वल यह कि) रमज़ान की पहली शब में चांद गहन हो गा (दुसरी यह कि) इस रमज़ान के बीच में सुरज गहन हो गा। और यह दोनों निशानियां आसमान व ज़मीन की आफरीनश से अब तक जुहूर पज़ीर नहीं हुइ हो गी।

इस रिवायत के सिलसिले में सब से पहले यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि यह रिवायत कतई तौर पर हदीस शरीफ नहीं है,

बलकि मोहम्मद बिन अली रह. का कौल है। जब तक कोइ वाज़ेह दलील ना हो उस को रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद करार देना यह बहुत बडा गुनाह है, बलकि हदीस के मुताबिक अपना ठिकाना अपने हाथ से खुद जहन्नम बना लेना है।

नीज यह मोहम्मद बिन अली रह. का कौल सनद के एतेबार से इनतेहाइ साकित और मरदुद है, इन वजुहात की बिना पर (१) इस रिवायत में एक रावी अम्र बिन शमर हैं, जिस के मुतअल्लिक हाफिज़ इबने हजर असकलानी रह. ने और अल्लामा शमसुद्दीन ज़हबी रह. ने कज़्ज़ाब, राफज़ी, सहाबा को गालियाँ देने वाला, मतरूकुल हदीस जैसे सख्त कलमात लिखे हैं। इन की एक बहुत बुरी आदत यह थी कि सिका रावियों को जानिब से मौजु रिवायत मनसुब कर के नक्ल किया करता था। इस लिए इन हज़रात ने इस की रिवायत को कुबूल ना करने का फैसला किया है। (लिसानुल मीज़ान ४२२/४ दारूल फिक्र, मीज़ानुल एतेदाल २६२/२) अम्र बिन शमर का यह हाल था कि वह बहुत सी मौजु रिवायात जाबिर जोफी से नक्ल करता था। (२) इस रिवायत का दुसरा रावी जाबिर जोफी है, और वह हद दरजा मुतकल्लम फीह है, वह कज़्ज़ाब, गाली शीआ और शातिमे सहाबा था। इमाम मुसलिम रह. ने अपने मुकद्दमा मुसलिम के सं. १५ पर छे तरीक में कुल चार अकाबिर की बयान करदा जरह नक्ल की है जिन में इमान बिर्रजआ सरे फेहरिस्त है। खुद इमाम अबु हनीफा रह. फरमाते हैं कि मुझे जिस कदर झुटे लोग मिले हैं जोफी से ज़्यादा झुटा मैं ने किसी को नहीं देखा। उस का मुफस्सल हाल तहज़ीबुत्तहज़ीब ३५२/१ पर है। (३) इस रिवायत के तीसरे रावी मोहम्मद बिन अली हैं और उस नाम के बहुत से रावी हैं, इस लिए यहाँ कौन से मोहम्मद बिन अली मुराद हैं इस की कोई तसरीह नहीं, इस लिए यह रावी भी मजहुल हो गए। नीज़ मोहम्मद बिन अली से हज़रत बाकर रह. को मुराद लेना (जैसे कि बाज़ों की राए है) बिला दलील बात है।

उपर दी गइ ३ वजह से इस रिवायत सें एतेबार खत्म हो जाता है, इस लिए ज़ुहूरे महदी जैसे अहम मसले के लिए इस को भी बतौरे दलील पेश नहीं किया जा सकता। और ना इस से यह अलामत साबित हो सकती है कि हज़रत महदी रज़ि. के वक्त में इस किस्म के कोई गहेन हों गे।

मज़कुरा बाला रिवायत के करीब करीब एक रिवायत शेख युसूफ अल मकदिसी रह. की किताब अकद्दुदुर्र फि अखबारिल मुनतज़र और शीओं की किताब बशारतुल अनाम बिज़ुहूरिल महदी अलैहिस्सलाम लिलकाज़मी में भी है। अलबत्ता इस रिवायत में है कि सुरज गहन रमज़ान के बीच में और चांद गहन आखिर रमज़ान में हो गा। और यह दोनों निशानियाँ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़मीन पर उतारे जाने के बाद से आज तक ज़ुहूर पज़ीर नहीं हुइ।

फन्नी हैसियत से इस रिवायत में तकरीबन वही कलाम है जो सुनन दार कुतनी की मज़कुरा बाला रिवायत में है, इस लिए यह रिवायत भी ना काबिले एहतेजाज हैं। (माखुज़ अज़ रद्दे कादियानियत के ज़र्रीन उसुल, मौलाना चुनयोटी व फिकही जवाहिर, मुफती उमर फारुक लोहारवी ३)

नीज़ देरायत के एतेबार से भी देखा जाए तो १८०१ से १९०० ता (एस सौ साल) के अरसे में सुरज और चांद का रमज़ानु मुबारक में मुशतरका गहन पांच मरतबा हुवा है। नीज़ इसी सिलसिले में एक यह बात भी काबिले एतेना है कि १८५१ से १८९५ तक सिर्फ ४५ साल की मुद्दत में रमज़ानुल मुबारक ही में तीन मरतबा गहन का वाकेआ पेश आया है, तो अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इस के कब्ल तो कितनी मरतबा इस किस्म के वाकेआत हुएं हों गे।

इस लिए रिवायत में जो यह बात है कि जब से अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा फरमाया, कभी ऐसा वाकेआ पेश नहीं आया हो गा कैसे सहीह हो सकता है? मालुम हुवा कि दिरायतन भी यह रिवायत

काबिले कुबुल नहीं।

(2) क्या हज़रत महदी के ज़ुहूरे के वक्त आसमान से कोई आवाज़ आए गी ?

बहुत सी वह उर्दु और अरबी किताबें जो हज़रत महदी रज़ि. के उपर लिखी गई हैं, नीज़ जिन किताबों में हज़रत महदी रज़ि. का तज़केरा है, उन में आप के जुहूर के वक्त एक निशानी यह भी लिखी है कि जब हज़रत महदी रज़ि. का जुहूर हो गा तो आसमान से एक आवाज़ आए गी कि "هذا خليفة الله المهدى فأطيعوه" कि यह अल्लाह तआला के खलीफा महदी हैं लिहाज़ा इन की इत्तेबा करो। नीज़ यह बात अवाम में भी ज़बाँ ज़द हो चुकी है। लिहाज़ा इस की हैसियत का मालुम होना निहायत ज़रुरी है।

इस सिलसिले में मुखतलिफ कुतुबे अहादीस में जो रिवायात वारिद हुइ हैं उन में से कुछ यह हैं। حدثنا ابراهيم بن محمد بن عرق الحمصى، حدثنا عبدالوهاب بن ضحّاك، حدثنا اسماعيل بن عياش، عن صفوان بن عمرو، عن عبدالرحمن بن جُبير بن نُفَير، عن كثير بن مُرّة، عن عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه قال: يخرج المهدى وعلى رأسه ملك ينادى إنّ هذا المهدى فاتبعوه (मसनद शामीय्यीन ७१/२ हदीस नं. ९३७)

हज़रत अबदुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हज़रत महदी रज़ि. इस हाल में ज़ाहिर हों गे कि उन के सर पर एक फरिशता हो गा जो यह सदा दे गा कि यह महदी हैं लिहाज़ा इन की इत्तेबा करो।

इस तरह इमाम इब्ने अदी रह. ने भी अपनी किताब "الكامل فى ضعفاء الرجال" में मतन व सनद के कुछ इखतेलाफ के साथ इस हदीस की रिवायत की है, वह यह है। حدثنا محمد بن عبيد الله بن فُضيل، حدثنا عبدالوهاب بن ضحّاك، حدثنا اسماعيل بن عياش، عن صفوان بن عمرو،

عن عبدالرحمن بن جُبير بن نُفير، عن كثير بن مرّة، عن عبدالله بن عمرو بن العاص، عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: يخرج المهدى وعلى رأسه غمامةٌ، فيها منادٍ ينادى: ألا إنَّ هذا المهدى فاتبعوه (अलकामिल ५१५,५१६/६) कि हज़रत अबदुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रज़ि. से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि हज़रत महदी रज़ि. इस हाल में ज़ाहिर हों गे कि उन के सर पर बादल का एक टुकडा हो गा जिस में एक फरिशता हो गा, जो यह सदा दे गा कि यह महदी हैं इन की इत्तेबा करो।

इन दोनों रिवायतों का मदार अबदुल वहाब इब्ने ज़हहाक पर है, अइम्मा ने इन पर बहुत सख्त कलाम किया है। चुनांचे हाफिज़ इबने हजर असकलानी रह. नक्ल फरमाते हैं। قال البخارى عندهٗ عجائبُ؛ وقال أبو داؤد: كان يضع الحديث قد رأيته، وقال النسائى: ليس بثقةٍ متروك، وقال العُقيلى والدارقطنى والبيهقى: متروكٌ، وقال صالح بن محمد الحافظ: منكر الحديث، عامّة حديثه كذبٌ (तहज़ीबुत्तहज़ीब ५२७/५२८/२) यानी इमाम बुखारी रह. फरमाते हैं कि अबदुल वहाब बिन ज़हहाक अपने पास अनोखी (झुटी) रिवायतें तखता है। इमाम अबु दाऊद रह. फरमाते हैं कि मैं ने खुद देखा है कि वह हदीसें घडता है। इमाम नसाई रह. फरमाते हैं कि वह सिका नहीं है, नीज़ मतरुक भी है। उकैली, दार कुतनी और बैहकी रह. फरमाते हैं कि वह मतरुक है। सालेह बिन मोहम्मद हाफ़िज़ रह. फरमाते हैं कि वह मुनकरुल हदीस है और उस की असकर अहादीस झुटी हैं। तकरीबन यही रीमार्क मीज़ानुल एतेदाल १६१/१६०/२ पर भी है।

नीज़ इस मज़मुन की कई रिवायतें ''अलफितन'' में नुऐम बिन हम्माद रह. ने नक्ल की हैं, लेकिन वह आसारे सहाबा व ताबईन हैं, सिर्फ एक ही रिवायत मरफु आई है। और तमाम रिवायतों पर फन्नी एतेबार से कलाम किया गया है। नीज़ इस की हम माना रिवायत कनज़ुल उम्माल ५८४/१६

पर और मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा ५३१/७ पर भी आइ है।

खुलासा यह हुवा कि सनद के एतेबार से यह रिवायत किसी सुरत में जुहूरे महदी रज़ि. जैसे अहम वाकेए की अहम तरीन अलामत के लिए मुसतदल्ल नहीं बन सकती।

कुछ और बातें जिन का मुसतनद हवाला नही मिल सका

हज़रत महदी रज़ि. के ज़िक्रे खैर में आप के सामने बहुत सी बातें आईं, कोशिश यह रही कि जितनी बातें बताइ जाएं वह सहीह अहादीस की रौशनी में हों, अलबत्ता कुछ बातें वह हैं जिन की कोइ कवी सनद वाली रिवायत मुझे ना मिल सकी, या कुछ बातें ऐसी हैं जो अकाबिर की तहरीरों में तो मौजुद हैं, लेकिन मुझ को उन बातों के मुसतनद हवाले ना मिल सके इस लिए उन बातों को अलग से इस जगा लिखा जा रहा है।

(१) हज़रत महदी रज़ि. चकमा दे कर (मक्का मुकर्रमा से) मदीना मुनव्वरा भाग जाएं गे।

(२) عن علی رضي الله عنه قال : يُبعثُ جيشٌ الى المدينة فيأخذون من قدروا عليه من آل محمد صلى الله عليه وسلم ويقتل من بنى هاشم رجالاً ونساء، فعند ذلك يهرب المهدى والمبيض من المدينة الى مكة...الخ (मुनतखब कनजुल उम्माल ३३/६)

तरजुमा : हज़रत अली रज़ि. से मरवी है कि उन्हों ने फरमाया कि मदीना मुनव्वरा की तरफ एक लशकर भेजा जाए गा, वह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घराने वालों में से जिसे पाए गा उसे पकड ले गा, और बनी हाशिम के बहुत से मर्द और औरतों को कत्ल कर डाले गा। उस वक्त महदी और मुबीज़ मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा की तरफ भाग निकलें गे ....

(३) हज़रत महदी रज़ि. इस हाल में निकलें गे कि उन के सर मुबारक पर एक बादल साया करे गा, उस में से एक हाथ निकल कर हज़रत महदी रज़ि. की तरफ इशारा करे गा।

(४) आसमान से आवाज़ आए गी कि सुनो ! हक मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घराने वालों में है।

(५) आप रज़ि. का ज़ुहूर मुहर्रम में आशोरा की रात को इशा के बाद हो गा।

(६) हज़रत महदी रज़ि. के पास आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुरता, तलवार, और झंडा हो गा, उन पर लिखा हो गा। البيعة لله

(७) आप रज़ि. के कांधे में नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अलामते मुबारका हो गी।

(८) आप रज़ि. के लिए दरया इस तरह फट जाएं गे जिस तरह बनी इसराईल के लिए फट गया था।

(९) आप रज़ि. एक सुखी शाख ज़मीन में लगाएं गे तो वह उसी वक्त बर्ग व बार वाली हो जाए गी।

(१०) आप को इल्म लदुन्नी हो गा।

(११) आप के पास एक ताबुत हो गा जिसे देख कर अकसर यहुद इमान ले आएं गे।

(१२) आप की ज़बान में लुकनत हो गी जिस की वजह से कलाम करने में तंग हो कर रानों पर दाहना हाथ मारें गे।

और भी बहुत सी बातें इस मौजु पर लिखी जाने वाली किताबों में पढीं लेकिन उस की कोइ कवी सनद ना मिलने की वजह से, और तवालत के अंदेशे से तर्क करते हैं।

मज़कुरा बाला रिवायतों में से बाज़ ज़ईफ, बाज़ मकतु और बाज़ मौज़ु भी हैं, मगर चुंकि यह बातें लोगों में ज़बाँ ज़द हो चुकी हैं, इस लिए बगर्ज़

तंबीह इन का यहाँ तज़केरा किया गया है।

कश्फ व इलहाम और उस की शरई हैसियत

हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक बहुत से अकाबिर से मुखतलिफ मुकाशफे मनकुल हैं, और उस मौजु की बहुत की किताबों में इन मुकाशफात को बडी अहमियत व खुसूसियत के साथ ज़िक्र किया गया है। बाज़ लोग तो ऐसे कश्फ व इलहाम के नक्ल करने में बडी बे एहतेयाती से काम लेते हैं, और फिर यह अवाम में शोहरत पा जाते हैं और धीरे धीरे लोग ऐसे मुकाशफात को मुसतनद बात समझ लेते हैं।

हमारे माज़ी करीब के अकाबरीन से भी चंद मुकाशफात, पेशीन गोइयाँ और अकवाल मंकुल हैं, उन की निसबत चाहे उन बुज़ुरगाने दीन की सहीह है या नहीं इस बहेस से अलग रतहे हुए यहाँ सिर्फ कश्फ व इलहाम की हकीकत और उस का हुक्म बतलाना मकसुद है।

कश्फ के मानी हैं खोल देने के, इसतेलाह में कश्फ ऐसे इल्म को कहा जाता है जिसे अल्लाह तआला किसी पर खोल दे, चाहे नबी हो या वली, सालेह हो या फासिक व फाजिर, मुसलिम हो या गैर मुसलिम, इनसान हो या हैवान। गोया कश्फ का इतलाक बिलकुल आम है, लेकिन हमारे उर्फ में कश्फ भी इलहाम की तरह ही औलिया व सालिहीन के साथ खास है।

कश्फ व इलहाम अगर चे मफहुम के एतेबार से मुतफावित और मिसदाक के लेहाज़ से यकसाँ है, लेकिन शरई हैसियत से दोनों ज़िन्नी हैं। इन पर इमान लाना ना वाजिब है ना मतलुब। कश्फ व इलहाम ना तो अरकाने इसलाम में से हैं और ना उसुले दीन और हुज्जते शरइया में से, उन से सिर्फ एक खाम अंदाज़ा लगाया जा सकता है, जो खारिज में रूनुमा भी हो सक्ता है और नहीं भी। बिलकुल खवाबों की तरह।

हज़रत मौलाना खैर मोहम्मद जालंधरी साहब रह. ने तकरीबन यही

बातें खैरुलफतावा ६७,६८/१ में एक इसतेफता के जवाब में लिखी हैं।

एक सवाल के जवाब में हज़रत मौलाना मोहम्मद युसूफ लुधयानवी साहब रह. लिखते हैं कि कश्फ के मानी हैं किसी बात या वाकेए का खुल जाना, इलहाम के मानी हैं दिल में किसी बात का इलका हो जाना, और बशारत के माना शुख खबरी के हैं जैसे कोइ अच्छा खवाब देखना।

नीज़ आगे लिखते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कश्फ व इलहाम और बशारत मुमकिन है, मगर वह शरअन हुज्जत नहीं और ना उस के कतई और यकीनी होने का दावा किया जा सकता है। और ना किसी को उस के मानने की दावत दी जा सकती है।

और आगे एक दुसरे सवाल के जवाब में आप रह. लिखते हैं कि गैर नबी को कश्फ या इलहाम हो सकता है मगर वह हुज्जत नहीं, और ना उस के ज़रीए कोइ हुक्म साबित हो सकता है, बलकि उस को शरीअत की कसौटी पर जांच कर देखा जाए गा, अगर सहीह हो तो कुबुल किया जाए गा वरना रद कर दिया जाए गा। यह उस सुरत में है कि वह सुन्नत नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुत्तबे और शरीअत का पाबंद हो। अगर कोइ शख्स सुन्नते नबवी के खिलाफ चलता हो तो उस का कश्फ व इलहाम का दावा शैतानी धोका है। (आप के मसाएल और उन का हल ३४,३५/१)

कश्फ व इलहाम दीन व मज़हब में कोइ हुज्जते शरइया नहीं, मतलब यह है कि नफ्से कश्फ का सुबुत तो नुसूसे सहीहा से है, मगर गैर अंबिया के कुशुफ में तअय्युने ज़मान व मकान वगैरा में गलती का एहतेमाल है। फकीहुन्नफ्स हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह. फरमाते हैं :

कश्फ की तीन किस्म है, एक में काफिर व मुसलिम बराबर हैं, एक लौहे महफुज़ से है जो सिर्फ मुसलमानों के लिए है, और एक अल्लाह का इल्म है जो सिर्फ अंबिया के लिए है। पहले दो कश्फ में गलती का एहतेमाल है, मगर तीसरे में गलती का कोइ इमकान नहीं, कियुँ कि पहले दो में ज़मान व

मकान की तअय्युन तखमीन से हो सकती है, मगर इल्मे इलाही में माज़ी व हाल और इसतेकबाल बराबर हैं, इस लिए अंबिया के पास जो इल्म है वह गलती से पाक है। (अरवाहे सलासा २९५)

जुहूरे महदी रह. के साल के सिलसिले में भी बाज़ अहले कश्फ को मुकाश्फा हुवा था, जो वक्त आने पर गलत साबित हुवा। चुनांचे हज़रत मौलाना मोहम्मद याकुब नानोतवी रह. अपने एक खत (मौसुला १२ शव्वाल १२९४ हि.) में तहरीर फरमाते है कि बाज़ अहले कश्फ का गुमान है कि अगली सदी के शुरु में जुहूरे महदी और आसारे कायामे मौऊदा ज़ाहिर हों गे, और बाज़ों ने युँ कहा है कि वह ज़माना अभी दुर है, वल्लाहु आलम, अगली बात कहना फुज़ूल है। जो खुदा चाहे सो हो। (मकतुबाते व बयाज़े याकुबी १११०)

हज़रत मौसुफ रह. से अपने एक और खत (मौसुला २२ जुलहिज्ञा १२९९ हि.) में ख्वाब की ताबीर बयान करते हुए तहरीर फरमाते हैं। मुलाकाते इमाम महदी रज़ि. की क्या अजब है, नसीब हो, कियुँ कि अलामात उस की बहुत ज़ाहिर हैं, और मकशुफ औलिया के मुताबिक क्या अजब है कि इस सदी के पहले या दुसरे साल में हो जाए। (१२९)

इस से मालुम होता है कि १३०१ हि. या १३०२ हि. में हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर का कश्फ कुछ अहले कश्फ हज़रात को हुवा था, और आज १४२६ हि. चल रही है और अब तक जुहूरे महदी रज़ि. नहीं हुवा।

तीसरे यह कि अवलिया अल्लाह के कश्फ का एतेबार उसी वक्त हो सकता है, जब कि वह कुरआन, हदीस, इजमाए उम्मत और कयासे सहीह के मुखालिफ ना हों। और यह मसअला तमाम सल्फ व खल्फ में मुत्तफक अलैह है, जैसा कि हज़रत काज़ी सनाउल्लाह साहब पानी पती रह. ने इरशादुत्तालिबीन में ज़िक्र फरमाया है। जुहूरे महदी के लिए साल का तअय्युन नुसुसे सहीहा के मुआरिज़ है। आम नुसुस का तकाज़ा यह है कि

जुहूरे महदी अल्लाह तआला शानुहू की तरफ से इखफा रखा गया है। एक वक्त आए गा कि लोगों पर अचानक यह राज़ ज़ाहिर हो जाए गा। बल कि इस मआमले में इस कद्र इखफा रखा गया है कि खुद हज़रत महदी रज़ि. भी जुहूर से पहले पहले तक अपने मुकाम से आशना ना हों गे। (फिकही जवाहिर ८४,८५/३)

वही, इलहाम और कश्फ के फरक को इस तरह समझ लेना चाहिए कि वही तो सिर्फ उस इल्म को कहा जाता है जिस का इलका नबी के कल्ब पर हो, चाहे कैसे भी हो। मुहद्दिसीन ने वही की कई किस्में बतलाइ हैं। बहरहाल वही का इल्म कतइ होता है और उस का मानना ज़रुरी हुवा करता है।

इलहाम उस को कहा जाता है कि जो किसी मुबारक व सलीमुल फितरत कल्ब में बिगैर इकतेसाब व इसतेदलाल के इलका किया जाए। अब अगर यह इलका किसी नबी के कल्ब पर हो तो यह भी वही ही कहलाए गा और यह भी कतई हो गा। और अगर नबी के इलावा किसी और पर इलका हुवा तो उस को उर्फ आम में इलहाम कहा जाता है कि और उस का इल्म ज़न्नी हुवा करता है।

वही और इलहाम में एक फर्क यह भी बतलाया गया है कि अंबिया की वही व इलहाम अमर व नही पर मुशतमिल होती है, इस लिए अंबिया पर उस की तबलीग वाजिब होती है। जब कि औलिया और सालिहीन के इलहाम मुबश्शरात या तफहीमात पर मुशतमिल होते हैं, और उन पर अपने इलहाम की तबलीग वाजिब नहीं होती है, बलकि इखफा ही बहतर होता है, जब तक कोइ शरई या दीनी ज़रुरत पेशे नज़र न हो।

सय्यदी व सनदी हज़रत मुफती साहब रह. ने एक मतरबा एक वाकेआ बयान फरमाया था कि : पच्चीस साल पहले मुझे एक साहब ने बतलाया था कि इमाम महदी पैदा हुए इतने अरसे से हैं कि मुझ को हज़रत मीकाइल अलैहिस्सलाम ने बतलाया, अब तक तो आए नहीं उन्हों ने हाथ से

एक ज़िरा का इशारा कर के बतलाया था कि एक ज़िरा के बराबर हैं।
(मलफुज़ात फकीहुल उम्मत ५५/९)

हज़रत महदी रज़ि. के असहाब

वह सआदत मंद मुसलमान जिन को हज़रत महदी रज़ि. के साथ में आलमी इमानी जद्दो जहद का मौका नसीब हो गा, उन हज़रात के मुतअल्लिक भी रिवायात में बहुत सारी अलामात और बशारतें आइ हैं।

(१) आप रज़ि. के असहाब अल्लाह के नज़दीक महबुब हों गे, और अल्लाह तआला उन की मगफेरत फरमावें गे।

(२) उन के दिल आपस में जोड दिए जाएं गे।

(३) वह अल्लाह तआला के सिवा किसी से भी नहीं डरें गे।

(४) इबतेदाइ ज़माने में ज़ाहिरी शौकत और ताकत के एतेबार से हज़रत महदी रज़ि. के साथी कमज़ोर हों गे।

(५) जो ३१३ हज़रात अव्वल मरहले में आप के हाथ पर बैअत करें गे, वह खैरुल कुरुन के बाद सब से उंचे दरजे के इमान वाले हों गे।

(६) हज़रत महदी रज़ि. के असहाब बाद में चल कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ यहुद से आखरी लडाइ में शरीक हों गे।

(७) आप रज़ि. के साथियों का एक दस्ता दज्जाल से मुकाबला करे गा।

(८) काबा शरीफ में उन की पनाह हो गी।

(९) ना व किसी से वहशत करें गे और ना किसी को देख कर खुश हों गे, यानी वह अपनी धुन में लगे हों गे, मकसद (एलाए कलिमतुल्लाह) का हुसुल हो गा, नीज़ उन का बाहमी रब्त व ज़ब्त सब से यकसाँ हो गा।

حدثنا أبو العاص محمد بن يعقوب، حدثنا الحسن بن على بن عفان العامرى، حدثنا عمرو بن محمد العنقرى، حدثنا يونس بن أبى اسحاق، أخبرنى عمار الذهبى، عن أبى الطفيل، عن محمد بن الحنفية، قال : كنا عند على رضي الله عنه فسأله رجل عن المهدى فقال على رضي الله عنه : هيهات، ثم عقد بيده

سبعاً فقال ذاك يخرجُ فى آخر الزمان اذا قال الرجل "الله الله" قتل، فيجمع الله تعالىٰ قوماً قزع كقزع السحاب يؤلّف الله بين قلوبهم، لا يستوحشون الى أحدٍ ولا يفرحون بأحد يدخلُ فيهم، على عدة، أصحاب بدرٍ، لم يسبقهم الأولون ولا يدركهم الآخرون، وعلى عدةٍ أصحابِ طالوت الذين جاوزوا معه النهر، هذا حديث صحيح على شرط الشيخين، ولم يخرجاه (मुसतदरक लिलहाकिम ५५४/४) तरजुमा : हज़रत मोहम्मद बिन हनफीय। रह. से मरवी है, वह फरमाते हैं कि हम हज़रत अली रज़ि. के पास थे तो उन से एक शख्स ने महदी रज़ि. के मुतअल्लिक पुछा तो आप रज़ि. ने फरमाया कि सुनो ! फिर आप ने अपने हाथों से सात (७) का उकदा बांधा फिर फरमाया कि वह आखरी ज़माने में ऐसे हालात में निकलें गे कि अगर कोइ अल्लाह अल्लाह कहे गा तो कत्ल कर दिया जाए गा। फिर अल्लाह तआला एक ऐसी कौम को जमा करे गा, जो बादलों के जैसे एक दुसरे से मिले हुए हों गे, अल्लाह तआला उन के दिलों को आपस में जोड दे गा। वह ना किसी से वहशत ज़दा हों गे और ना किसी ऐसे शख्स से खुशी महसुस करें गे जो उन का शरीक कार बन जाए। असहाबे बदर की तअदाद के बराबर उन की तअदाद हो गी। दरजात में (खैरु कुरून को छोड कर) ना अगले लोग उन से बढे हुए हों गे और ना पिछले लोगों की उन तक रसाइ हो गी, और तालुत के उन साथियों के तअदाद के बराबर हों गे जिन्हों ने उन के साथ नहर पार की थी।

कुछ अहम मौकों पर आप के असहाब का हदीसों में खुसूसी तज़केरा

(१) हज़रत महदी रज़ि. जिस लशकर को ले कर मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम रवाना हों गे उस लशकर में शामिल लोग उस वक्त दुनया में सब से अफ़ज़ल मुसलमान हों गे। मुसलिम शरीफ में है। فيخرج اليهم جيش من المدينة من خيار أهل الأرض يومئذ ... الخ (मुसलिम, किताबुल फितन ३९१/२ नं. २८९७)

(२) जो हज़रात मुल्के शाम में शहीद हों गे वह दौरे रिसालत के शुहदा के बाद सब से अफ़ज़ल शहीद हों गे। मुसलिम शरीफ की उसी रिवायत में आगे है। افضل الشهداء عند الله (मुसलिम किताबुल फितन ३९२/२)

(३) मुल्के शाम की लडाईयों में मुसलमानों की कमी और नसरानियों के ज़्यादा होने की वजह से जो मुसलमान भाग जाएं गे (यानी लशकर का एक तिहाइ हिस्सा) अल्लाह तआला उन को कभी मआफ नहीं करे गा।

(४) फतेह कुसतुनतुनिया (स्तंबोल) के वक्त आप का जो लशकर हो गा उस के मुतअल्लिक हदीस शरीफ में आया है कि उन का अमीर बहुत ही खुब अमीर हो गा (यानी हज़रत महदी रज़ि.) और वह लशकर बहुत ही मुबारक लशकर हो गा।

(५) फतेह कुसतुनतुनिया के बाद दज्जाल की अफावह फैले गी तो हज़रत महदी रज़ि. दिमश्क की तरफ दज्जाल की तहकीक के लिए दस सवारों का दस्ता रवाना फरमाएं गे, वह उस वक्त ज़मीन पर सब से अफज़ल लोग हों गे।

एक अहम सवाल का जवाब

क्या हज़रत महदी रज़ि. के दौर में मौजुदा साइंसी इजादात हों गी? या वह दौर कदीम तर्ज़ पर हो गा?

बहुत से मुसलमानों को यह उलझन होती है कि आया हज़रत महदी रज़ि. के दौर में ज़माना दोबारा अपनी कदीम रविश पर आजाए गा, या यह तमाम साइंसी इजादात आप रज़ि. के ज़ुहूर के वक्त मौजुद हों गी ?

चुनांचे इस सिलसिले में फकीहुल अस्र मुफती युसूफ साहब लुधयानवी रह. से एक अहम सवाल और उस का जवाब।

सवाल : रोज़नामा जंग में आप का मज़मुन अलामाते कयामत पढा। इस में कोइ शक नहीं कि आप हर मसअले का हल इतमेनान बख्श तौर पर हदीस और कुरआन के हवाले से दिया कतरे हैं। यह मज़मुन भी आप की इलमियत और तहकीक का मजहर है। लेकिन एक बात समझ में नहीं आइ कि पुरा

मज़मुन पढने से अंदाज़ा होता है कि हज़रत महदी रज़ि. और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कुफ्फार और इसाइयों से जो लडाइयाँ हों गी उन में घोडों, तलवारों, तीर कमान वगैरा का इस्तेमाल हो गा। फौजें कदीम ज़माने की तरह मैदाने जंग में आमने सामने हो कर लडें गी।

आप ने लिखा है कि हज़रत महदी रज़ि. कुसतुनतुनिया (स्तंबोल) से नौ घोड सवारों को दज्जाल का पता मालुम नरके के लिए शाम भेजें गे। गोया उस ज़माने में हवाइ जहाज़ नहीं हों गे। फिर यह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दज्जाल को एक नेज़े से हलाक करें गे, और याजुज माजुज की कौम भी जब फसाद बरपा करने आए गी तो उस के पास तीर कमान हों गे यानी वह स्टेन गन, राइफल, पिस्तौल और बमों का ज़माना नहीं हो गा। ज़मीन पर इनसान के वजुद में आने के बाद से साइंस बराबर तरक्की कर रही है और कयामत के आने तक तो इस में और भी तरक्की हो चुकी हो गी।

दुसरी बात यह है कि आप ने लिखा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हुक्म से चंद खास आदमियों के हमराह याजुज माजुज की कौम से बचने के लिए कोहे तुर के किले में पनाह लें गे यानी दुनया के बाकी अरबों इनसानों को जो सब मुसलमान हो चुके हों गे याजुज माजुज के रहम व करम पर छौड जाएं गे। इतने इनसान तो ज़ाहिर है इस किले में समा भी नहीं सकते। मैं ने किसी किताब में यह दुआ पढी थी जो हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फितनए दज्जाल से बचने के लिए मुसलमानों को बताइ थी मुझे याद नहीं रही। इन तमाम बातों की वज़ाहत के साथ आप वह दुआ भी लिख दें तो इनायत हो गी।

जवाब : इनसानी तमद्दुन के ढांचे बदलते रतहे हैं। आज ज़राए म्वासलाम (कम्युनिकेशन सिसटम) और आलाते जंग (वार वीपनस) की जो तरक्की याफता शक्ल हमारे सामने आज आज से देढ दो सदी पहले अगर कोइ शख्स उन को बयान करता तो लोगों को उस पर पागल होने का शुबा होता। अब

खुदा ही बहतर जानता है कि यह साइंसी तरक्की इस रफतार से आगे बढती रहे गी या खुद कुशी कर के इनसानी तमद्दुन को फिर तीर व कमान की तरफ लौटा दे गी।

ज़ाहिर है कि अगर यह दुसरी सुरत पेश आए जिस का खतरा हर वक्त मौजुद है, और जिस से साइंस दाँ खुद भी डरते रहते हैं तो इन हदीसों में कोइ इशकाल बाकी नहीं रह जाता जिन में हज़रत महदी रज़ि. और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने का नकशा पेश किया गया है।

फितनए दज्जाल से हिफ़ाज़त के लिए सुरए कहफ जुमा के दिन पढने का हुक्म है। और कम से कम इस सुरह की पहली और पिछली दस दस आयतें तो हर मुसलमान को पढते रहना चाहिए। और एक दुआ हदीस शरीफ में यह बताइ गइ है।

اللهم انى اعوذبك من عذاب جهنم وأعوذبك من عذاب القبر، وأعوذبك من فتنة المسيح الدجال، اللهم انى اعوذبك من فتنة المحيا والممات، اللهم انى اعوذبك من المأثم والمغرم (आप के मसाएल और उन का हल ३६८,३६९/१)

नोट : कुछ अहले कलम हज़रात ने हज़रत महदी रज़ि. की इन जंगों के मुतअल्लिक वारिद इन सामाने जंग की जदीद ताबीरात भी कीं हैं, जिन से मालुम होता है कि आप जदीद इजादात को भी फुतुहात में इस्तेमाल करें गे। लेकि यह सब सिर्फ अंदाज़े ही हैं। والله أعلم بما هو كائن البتة

सद्र दारुल उलूम कराची हज़रत मुफती रफी साहब उस्मानी के इंटरव्हियु का इकतेबास

सवाल : रसुले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुसतकबिल के बारे में बशारतें और उन की ततबीकी सुतरे हाल के बारे में रहनुमइ फरमाएं।

जवाब : इस सिलसिले में जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेशगी खबरें दी हैं उन की रु से अगर देखा जाए तो ऐसा मालुम होता है कि मौजुदा पुरी दुनया की सियासत और जुगराफिए और हालात में जो तबदीलियाँ तेज़ी से रुनुमा होइ हैं यह सब उस दौर की तरफ दुनया को ले जारही हैं जो हज़रत महदी रज़ि. के जुहूर के सामने आने वाला है, और यह सारा मैदान उस के लिए तयार हो रहा है। और रिवायत से यह बात भी साबित होती है कि हज़रत महदी रज़ि. के ज़माने में मुसलमानों का इखतेलाफ उरूज पर हो गा तो इखतेलाफ का खातमा वही करें गे और दोबारा खिलाफते इसलामिया काएम हो गी। जिस के सरबराह हज़रत महदी रज़ि. हों गे और वह वक्त अब ज़्यादा दुर नज़र दहीं आता।

सवाल : हज़रत महदी रज़ि. के जुहूरे के साथ दज्जाल का ज़ाहिर होना भी आता है ?

जवाब : वह पुरी उम्मत के लिए इमतेहान का वक्त हो गा, बस इतनी सी बात है कि इसलाम की ज़िल्लत का वक्त नहीं हो गा इस लिए कि मुसलमान एक अमीर के झंडे के नीचे मुत्तहिद हों गे और हक़ उन के सामने खुला हुवा हो गा। हज़रत महदी रज़ि. का कौल हक हो गा और उन के खिलाफ जो हो गा वह बातिल हो गा। उस मुशकिल में वह दोचार नहीं हों गे जिस मुशकिल में अब हम रहते हैं कि किस बात को हम सहीह कहें किस को गलत कहें। ठीक है, जानें बहुत जाएं गी, कुरबानियाँ बहुत दी जाएं गी, लेकिन कशमकश नहीं हो गी, ज़िल्लत नहीं होगी, मुसलमान की मौत हो गी तो इज़्ज़त की मौत हो गी। (अलबलाग जिल्द ६, शुमारा ५, जनवार ११ २००४, पाकिस्तान)

इस सिलसिले में मुफती मोहम्मद रफी साहब का एक और मज़मुन अंबिया की सर ज़मीन पर चंद दोज़ जो अलबलाग में किस्त वार शाए हुवा है, उस की पांचवीं किस्त का तज़केरा भी यहाँ ना गुज़ीर है, चुनांचे आप लिखते हैं।

यहाँ की बाज़ अलामामते कयमात :

उर्दन (जार्डन) में जिन जिन तारीखी मकामात पर जाना हुवा अकसर जगह इसराईल के मकबुज़ात भी साथ ही नज़र आए, जो उन्हों ने मुसलमानों से छीने हैं। ज़ाहिर है कि यह हमारी शामते आमाल का नतीजा है, दिल जो शामते आमाल से पहले ही ज़ख्मी है इन मनाज़िर को देख देख कार और भी चोट पर चोट खाता रहा, लेकिन पुरी दुनया जिस तेज़ी से बदल रही है, और जिस तरह बदल रही है, खास तौर से मिडल ईस्ट में तकरीबन ६० साल से जो इनकेलाबात बरपा हो रहे हैं, उन्हें अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बयान की हुइ अलामात की रौशनी में देखा जाए तो साफ पता चलता है कि दुनया अब बहुत तेज़ी से कयामत के करीब जा रही है।

उर्दन (जार्डन) और शाम (सीरिया) के इस सफर में कदम कदम पर नज़र आता रहा कि यह इमाम महदी रज़ि. के ज़ुहूर और दज्ज़ाल से उन की होने वाली जंग का मैदान तयार हो रहा ह। और उसी जंग के दौरान हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल के फौरन बाद उन के हाथों दज्ज़ाल का कत्ल और साथ ही यहुदियों के कत्ले आम का जो वाकेआ होने वाला है उन की तयारी में खुद यहुदी पेश पेश हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से बहुत पहले बुनुस्सर बादशाह ने जब यहुदियों पर ज़र्ब कारी लगाइ तो यह तितर बितर हो कर पुरी दुनया में ज़िल्लत के साथ बिखर गए थे, अब से तकरीबन ६० साल पहले तक उन का यही हाल था, अब हज़ारों साल बाद उन का पुरी दुनया से खिंच खिंच कर फलसतीन में आ कर, दुसरे लफज़ों में अपने मकतल में आ कर जमा हो जाना, यही ज़ाहिर करता है कि यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन के लशकर का काम आसान करने में लगे हुए हैं। वरना बकौल वालिद माजिद (मुफती मोहम्मद शफी साहब) के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन को पुरी दुनया में कहाँ कहाँ तलाश कतरे फिरते।

ऐसा मालुम होता है कि यहुदी दज्ज़ाल को अपना पेशवा मानते हैं,

और अजीब बात यह है कि उस की आमद के उसी मकाम पर मुनतज़िर हैं जहाँ पहुंच कर उस का कत्ल होना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगी खबर के मुताबिक मुकद्दर हो चुका है।

हमारे एक मेज़बान हसन युसूफ जिन का तज़केरा पहले भी कई बार आ चुका है, यह असल बाशिंदे फलसतीन के हैं, वहाँ से हिजरत कर के तकरीबन २५-३० साल से अम्मान ही में मुकीम हैं, उन्हों के बताया कि अब से कई साल पहले वह तबलीग़ के सिलसिले में फलसतीन गए तो वहाँ के एक शहर लुद्द भी जाना हुवा, जो बैतुलमुकद्दस (यरोशलम) के करीब है, वहाँ एक बडा गेट देखा जो बाबे लुद्द (लुद्द का दरवाज़ा) कहलाता है, उस पर इसराईली इनतेज़ामिया ने लिखा हुवा है कि ''सलामती का बादशाह (दज्जाल) यहाँ ज़ाहिर हो गा।''

अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस देखिए जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुर्बे कयामत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाज़िल होने की तफसीलात इरशाद फरमाइ हैं, यह हदीस आला दरजे की सहीह सनदों के साथ आइ है और उसे तीन सहाबा किराम और एक उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. ने रिवायत किया है, उस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि فيطلبه حتّى يُدرِكه بِبابِ لُدّ، فيقتُله (सहीह मुसलिम, अबु दाऊद, तिरमिज़ी, इबने माजा और मुसनद अहमद) तरजुमा : ईसा (अलैहिस्सलाम) दज्जाल को तलाश करें गे यहाँ तक कि उसे बाबे लुद्द (लुद के दरवाज़े) पर जा लें गे और कत्ल कर दें गे।

हमारे एक और मेज़बान जनाब अली हसन अहमद अलबयारी जो इरबिद के मारुफ ताजिर हैं और तबलीगी काम से भी वाबस्ता हैं, हमारा अम्मान से इरबित का सफर उन ही की गाडी में हुवा था, उन के वालिद भी असल बाशिंदे फलसतीन के थे, बल कि खास शहर लुद्द के रहने वाले थे, १९४८ में हिजरत कर के यहाँ आ गए थे, यहीं १९५१ में अली हसन अहमद

अलबियारी साहब पैदा हुए, उन्हों ने आज सियाहत से वापसी पर अपनी आलीशान कोठी में ज़ियाफत का एहतेमाम किया था। उस पुर लुत्फ मजलिस में उन्हों ने अपना यह वाकेआ सुनाया कि १९८० में यह दस दिन अपने आबाई वतन लुद्द में जा कर रहे, उन्हों ने बताया कि वहाँ बाबे लुद्द ही के मकाम पर एक कुंवा है, यहुदी शहरी इनतेज़ामिया ने वहाँ से एक सडक गुज़ारने के लिए उस कुंवे को खत्म करना चाहा, मगर बुलडोज़रों और तरह तरह की मशीनों से भी उस कुंवे को खत्म नहीं किया जा सका और मजबुरन सडक वहाँ से हटा कर गुज़ारनी पडी, वहाँ पर यह लिखा हुवा था कि यह एक तारीखी मकाम है।

उन ही हसन अली बय्यारी साहब ने बताया कि उन के एक मामुँ ज़ाद भाइ भी जो अलामाते कयामत की तहकीक व जुस्तजु में खासी दिलचस्पी रखते हैं लुद्द गए थे, वहाँ उन्हों ने एक महल देखा इसराइली इनतेज़ामिया ने अपने सलामती के बादशाह(दज्ज़ाल) के लिए बनाया है।

मौलाना रफीउद्दीन साहब का काबिले तकलीद अमल

हमारे दारुल उलूम देवबंद के सब से पहले मोहतमिम हज़रत मौलाना रफीउद्दीन साहब रह. जो नक्शबंदिया खानदान के अकाबिर में से थे, हिजरत कर के मक्का मुकर्रमा आए वहीं उन की वफात भी हुइ और वहीं कब्र भी है । उन्हें यह हदीस मालुम थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शैबी को बैतुल्लाह की चाबियाँ दी हैं, मक्का में चाहे सारे खांदान उजड जाएं शैबी का खानदान कयामत तक बाकी रहे गा।

चुनांचे मौलाना रफीउद्दीन साहब रह. को अजीब तरकीब सुझी कि जब यह खांदान कयामत तक बाकी रहे गा तो ज़ुहूरे महदी रज़ि. के ज़माने में भी मौज़ुद रहे गा। जब हज़रत महदी रज़ि. का ज़ुहूर हो गा और वह काबा की

दीवार से टेक लगाए बैठ कर मुसलमानों से बैअत करें गे तब काबतुल्लाह की चाबियाँ शैबी के हाथ हो गी। चुनांचे इसी के मतमहे नज़र उन्हों ने एक हमाएल शरीफ और एक तलवार ली और एक खत हज़रत महदी रज़ि. के नाम लिखा, उस खत का मज़मुन यह है। फकीर रफीउद्दीन देवबंदी मक्का मुकर्रमा में हाज़िर है, और आप जिहाद की तरतीब कर रहे हैं, ऐसे मुजाहिदनि आप के साथ हैं जिन को वह अज्र मिले गा जो गज़वए बदर के मुजाहिदीन को मिला था, तो रफीउद्दीन की तरफ से यह हमाएल तो आप के लिए हदिया है, और वह तलवार किसी मुजाहिद को दे दी जिए कि वह मेरी तरफ से जंग में शरीक हो जाए और मुझे भी वह अज्र मिल जाए।

और यह तीनों चीज़ें शैबी खानदान वालों के सुपुर्द कीं और उन से कहा कि तुम्हारा खानदान कयामत तक रहे गा, यह महदी रज़ि. के लिए अमानत है, जब तुम्हारा इनतेकाल हो तो तुम अपने काएम मुकाम को वसिय्यत कर देना, और उन से कह देना कि वह अपने काएम मुकाम को वसिय्यत करे, और हर एक यह वसिय्यत करता जाए यहाँ तक कि यह अमानत हज़रत महदी रज़ि. तक पहुंच जाए। (खुतबाते हकीमुल इसलाम ९८/२)

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. की वसिय्यत उम्मते मोहम्मदिया के नाम

عن ابی هریرة مرفوعاً : ینزلُ عیسیٰ بن مریم فیَدُقُ الصلیبَ، ویقتُل الخنزیر ویضع الحزیة، ویُهلكُ الله عزوجل فی زمانه الدجالَ، وتقوم الکلمة لله رب العالمین، قال أبوهریرة : أفلا ترونی شیخاً کبیراً قد کادت أن تلتقی تَرْقُوَتَای من الکبر، إِنّی لأرجو انْ لا أمرتَ حتی ألقاهُ واُحدّثهُ عن رسول الله صلی الله علیه وسلم فیُصدقه، فانْ أنأمِتُ قبلَ أن ألقاه ولَقِیتُموه بعدی فأقرأو علیه منی السلام (अस्सुनन लिद्दानी २४२ नं. ६९१) हज़रत अबु

हुरैरा रज़ि. से मरफुअन मरवी है कि ईसा अलैस्सिलाम नाज़िल हों गे और सिलेब को तोड दें गे, खिंज़ीर को कत्ल कर दें गे और जिज़या को मंसुख फरमा दें गे। अल्लाह तआला उन के ज़माने में दज्जाल को हलाक फरमाएं गे। अल्लाह रब्बुल आलमीन का बोल बाला हो गा। हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. ने फरमाया कि : क्या तुम मुझे बिलकुल बुढा नहीं पाते हो, मेरी हंसलियाँ बुढापे की वजह से मिल जाने के करीब हैं, मेरी यह तमन्ना है कि मेरी मौत उस वक्त तक न आए जब तक कि मैं आप अलैहिस्सलाम (ईसा) से मिल ना लुँ, और मैं उन को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस सुनाउं और आप उन की तकदीक करें, अगर में आप की मुलाकात के पहले मर जाऊं और तुम्हारी उन से मुलाकात हो जाए तो आप (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को मेरा सलाम अर्ज़ करना।

दुआइया

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह अपने फ़ज़्ल से इस तहरीर को कुबुल फरमाए, और अपने इस नेक बंदे (हज़रत महदी) के सहीह तआरुफ के आम होने का ज़रीआ बनाए, और इस नेक बंदे के जुहूर को उम्मते मोहम्मदिया के लिए इज़्ज़त का ज़रीआ बनाए, और हम सब को उन के साथ एलाए कलिमतुल्लाह के लिए कुबुल फरमाए।

ربنا تقبل منا انك أنت السميع العليم، وتب علينا يا مولانا انك أنت التوابُ الرحيم، وصلى الله تعالىٰ على خير خلقه سيدنا محمد وآله وصحبه وعلى من تبعهم باحسان الى يوم الدين (آمين) . فقط

बंदा महमुद सुलेमान हाफिज़जी (बारडोली)

हाल नज़ील मक्का मुकर्रमा

(उस मुबारक जगह के जवार में जहाँ उस नेक बंदे के

जुहूर की बशारत हदीस शरीफ में वारिद हुइ है।)

फेहरिस्ते मराजे

नं.	किताब का नाम
१	कुरआन करीम
२	तफसीर इब्ने कसीर
३	तफसीर अत्तबरी
४	हिदायतुल कुरआन
५	सेहाहे सित्ता
६	मुसनद अहमद
७	मुसनद बज़्ज़ार
८	मसनफ अब. रज़्ज़ाक
९	मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा
१०	सुनन अद्दारे कुतनी
११	मुसनद अश्शामिय्यीन
१२	मुसतदरक लिलहाकिम
१३	अस्सुनन लिद्दानी
१४	दलाएलुन्नुबुव्वह
१५	फतहुल बारी
१६	उमदतुल कारी
१७	फैज़ुल बारी
१८	अलजामे अलकबीर
१९	फैज़ुल कदीर
२०	फतहुल मुहलिम
२१	तकमेला फतहुल मुहलिम
२२	इकमाल इकमालिल मुअल्लिम

२३	मुकमिलुल इकमाल
२४	अल कौकद्दुररी
२५	तुहफतुल अहवज़ी
२६	अल अरफुश्शज़ी
२७	अलऔनुल माबुद
२८	बज़लुल मजहुद
२९	मिसबाहुज़्ज़ुजाजह
३०	अशेअअतुल्लमआत
३१	मिरकातुल मफातीह
३२	कनजुल उम्माल
३३	मुनतखब कनजुल उम्माल
३४	अर अरफुल वरदी फी अखबारिल महदी
३५	आरेज़तुल अहवज़ी
३६	अलबिदाया वन्निहाया
३७	अस्सिआया
३८	अलमुगनी लिज़्ज़हबी
३९	अल फितन लिनुऐम इब्ने हम्माद
४०	तहज़ीबुत्तहज़ीब
४१	अत्तज़केरा लिलकुरतबी
४२	अत्तारीख लिइब्ने असाकिर
४३	अल लअहादीसुज़्ज़इफा लिश्शौकानी
४४	सिलासिलतुल अहादीसिज़्ज़ईफा
४५	अलकामिल फी ज़ुअफाइर्रिजाल लिइब्ने अदी
४६	नखबय्यतुल्लाली शरहे बदउल अमाली
४७	अलमनारुल मुनीफ (इब्नुल कय्यिम)

४८	मीज़ानुल एतेदाल
४९	किफायतुल मुफती
५०	फतावा महमूदिया
५१	फतावा रहीमिया
५२	खैरुल फतावा
५२	अल्हावी लिलफतावा
५४	नवादिरुल फिक्ह
५५	इज़ालतुल खिफा
५६	तोहफए खिलाफत (मौलाना अबदुल करीम लखनवी)
५७	तारीखुल खुलफा
५८	मआरिफुल हदीस
५९	मजमउ बिहारिल अनवार
६०	तरजुमानुस्सुन्नह
६१	रहमुतल्लाहिलवासेआ
६२	अलमहदी वल मसीह (मुफती युसूफ लुधयानवी)
६३	लिसानुल मीज़ान
६४	अलइशाआ लिअशरातिस्साआ
६५	शरहुल फिक्हिल अकबर
६६	शरहे अकीदतुस्सफारीनी
६७	अन्निबरास
६८	अकीदए ज़ुहूरे महदी
६९	अरवाहे सलासा
७०	इमाम महदी – शखसियत व हकीकत
७१	इमाम महदी (मौलाना ज़ियाउर्रहमान फारुकी रह.)
७२	इमाम महदी का ज़ुहूर नहीं हुवा (मुफती सलमान मनसुर पुरी)

७३	नुजुले इसा जुहूरे महदी (मौलाना मो. इद्रीस साहब कांधलवी)
७४	अकाएदे इसलाम (मौलाना मोहम्मद पालन हक्कानी)
७५	किताबुल फितन व अशरातुस्साआ (अल्लामा दानी)
७६	अलामाते कयामत (मुफती रफी उस्मानी)
७७	किताबुल फितन (नुऐम बिन हम्माद)
७८	अलामते कयामत (शाह रफीउद्दीन दहलवी)
७९	जवाहिरुल इमान
८०	जवाहिरुल फिक्ह
८१	अकाएदे इसलाम (मोहम्मद इदरीस कांधलवी)
८२	रद्दे कांदयानियत के ज़र्रीन उसुल
८३	फिकही जवाहिर
८४	मलफुज़ाते फकीहुल उम्मत
८५	अन्निहाया (इब्ने कसीर)
८६	खुतबाते हकीमुल इसलाम
८७	आप के मसाएल और उन का हल

हज़रत महदी रज़ि. के मुतअल्लिक रिवायात का एक इजमाली खाका

नं.	किताब का नाम	तअदादे हदीस मरफुआ	मौकुफा	बाब	हदीस नं.	सफहा	रावी सहाबी का नाम, रिवायत की तअदाद के साथ
१	बुखारी			बाबे नुजुले ईसा इब्ने मरयम	३४४९	४९०	अबुहुरैरा १
२	मुसलिम	७		बाबलु खसफ बिलजैस वगैरिहा मिम्मा बादहा	२८८३ से २८८४, २८९७ से २८९९, २९१३	३८८ से ३९५	जाबिर इब्ने अबदुल्लाह २, अबु सईद १, इब्ने मसऊद १, आएशा २, अबु हुरैरा १
३	अबु दाऊद	१३		किताबुल महदी	४२७९ से ४२९१	५८८	जाबिर बिन समुरा ३, अली ३, अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद १, उम्मे सलिमा ५, अबु सईद १
४	तिरमिज़ी	३		अबवाबुल फितन मा जाअ फिल महदी	२२३० से २२३२	४७/२	अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद २, हज़रत अबु सईद १
५	इब्ने माजा	७		बाब खुरूजिल महदी	४०८२ से ४०८८	२९९	अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद १, अबु सईद १, सौबान १, अली १, उम्मे सलिमा १, अनस इब्ने मालिक १, अब्दुल्लाह इब्ने हारिस १, उम्मे सलिमा १
६	मिशकातुल मसाबीह	६		बाब अशरातिस्साआ		४७०	अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद, अबू सईस खुदरी, उम्मे सलिमा
७	मुसनद अहमद बितरतीन फतहुर्रब्बानी	१४		फस्ल फी मा वरदा फी ज़ुहूरिल महदी वगैरा	१३९ से १५४		अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद २, अली २, अबु सईद खुदरी ३, सोबान, उम्मे सलिमा ३, हफसा २, सफिय्या १

८	कनज़ुल उम्माल	४१	४७	खुरूजुल महदी / अलमहदी अलैहिस्सलाम	३८६५१ से ३८७१०, ३९६५३, ३९६८४	जि १४ २६१ से २७५, ५८४ से ५९८	अम्मार इब्ने यासिर १, अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ९, उस्मान १, उम्मे सलिमा २, अबु उमामा १, अली ४, अबदुर्रहमान बिन कैस १, अबु सईद खुदरी ७, जाबिर १, हुज़ैफा ३, अबु हुरैरा ६, अब्दुल्लाह इबन अब्बास ४, कुर्रतुल मुज़नी १
९	मुसन्नफ अबदुर्रज़्ज़ाक	२	६	बाबुल महदी	४०७६९ से ४०७७०	जि ११, ३७१	उम्मे सलिमा १, अबु सईद खुदरी १
१०	सहीह इब्ने हब्बान बितरतीब इब्ने बलीबान	५		ज़िक्रुल बयान बाब खुरूजुल महदी	६८२३ से ६८२७	जि १५, २३६	अबु सई खुदरी २, अबदुल्लाह इब्ने मसऊद २, अबु हुरैरा १
११	मुसनद अबु दाऊद त्यालिसी बितरतीब अहमद बिन मिनहा अल माबुद	१		बाब मा जाअ फी बैअतिल महदी	२७७२	जि २, २१५	अबु हुरैरा १
१२	अलमुसतदरक	८		किताबुल फितन वल मलाहिम	५८३१, ८६६९ से ८६७५	जि ४, ५४७, जि ४ ६०० से ६०१	सोबान १, अबु सईद खुदरी ५, उम्मे सलिमा २
१३	अलजामे उस्सगीर	५		बाबुल मीम	९२४१ से ९२४५	५५४	उम्मे सलिमा १, उस्मान १, अली १, अबु सईद १, हुज़ैफा १

१४	अस्सुननुल वारिदा फिल फितन	४७	४१	बाब मा जाअ फिल महदी	५४६ से ५९५	१८९ से २०१	इब्ने मसऊद ११, सोबान १, अबु सईद ४, अली ३, उम्मे सलिमा ४, जाबिर बिन अदुल्लाह १, अबु हुरैरा १, अनस १, हफसा १
१५	अन्निहाया फिल फितन वल मलाहिम इब्ने कसीर	१५	१	फस्ल फी ज़िकरिल महदी अल्लज़ी यकुनु फी आखिरिज़्ज़मान		२३ से २८	अबदुल्लाह बिन हारिस १, सोबान १, अबु सईद २, अनस इब्ने मालिक १, अली ४, इब्ने मसऊद २, अबु हुरैरा २, उम्मे सलिमा २
१६	अल फितन लिअबी नुऐम	५७	१९४	बाब आखिरु मिन अलामातिल महदी और दुसरे अबवाब	८८७ से ११४८	४४६ से २८९	हफसा १, अबु हुरैरा ७, अम्र बिन शुऐब अन अबीहि अन जद्दिही १, अबु सईद २४, अली ५, जाबिर १, अबु तुफैल ३, इब्ने मसऊद २, आएशा १, अबदुर्रहमान बिन कैस ४, इब्ने उमर १, ज़ी मजज़ २, अबु ज़ाहेरा १, अम्र बिन आस २, अब्दुर्रहमान बिन जुबैर १, अब्दुल्लाह इबने अब्बास १
१७	मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा	६	१०	किताबुल फितन	१९४८४ से १९४९९		अबु सईद ३, अली २, इब्ने मसऊद १
१८	अत्तज़केरा फि अहवालिल मौता	१७	३	बाब मा जाअ फिल खलीफथिल कालइन फी आखिरिज़्ज़मान वगैरिहा		६९० से ७०७	जाबिर १, उम्मे सलिमा २, हुज़ैफा २, हफसा १, आएशा १, सौबान १, अबदुल्लाह इब्ने हारिस १, अली २, अबु सईद ४, इब्ने मसऊद १, अनस १